जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

ISSN : 2436-5017

हिंदी की गूँज

जापान से निकलने वाली प्रथम
हिंदी साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका

इंद्रजीत शर्मा, न्यू यॉर्क

संरक्षक

हिंदी की गूंज अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका

टोक्यो जापान

अनुक्रम

संपादक मंडल–1
संपादक की कलम से
संपादकीय
रमा शर्मा, जापान–2
बधाई संदेश
जयप्रकाश मिश्रा–3
हिंदी की गूंज पत्रिका की ओर से –3
कविताएँ
बसंत ऋतु/सीमा वर्णिका –4
सरल नहीं है/सुखमिला अग्रवाल–4
पीपल की छाँव में/अभिषेक त्रिपाठी–4
मंजिल/ज्योत्सना गर्ग –4
शिव/ओम सपरा –5
माँ बेटे की कहानी/प्रो स्वाति पाल –5
क्रूर तांडव/कर्नल गिरिराज सक्सेना– 6
माँ और ममता/सुनीता अग्रवाल – 6
स्त्री/डॉ ऋतु शर्मा ननंन पांडेय– 7
साध्वी/विनोद दूबे, सिंगापुर– 7
हिंदी प्रशस्ति गान/डॉ मधुर चतुर्वेदी– 8
जिंदगी/डॉ विजयानंद – 8
राम भक्ति/राकेश मल्होत्रा, शिकागो– 9
विजयदशमी/मधु खरे, वर्जीनिया–9
जश्न/मोनिका नूर – 9
जमीर– आईना हूँ मैं तेरा/गरिमा सूदन, बहरीन– 10
रिश्ते/सिमरन गिरधर– 10
प्रेम का अपवर्तनांक/मुकेश कुमार सिन्हा– 11
स्वीकार करो/अंशु जैन– 11
रुखह मोड़ दिया है/उषा किरण, मानव –11
नव्य भारत/शिखा पोरवाल, वैंकुवर –12
मुझे राम बना दे/आशीष मिश्रा, लंदन– 12
भारत भू की नार/साधना मिश्रा– 13
पुराना दौर/डॉ कीर्ति वर्धन –13
कागज कलम/कविता गुप्ता– 13
नारी/डॉ अंजना सेंगर– 13
अनुनय विनय/डॉ रामचंद्र स्वामी–14
शून्य/कृष्ण कन्हैया, बर्मिंघम – 14
जीवन एक तमाशा/डॉ रजनी शर्मा, चंदा –14
हम मिलेंगे/रश्मि विभा त्रिपाठी– 15
तुम/डॉ शोभा रावत– 15
मानवता/कविराज बाबू, मॉरिशस–16
सच्चा मित्र/स्मिता श्रीवास्तव –16
बस चलते रहना/तृप्ति मिश्रा– 16
इंसानियत/डॉ बी निर्मला– 17
शून्य और शून्य के बीच/अरुण भगत– 17
संतृप्त जीवन/मोहन गोरखपुरी – 18
रात तनिक भारी है/विनोद पांडेय –18
तुम्हारी याद/अजमत कैश– 19
नोंक झोंक/लतिका दत्ता, कतार–19
राजनीतिक यज्ञ/अमित कुमार कौशल– 19
उड़ान/सरोज आहूजा–19
वैभव जगत/संगीता चौबे, पँखुड़ी, कुवैत–21
बाल कविताएँ
बड़े बुजुर्ग लोग/आद्रिजा गुप्ता–20
झाँसी की रानी/रिदम पंढीरनाथ पाटील –20
धरती माँ का कर्ज़/नाएशा शर्मा –20
दिवाली आई/प्रियांशी जोशी –20
हिंदी की गूंज/फलक–28
मन पंछी सा/निवान यादव– 31
प्रकृति/आन्या रॉय – 51
दोहे
बाल मजदूर दोहे/डॉ पंकजवासिनी – 45
गजल
उम्मीदों के तिनके/देवी नागरानी , यू एस– 21
निजाम ए ख़ुदा/कृष्ण टंडन, लंदन–21
ढूंढ रहा हूँ/विज्ञान व्रत – 21
बर्फ भी आज हमारा बदन जलाती है/तेजेंद्र शर्मा–22

भूल जाता हूँ/जीतू जलेसरी, युगाण्डा–22
सरापा इश्क़/श्वेता सिंह उमा, मॉस्को– 22
नारी हूँ मैं/डॉ सीमा निगम–27
माँ मनस्वी/राकेश छोकर – 47

आलेख/शोध आलेख

दाल पूरी पराई हो गई/पॉपी डे अपरुपा , लंदन–31
सिया राम सब जग जानी/डॉ अजय शुक्ला–32
हमारा स्वराज्य/डॉ हरीश नवल– 34
पाश्चात्य संस्कृति और हम/आतिश मिश्रा बुन्नु –35
भले भी हम,बुरे भी हम/पवन शर्मा– 37

उपन्यास

ऐ वहशते दिल/पारुल सिंह –23
धारावाहिक उपन्यास/की तलाश भाग–4/अजय शर्मा–46
धारावाहिक राम/वन गमन/शशि महाजन, नाइजीरिया– 48

लघुकथा/कहानी

कछुए का कवच/स्मिता श्रीवास्तव– 24
आहट/किश्वर अंजुम– 24
अपना पराया/अजय शर्मा– 19
जमाना बदल गया/रश्मि सहाय– 26
जो होता है अच्छे के लिए होता है/नीलम मेहता – 27
भूल भूलैया/सुधा ओम ढिंगरा –29
कनिष्ठा/यशोधरा भटनागर– 36
आँगन की दीवार/सुरेश पांडेय, स्वीडन– 36
बेगाने लोग/ममता शर्मा, अंचल –39
जीवन की सच्चाई/कंचन सागर–39
रोटी का गणित/आनंदा पाटनी, यू के–40
ख़ाली वॉलेट/डॉ नीरजा मेहता कमलिनी– 40
औक़ात/शालिनी वर्मा, कध्तार– 41
रिश्ते की भीख/सुरेशचंद्र शुक्ल, शरद आलोक– 41
तलाक़/प्रो. पंढीरनाथ पाटील, शिवांश –42
पेंशन/डॉ शिप्रा मिश्रा–43
क्रिसमस/मनीषा जोशी, मणी –43
मेरा नन्हा दोस्त/अभिषेक चंदन – 44
खोज/सुमन मलिक तनेजा– 45
धारावाहिक कहानी/बल्लू नायक की बेटी ध्डॉ सुनील जाधव– 49

व्यंग्य

पुस्तक विमोचन/इंद्रजीत कौर– 25

ज्योतिष विज्ञान

ज्योतिष/डॉ विनय कुमार भारद्वाज– 28

संस्मरण

युवावस्था में सैनिक बनने का जोश ध कर्नल आदि शंकर मिश्र, आदित्य –51

समीक्षा

रमा शर्मा का साहित्य –52

समाचार–पत्र –54

डॉ प्रभु चौधरी
दरयाब सिंह
डॉ रश्मि शर्मा, चंदा
पूनम गौतम

लोकार्पण – 55

डॉ हरीश नवल : रोके न रुके नशा
पारुल सिंह : ए वहशते दिल क्या करूँ
डॉ अंबे कुमारी : पोंछतीं हैं जो आँसू की बूँद
सुरेश पांडेय, स्वीडन : आँगन की दीवार
कंचन सागर, राम मोहन राय : इंसानियत को समर्पित शख़्सियत

पेंटिंग और ड्राइंग

हरलीन– 7
ज्योति जतार –8
आरिया यादव –9
जारिशा खान –12
गौरव– 14
नैतिक– 14
गव्या मलहोत्रा – 15
ध्रुव मेहरा – 17
नमस्वी पांडेय– 24
समृद्धि रोमा काशीनाथ– 25
अन्यशा रुस्तगी –34
अंशिका – 40
स्तुति गर्ग – 43
शिव्या पटेल –53
ज्योति कौर – 57
गुरबानी कौर बिंद्रा –57
ग्लोरी चंद्र – 57
शयाना यादव – 57
रिदम पंढीरनाथ पाटील– 57
रितिका जाटव – 57
मंसवनी – 57
वीथिका पाणिग्रही–57

संपादक मंडल

रमा शर्मा
संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक, जापान

संरक्षक
रमा शर्मा, जापान
इंद्रजीत शर्मा, न्यूयार्क (अमेरिका)
डॉ. विदुषी शर्मा, नई दिल्ली, भारत

हिंदी की गूंज की देशी और विदेशी शाखाएँ

संरक्षक इंद्रजीत शर्मा जी
1. न्यूयार्क
129–15, 101 एवेन्यू, रिमंड हिल, न्यूयार्क
+1 (917)273-9744

मॉस्को, रशिया में
सुश्री श्वेता सिंह उमा
Address office:-
Proezd zavoda, Serp 1 Molot
10 BC, Integral, Moscow
Russia-111250
Phone : +79254027789

स्वेडन
सुरेश पाण्डेय
Backgards vagen 1 1tr14341
Varby Sweden
+46 731013196

मॉरीशस
श्रीमती कल्पना लालजी
Lamari road
Vacoas Mauritius
+230 57133341

लंदन में
शामलाल पुरी
16 UPPER WOBURN PLACE,
LONDON WC1H 0AF
Phone number-+44 7432 220184

ऑस्ट्रिया में
सुश्री सुनीता चावला
Laaerberg Straße 32/2/71
1100 vienna (Austria)
फोन नं. +43 650 6741006

भारत पानीपत में
सुश्री कंचन सागर
1094, सेक्टर 13/17, हुड्डा, पानीपत
(हरियाणा) भारत
फ़ोन–93554 72819

संपादक
प्रोफ़ेसर स्वाति पाल (जानकी देवी महाविद्यालय)
विनोद पांडेय (ग़ाज़ियाबाद)

सह संपादक
कविता गुप्ता (उत्तर प्रदेश)
डॉ. विवेक शर्मा (जानकी देवी महाविद्यालय)

वरिष्ठ परामर्श दाता
डॉ हरीश नवल
डॉ स्नेहसुधा नवल

विदेशी प्रतिनिधि
शामलाल पुरी, लंदन
श्वेता सिंह उमा, मॉस्को
मोनी बिजय, नेपाल
सुनीता चावला, ऑस्ट्रिया
कल्पना लाल मॉरीशस

भारतीय प्रतिनिधि
डॉ सतीश शास्त्री, हरिद्वार
कंचन सागर, पानीपत
विजयापंत तुली,उत्तराखंड
मनीषा जोशी, नोएडा
प्रशांत अवस्थी प्रखर, कानपुर
अंशु जैन, देहरादून

स्वास्थ्य प्रतिनिधि
सुनीता चाँदला, अमेरिका

विशेष सहयोगी
ओमप्रकाश सपरा
राकेश छोकर
डॉ सुनीता चौहान
(बोध गया विश्वविद्यालय)

सैन्य परिशिष्ट प्रतिनिधि
तृप्ति मिश्रा, महू

ज्योतिषाचार्य
डॉ विनय भारद्वाज,(बोधगया विश्वविद्यालय)

रक्षा कवच प्रतिनिधि
श्री जयप्रकाश मिश्रा (पुलिस अधीक्षक)
पटना बिहार

कानूनी सलाहकार
प्रवल माधुरी शर्मा
जयपुर, राजस्थान

मुख्य कार्यालय
टोक्यो जापान
व्हटसअप नंबर
जापान
00818061658299
भारत
9289641577

Twitter @hindikigoonj

Instagram @hindikeegoonj
@punjabidigoonj

YouTube @HindikiGoonj, Tokyo Japan

YouTube @Punjabidigoonj, Tokyo Japan

Facebook Page @ हिंदी की गूंज,
टोक्यो जापान

पत्रिका की सदस्यता लेने, रचना भेजने हेतु संपर्क करें
9289641577

प्रकाशक, वान्या पब्लिकेशंस, वर्ल्ड बुक पब्लिकेशंस

संपादन, संचालन, प्रकाशन एवं सभी सदस्य अवैतनिक हैं।
पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। संपादक एवं प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित रचनाओं के मौलिक होने का उत्तरदायित्व लेखक पर होगा। पत्रिका जापान के ISSN नंबर के साथ हर तीन माह बाद प्रकाशित होगी। प्रकाशित होने की कोई विशेष तिथि नहीं है, पत्रिका त्रैमासिक है।

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

संपादक की कलम से

हिंदी की गूँज के सभी पाठकों को मेरा नमस्कार। हिंदी की गूँज की लोकप्रियता शनैः शनैः बढ़ रही है जिसमें आपका योगदान सबसे महत्वपूर्ण है। हम 2024 में प्रवेश कर चुके हैं, नई चुनौतियाँ और नए सपने हमारे समक्ष हैं। अपने इस अंक के सम्पादकीय में मैं कुछ एक बड़ी चुनौती के विषय में कुछ कहना चाहूँगी। हम लेखक हैं, कवि हैं, रचनाकार हैं लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम एक सामाजिक व्यक्ति पहले हैं और संवेदनशील होना तो रचनाकार का प्रथम गुण है।

आज के दौर में महानगरों के अंदर अकेलापन बुजुर्गों के लिए एक बड़ी चुनौती बन कर उभरा है। अपने स्थानीय शहरों से हट कर बुजुर्ग अपने बच्चों के साथ महानगर में नए सपने लेकर आ तो जाते हैं लेकिन आँखों से पुराने सपने जाते ही नहीं और नया जैसा कुछ भी उन्हें चुभने लगता है। हाँ कुछ लोग हैं जो इसे स्वीकार भी कर लेते हैं लेकिन ज्यादातर बुजुर्ग ऐसी परिस्थितयों से लड़ते हुए नजर आते हैं। महानगरों में लोगों की जिंदगी में पैसा तो है लेकिन सुकून नहीं। इधर बुजुर्ग माता–पिता को सुकून चाहिए इस उम्र में पैसे से उन्हें क्या लेना देना। यहाँ तक की अपनी संतानों को भागदौड़ करते हुए देखते हैं तो भी उन्हें तकलीफ होती है। बुजुर्गों के अकेलेपन के लिए संतान को दोष देना ठीक नहीं है क्योंकि बच्चे अपनी उम्र के जिस पड़ाव पर खड़े हैं उन्हें भागदौड़ करनी ही पड़ेगी। भविष्य में खोने–पाने का हिसाब होगा, इस वक्त तो जरुरत के हिसाब से खुद को ढालना ही पड़ेगा। अब ऐसी परिस्थिति में वो अधिक समय तो निकाल सकते नहीं। बुजुर्गों को इस अकेलेपन से निपटने के लिए खुद प्रयास करना होगा।

आप चाहे अख़बार ले लीजिये या टीवी देखने बैठ जाइये, आप को ऐसी खबरों की भरमार मिलेगी कि फलां बुजुर्ग की लाश घर में मिली, फलां बुजुर्ग ने आत्महत्या कर ली, फलां बुजुर्ग घर से गायब है। अब ऐसी खबरों को सुन कर भला किसका दिल नहीं रोयेगा ? हम सब बूढ़े होंगे, हम सबको किसी सहारे की जरुरत पड़ सकती है इसलिए इस विषय पर चिंतन जरुरी भी है कि बुजुर्ग लोग अपने अकेलेपन को कैसे दूर करें ? दूर ही बल्कि चाहिये कि हर बुजुर्ग जिसे अकेलेपन से डर लगता हो वो इस प्रकार से सोचे की अकेलापन उसे महसूस ही न हो। सिर्फ व्यक्ति ही आवश्यक नहीं है हमारे अकेलेपन को दूर करने के लिए। हमारे लिए यह जरूरी है कि उम्र बढ़ने के साथ–साथ साहित्य और अध्यात्म को अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा सौंप दें। जीवन खुशमय हो जायेगा जब आप ऐसे अपने को व्यस्त रखेंगे। साहित्य और अध्यात्म की दुनिया इतनी बड़ी है कि जब आप इसमें डूबेंगे तो आपको आनंद के ऐसे ऐसे क्षण से साक्षात्कार होगा कि जीवन धन्य महसूस होने लगेगा।

आपका खुश रहना जरुरी है। जितना संभव हो खुश रहने के लिए वो सब करें। आपके अपने आपके इर्दगिर्द ही रहते हैं, आपको खुश देखकर उन्हें अच्छा लगेगा। थोड़ी बहुत कमी रह गयी तो निश्चित रूप से आपके अपने पूरा कर देंगे। अच्छी किताबों को अपना साथी बना लें, उदास बैठे रहने से अच्छा है घर के बाहर निकले, अपने आस–पास के लोगों से बातें करें। सुविधानुसार अपने धार्मिकस्थलों पर कुछ समय बिताना अपने रोजमर्रा के कामों में शामिल करें और घर के बच्चों के साथ बच्चे बन कर खिलखिलाकर हँसे।

बहुत छोटी–छोटी बातें हैं जिनको ध्यान में रखकर बुजुर्ग अकेलेपन की चुनातियों से निपट सकते हैं। बुजुर्गों का साया बच्चों के लिए बहुत जरुरी है, बच्चे यह समझते तो हैं लेकिन जवानी के दौर और आगे बढ़ने की लालसा में इन बातों पर अधिक महत्त्व नहीं दे पाते हैं। हालाँकि आज की पीढ़ी बहुत जागरूक है, सबको एक तराजू में तौलना ठीक नहीं फिर भी बच्चों का कर्तव्य उनके ऊपर छोड़कर बुजुर्ग उस चीज़ का अभ्यास करें जो उनके लिए आवश्यक है और उनके पास यह करने का समय भी है।

यह चुनौती बड़ी तो है लेकिन इसका समाधान भी है। समाधान पर काम करके अगर इससे पूरी तरह छुटकारा नहीं पाया जा सकता तो कम तो किया ही जा सकता है। आइये अपने आस–पास के बुजुर्गों के लिए थोड़ा हम भी समय निकालें, उनके पास बैठे, उनके अकेलेपन को दूर करने का प्रयास करें। यह हमारा दायित्व है और इससे हमें बहुत खुशी मिलेगी।

सादर आभार

रमा पूर्णिमा शर्मा
संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक
हिंदी की गूंज अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका, टोक्यो जापान
Email : hindikeegoonj@gmail.com
संपर्क 9289641577

 जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

बधाई संदेश

जयप्रकाश मिश्रा
पुलिस अधीक्षक पटना

एक अथक प्रयास

मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि हिंदी की गूंज श्रीमती रमा शर्मा द्वारा प्रकाशित हिंदी की पत्रिका हिंदी प्रेमियों का हिंदी के प्रति दर्द और संवेदना को दर्शाता है। साहित्य के पैमाने पर यदि हम देखें तो इसमें सहयोग करने वाले या जिनकी रचनाएं छपती हैं। वह सारे व्यक्ति ऐसे हैं जो कि हिंदुस्तान के बाहर दूर–दूर तक फैले हैं और मृतप्राय होती हिंदी भाषा की ज्योति जलाने में उन्होंने अपनी ओर से कोई कसर नहीं रख छोड़ी है। इसमें छोटे बच्चों से लेकर अन्य व्यवसाय से जुड़े लोग भी अपना योगदान दे रहे हैं और इसमें सबसे अविस्मरणीय भूमिका श्रीमती रमा शर्मा जी का है जो कि सुदूर जापान में रहकर इस पत्रिका के माध्यम से हिंदी के प्रचार प्रसार में जुटी हैं। मेरा सौभाग्य है कि मैं भी इसके संरक्षण बोर्ड में हूं और यह श्रीमती रमा शर्मा के व्यक्तिगत स्नेह का प्रतिफल है। मैं अपने इस आलेख के माध्यम से जो भी पाठक से जुड़े हैं उनसे यह अनुरोध करता हूं कि अपने स्तर से अधिक से अधिक सदस्य बनाने का प्रयास करें। उल्लेखनीय है कि, किसी भी पत्रिका को चलाने के लिए पैसे की आवश्यकता भी होती है। मुद्रण और प्रिंटिंग के अलावे अन्य तरह का भी खर्च आता है। जो कि किसी व्यक्ति विशेष के लिए कठिन है। यदि दिल से जुड़ना है तो हर तरह से सहयोग करने में मैं आप सबसे इस आलेख के माध्यम से निवेदन करता हूं। मेरा यह भी निवेदन है कि, अच्छी से अच्छी रचनाएं और हर तरह की रचनाएं जैसा कि इस पत्रिका में छपती भी है, उसको जुटाने में अपने स्तर से पूर्ण रूप से योगदान करें। बहुत जरूरी नहीं है कि, हर पाठक की रुचि लिखने पढ़ने में हो, लेकिन अच्छी कविता गजल कहानी या फिर आलेख कोई इकट्ठा करके संपादक मंडल के सामने प्रस्तुत करना भी अपने आप में एक बड़ा प्रयास है और जो कि इस पत्रिका को चलाने में और जीवित रखने में काफी योगदान देगा। यह बात नहीं भूलना चाहिए कि, एक अकेली महिला ने जिस तरह अपनी मातृभाषा के प्रचार प्रसार में बिल्कुल तत्परता और दिल से जुड़ने का उदाहरण दिया है, हम सब उसे पत्रिका को जीवित रखने के लिए और उसके स्तर को बरकरार रखने के लिए पूर्ण रूप से समर्पित हो। यही मेरी मंगल कामना है। यदि मेरी बात से आप सहमत हो तो मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि, आज हिंदी भाषी क्षेत्रों में जहां पत्रिका का अभाव है, जहां हिंदी पढ़ने या जानने में लोगों को संकोच हो रहा है, ऐसी अवस्था में हिंदी की गूंज पत्रिका एक ललकार है। ऐसे हिंदी भाषा जानने वालों के लिए के लिए जो कि, हिंदुस्तान में रहकर भी अपनी भाषा के प्रति उपेक्षा का रवैया रखते हैं। हिंदी की गूंज एक पत्रिका नहीं, एक संस्थान है, एक विश्वास है, एक जुनून है और एक अथक यात्रा है। जिसमें हम सब लोग सहयोग करें और अपनी मातृभाषा के प्रति अपना सम्मान व्यक्त करें। जिससे श्रीमती रमा शर्मा को भी बल मिलेगा और अपनी भाषा को पुनः स्थापित करने में हम सब की भूमिका भी अविस्मरणीय हो जाएगी। यही मेरी आस्था के आयाम है।

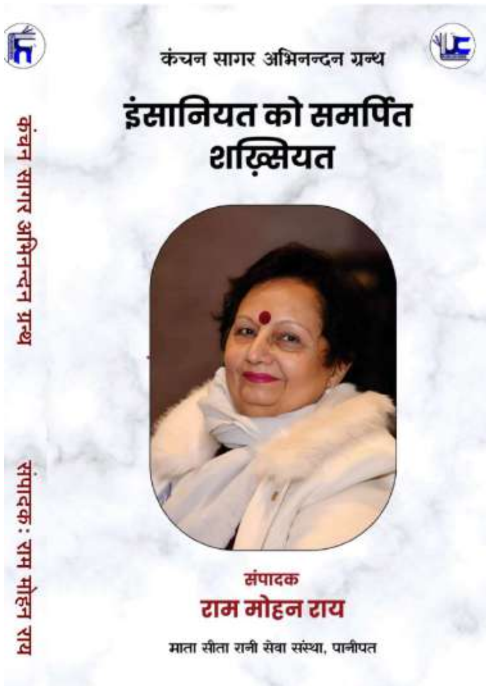

सुश्री कंचन जी को उनकी पुस्तक और जन्मदिन की बहुत बहुत बधाई. हिंदी की गूंज पत्रिका की ओर से

कविताएँ

सीमा वर्णिका
कानपुर

बसंत ऋतु

हवा चले मद्धम मनुहारी, प्रेम ध्वजा फहराएँगे।
पीली पीली सरसों फूली, गीत बसंती गाएँगे।।

ठंड कड़ाके की अब बीती, छटा सुहानी छायी।
सुप्त पेड़ पौधे सब जागे, लावण्या मन को भायी।।
मानव पशु आह्लादित होते, दुःख दर्द बिसराएँगे।
पीली पीली सरसों फूली, गीत बसंती गाएँगे।।

सजी मंजरी अमराई में, सुरभित उपवन होता।
जप तप पूजन करते प्राणी, हृदय दिव्यता में खोता।।
लदे बाग फूलों से सारे, भँवरे देखो मँडराएँगे।
पीली पीली सरसों फूली, गीत बसंती गाएँगे।।

चिड़ियाँ चहकें कोयल कूके, कानों में मधु सा घोले।
कण–कण हर्षित हो धरती का,सुखदायी बातें बोले।।
पर्वों का मौसम है आया, खुशियाँ खूब मनाएँगे।
पीली पीली सरसों फूली, गीत बसंती गाएँगे।।

सुखमिला अग्रवाल, 'भूमिजा'

सरल नहीं है

फितरत में जिसके कोई छल नहीं है।
उसी जिंदगी में हलाहल नहीं है।।
कहीं फूल बगिया, कहीं शूल सागर।
कोई शय जमीं पर मुकम्मल नहीं है।।
हरिक शख्स खोया सा बेजार सा है।
यही प्रश्न सबका, मगर हल नहीं है।।
कहां हार मानें ये पांवों के छाले।
नहीं फिक्र कोई जो चप्पल नहीं है।।
बुतों के शहर में कहां आ गये हम।
कहीं दूर तक कोई हलचल नहीं है।।

अभिषेक त्रिपाठी
आयरलैंड

पीपल की छाँव

नैन तुमसे मिले तो ये सोचा न था
स्वप्न ऐसे खिले मैंने सोचा न था
मैं भगीरथ सा तपता रहा व्योम में
मुझको गंगा मिलेगी ये सोचा ना था

प्रेम की हो कहानी ये सोचा ना था
होगा आंखों में पानी ये सोचा न था
मेरी बगिया में खुशबू बिखेरेगी वो
मैं बनूं उसका माली ये सोचा न था

ऐसे महके कली ये तो सोचा ना था
मेरे आँगन खिली ऐसा सोचा ना था
दीप्ति जो अवतरित होती आकाश में
मेरी छत पर ढली ये तो सोचा न था

इस समंदर में मिलती नहीं कोई नाव
सौ शहर से भी प्यारा है इक मेरा गांव
इस शहर की तपिश अब सताती नहीं
गेसूओं में तुम्हारे है पीपल की छांव।।

मंजिल

ज्योत्स्ना गर्ग
पानीपत हरियाणा

नहीं राह बनती, कभी
दूसरों से पूछकर
मंजिल मिलती है
अपने कदमों से आगे बढ़ कर
मानव मत कर तू चिंता,
आगे बढ़
फल की चिंता मत कर,
कर्म बस तू अच्छे कर
लक्ष्य मिल जाएगा एक दिन
इन्हीं कदमों के सहारे
मुस्कुराता चल गुनगुनाता चल
मन में किसी बात का न रख डर
जहां कदम लड़खड़ाए वहां तड़पना नहीं
जहां कुछ सोच आ जाए वहां रूकना नहीं
मेहनत एक दिन रंग जरूर लाएगी
देखना मंजिल एक दिन चलकर तेरे करीब जरूर आएगी।

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

कविताएँ

ओम सपरा
नई दिल्ली

शिव

कल्याण करे जो पूरे विश्व का,
वही सच्चा शिव कहलाए

शिवरात्रि के पर्व पर,
शिव को हम अपने हृदय में बसाये।
आकर क्रोध में करे वे तांडव
तो सब दुष्ट उनसे घबराएं,
गले में धारण विषधर नाग,
पर वे भोले बाबा कहलाएं।

कैलाश पर्वत पर वह विराजे
हाथ में अपने डमरू लहरायें,
जब संशय हो, पार्वती से
मंत्रणा कर शिव जी दूर भगाए।
भांग कभी न पीयें वो पर
यह दुनिया अनजाने में दोष लगाए।
अंतर्मन में सदैव धुनि रमाएं –
सचमुच वे परम योगी कहलाएं।

प्रदीप्त करें हम अपनी आत्मा,
जीवन को अपनी समिधा बनाएं,
बनाएं जंगल में एक नई बस्ती
हरे उपवन को महकाएं।
विष वेदना का पीकर हम भी,
नीलकंठ शिव का भक्त कहलाएं।
हो सदैव आत्मा में उल्लास,
तो सच्चे शिव के भक्त कहलाएं।

करें अब स्मरण सच्चे शिव को,
सुने सदा हम वेदों की ऋचाएं,
विमल समीर बहे इस धरती पर,
हम ''अमर अमृत–पुत्र'' बन जाएं।
नित्य मंगल संकल्पों से जुड़ कर,
वाणी से शिव का गुण गायें,
मन रहे सदैव निर्मल मेरा और
सत्य शिवम सुंदरम हम कहलाएं।

लेखक– प्रो. स्वाती पाल
अनुवादक– डॉ. विवेक शर्मा

माँ बेटा की कहानी

मैं आज भी अपने गर्भ में
तुम्हारे नन्हे कदमों की कोमल थापें
महसूस किया करती हूँ
सदा तुम्हारे चेहरे पर
अपना ही अक्श खोजा करती हूँ।
यह दोनों ही सदा मेरे होठों पर
भीनी मुस्कान भरा करते हैं।
एक भरी याद के साथ/तुम्हारा ढेर सारा प्यार
मुझे वापिस किया करते हैं
तो सुनों मेरे मिस्टर हिचकी
तुम याद बहुत आते हो/हमेशा मेरी आँखों को
यूँ नम कर चले जाते हो /मुझे याद हो आता है
उस बीते वक्त का इंतजार
वह घुमंतू रात और और
माँ–बेटे का साथ
बेटा/तुम्हारी माँ को था
तुम्हें जी–भर गले लगाना
बस गले लग जाना और
कभी न दूर जाना
मुझे आज भी आती है
मेरे गर्भ के भीतर से तुम्हारी खिलखिलाहट, खीज
और घरघराती साँसों की आहट
खींच ले जाती हैं
तुम्हारी माँ को,/ये हवाएँ उस जगह तक,
जहाँ मिलते हैं हम दोबारा
खिलखिलाकर मुस्कुराकर
रूक जाती हैं उस पल
संसार की हर–एक घड़ी
एक माँ निहारती है
अपने बच्चे को दूर खड़ी–खड़ी
मैं चाहती हूँ बताना तुम्हें
जन्म के एक दिन पहले की रात को
सच कहूँ तो मेरा तो सपना था,
अपने दुलारे को ता–उम्र गले लगाना
भले ही लगे कि यह
नौवें माह के सातवें दिन की
थी जुबान पर/सच कहूँ तो यह
एक माँ–बेटे की है अमर कहानी

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

कर्नल गिरिराज सक्सेना

कविताएँ

सुनीता अग्रवाल

क्रूर तांडव

क्रूर नियति पूर्वाभास ने, दो दो रात मुझे जगाया।
'मन भारी है' बोल कर, भार्या को मनभार बताया।
नव वर्ष बेला है, उसके साथ मनानी, निश्चय पाया।
'बोर्डेड फ्लाइट', मैंने उसे व्हाटसअप संदेश पठाया।
'अर्रे ! माँ पापा आते,' व्हाटसअप आश्चर्य जताया।
बिन मांगे वरदान मिले का, उसने भाव जताया।
अंतिम दिन वर्ष का भी हमने, सउल्लास मनाया।
नववर्ष संग स्वजन करने, वीडियो काल लगाया।
नववर्ष का दंश तन उठे चकत्ते, उदर में पीड़ा भारी।
भोर किरण से पहले, रुग्णालय जाना हुई लाचारी।
तन पीड़ा अनंत पल पल, मन पर कुठार था भारी।
सधन चिकित्सा दक्ष थे, दिखा रहे अपनी लाचारी।
दिन बीते तन के छाले, उदर पीड़ा से त्रास बड़ा था।
तन मे थी ज्वला अनंत, अग्निवर्षा का भास हुआ था।
शीतकरण यंत्र निष्काम, सकल प्रयास निष्फल थे।
दुष्ट साक्षी था मैं, सुकुमारी ने जब यह संताप सहा था।
चोथी भोर अंग अंतरंग, संभव रक्तस्राव प्रारंभ हुआ।
आंखों ने ऊपर पल्टा खाया, तब भीषणता भान हुआ।
दक्ष अदक्ष सबने मिल, धरती पर था आसमान किया।
बृहत चिकित्सालय ले जाओ, अब हमें निर्देश हुआ।
विलंबागत, कोकिला बृहत् रुगणालय में आये थे।
क्रूरकाल–पंजों मे शायद, अब हम पूर्ण समाये थे।
समय यंत्र की हर टिक–टिक, हम जीते मरते थे।
जीवन पा जाये कुमारी, मंत्र गायत्री हम जपते थे।
कितना आतंकी है विधि का विधान, नहीं गुमान था।
विधि की राहें मोड़ सकेंगे, अपने यत्नों अभिमान था।
मेरी प्राणों आहूति की कीमत, काश जीवन वो पा जाती
मैं तो जीवन जी ही चुका, बाकी कुछ अरमान नहीं था।
क्या–कैसे हुआ ? हृदय विदारक प्रश्नों की बौछार लगी है।
बहते आंसु धुंधली आंखों, मन पत्थर धर व्यथा कही है।
कैसे, गई वो जान न पूछो, टूटे जीने के अरमान न पूछो।
उसे सद्गति मोक्ष मिलै, मन मे बाकी बस अरमान यही है।

माँ और ममता

माँ और ममता को, शब्दों में बांधने चली मैं,
जिसने कोख से मुझे जन्म दिया...
उससे बर्दाश्त की परिभाषा पूछने चली मैं,
उसकी आंखों में जो..ममता दिखती है, मुझको,
उसकी किताब ..पढ़ने चली मैं,
मुझे भूख नहीं है.. तुम खा लो, बेटा,
उसके हर झूठ पर, यकीन होने लगा था,
पर, आज मां बनने पर..
इसी झूठ का शास्त्र समझने लगी मैं,
अपनी इच्छा होते हुए भी, अनिच्छा जताती थी,
वो आज, उन अनिच्छाओं में बलि बलि न्यौछावर होने का भाव समझने लगी मैं,
दही, शक्कर खाने से क्या होता है..कभी समझ न पाई मैं,
पर जब,कक्षा में प्रथम आई तो..
मां का भाव समझने लगी.. मैं,
मां ! मां!.. आटे से सने तुम्हारे हाथ..
तुम्हारे माथे पर गिरती अलकों को हटाते हैं,
फिर तुम कहती हो,
कौन है ?
मुस्कुराती हो और कहती हो,
आती हूं, आती हूं...
आजा बेटा, अभी शरबत बनाती हूं,
तेरा माथा, धूप से तप गया है, तरी मिल जाएगी,
इस मां की ममता को, शब्दों में बांधने चली मैं,
पचास वर्ष के बेटे से भी..
ये कहने वाली..
अरे ! ठंडा कर के, धीरे धीरे खा, जीभ न जल जाए,
प्रौढ़ में भी, वात्सल्य का भाव रखने वाली,
मां को समझने चली मैं,
तेरी कोख में...अनछुआ सा तानपुरा थी.. मैं,
इस दुनिया में आने पर,
तूने ही मेरे जीवन के तारों में संगीत भरा,
उस अनहद नाद रूपी मां को, समझने चली मैं,
मां और ममता को शब्दों में बांधने चली मैं, बांधने चली मैं।

कविताएँ

डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पाँडे
(नीदरलैंड)

स्त्री

चूल्हा मिट्टी का हो या गैस का
रोटी बनाते समय
उँगलियाँ मेरी ही जली है
जली उँगलियों के साथ
चेहरे पर मुस्कान के लिए
तुम्हारी स्वादिष्ट थाली
मैंने ही हमेशा सजाई है
जब जाते तुम काम पर
सारे दिन की थकान भूला
शाम को दरवाजे पर मेरी ही
निगाहें तुम्हें खोजती हैं

गर्भ धारण से लेकर
प्रसव पीड़ा तक
सब सह लेती हूँ मैं
एक तुम्हारे भरोसे
तानों से छलनी हुए
हृदय में भी
तुमको नर्म और गर्म
कोना देती हूँ मैं

सिर्फ एक बेटी ही नहीं
बहूँ, पत्नी, माँ न जाने
एक ही पल में
कितने रिश्तों को
जीती हूँ मैं
कभी चौपड़ में दांव लगने को बाध्य
कभी धरा में समाने की मजबूरी
हर बार मैं ही छली जाती हूँ
हर बार कुलटा, चरित्रहीन
मैं ही कहलाती हूँ
फिर भी हर बार
एक नये जन्म में
फिर से धरती पर आती हूँ
क्योंकि मुझे पता है
जिस दिन मेरा अस्तित्व
खत्म हो जाएगा
पुरूष तुम और तुम्हारा पौरुष
भी अर्थ हीन हो जाएगा

विनोद दूबे (सिंगापुर)

साध्वी

देह किसी और का, किसी और का मन,
कई औरतें जीती रहती हैं, मीरा जैसा जीवन,
मन का सारा प्रेम, मायके के संदूक में छुपा लेती हैं,
माँ बाप के कहे एक अजनबी पर,
अपना सब कुछ लुटा देती हैं,
डूबकर निभाती हैं, पत्नी का किरदार ,
पति पर कोई आँच आए, रहती हैं सती होने को तैयार,
सुबह की रसोई से रात के बिस्तर तक,
नींद में डूबा शरीर और उदास मन लेकर ,
भागते रहते सारा दिन भर इधर उधर,
कभी थककर, चाय का प्याला लिए,
सारी जिम्मेदारियों का हवाला लिए,
चुपचाप खड़े घर के किसी कोने में,
डूब जाती हैं अपने कृष्ण के जादू टोने में,
जैसे उन्हें पता होता हैं, चाय में चीनी कम है या ज्यादा,
वैसे ही वो जानती हैं, मन और देह दोनो की अपनी मर्यादा,
अपने कृष्ण के पावन, अनंत, प्रेम का संसार जानती हैं,
तो भोज से मिले रिश्तों का, सामाजिक संस्कार जानती हैं,
ना जाने कैसे बना लेती हैं ये औरतें,
मन के प्रेमिका और देह की पत्नी,
के बीच का संतुलन,
ना जाने कैसे गुजार लेती हैं ये औरतें,
बाहर से कुशल गृहणी, भीतर से साध्वी जैसा जीवन

नाम– हरलीन

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

कविताएँ

डॉ. मधुर चतुर्वेदी

हिन्दी प्रशस्ति गान

अस्मिता का हिन्द की सत्कार है हिन्दी!
एकता के सूत्र का विस्तार है हिन्दी!!

संस्कृता, सञ्जीविता, अपराजिता है।
मर्दिता बहु भाँति पर कठजीविता है।।
आत्म गौरव की गहन हुङ्कार है हिन्दी।
राष्ट्र के जयघोष की टङ्कार है हिन्दी।।

वन्दिता, अभिनन्दिता, वाणी पुनीता।
रञ्जनी, दुखभञ्जनी, सुखदा, सुनीता।।
भक्ति की अभिव्यक्ति का उद्गार है हिन्दी।।
भावना के भाष्य का उच्चार है हिन्दी।।

संलयन, सन्दर्शना का उन्नयन है।
भिन्न परिवेशी स्वरों का सम्मिलन है।।
सार्वभौमिक ऐक्य का सञ्चार है हिन्दी।
राष्ट्रवादी भावनद की धार है हिन्दी।।

आत्म का विश्वात्म मैं शुभ सन्तरण है।
संस्कृति की सौम्यता का सञ्चरण है।।
कूट सूत्रों का सरल व्यवहार है हिन्दी।
लक्ष्य के उत्कर्ष का सुविचार है हिन्दी।।

वर्ण,अक्षर,नाद योजित व्याकरण है।
ज्ञान का विज्ञान सम्मत आचरण है।।
आदि कवि की कल्पना का सार है हिन्दी।
रस तरङ्गित तारिणी का तार है हिन्दी।।

आप्त ऋषियों की गिरा से निःसृता है।
है कलेवर दिव्य यह प्रांजल ऋता है।।
पूत वैदिक वाङ्गमय अनुहार है हिन्दी
स्वस्ति की संकल्पना साकार है हिंदी।।

क्यौं विमाता–मोह मैं, माता भुलायी।
क्यौं परिष्कृति ने विकृति से मात खायी।।
इस भ्रमित व्यामोह का उपचार है हिन्दी।
गर्व से उद्घोष हो, स्वीकार है हिन्दी।।

डॉ. विजयानन्द

जिंदगी

डर–डर क्यों जीते हो, यह जिंदगी मिली हमको।
उम्र जो भी दिया उसने, एक क्षण कम नहीं होगी।।

प्यार है तो चुभन भी है, दर्द है तो दवा उसकी,
किसी से है डरना क्या, मन में न कसक होगी।।

डरना है तो डर उससे, वह ही सब करता है,
भगवान के घर देरी, पर अंधेर नहीं होगी।।

सच बोलो,न पाप करो, न षडयंत्र करो कोई।
मन भर जियो जीवन, कुछ बात नयी होगी।।

यम के द्वारे जाकर, चुपचाप खड़े रहना।
जो कुछ कर्म बचा होगा, मां जन्म नया देगी।।

ना उनकी कचहरी में कोई झूठी गवाही है।
सत्कर्म सही होगा नाजन्म, मुक्ति होगी।।

जब राम जन्म लेकर, कान्हा बन आते हैं,
सीता की सखियों संग, वे रास रचाते हैं।।

फिर मार कंस को वे, गीता सुनवाते हैं,
रणछोड़ भले बनकर, द्वारिका बस जाते हैं।।

हैसियत हमारी क्या ? औकात नहीं होगी।
बिन भय के जियो जीवन, कुछ बात नयी होगी।।

राकेश मल्होत्रा, शिकागो

राम भक्ति

राम भक्ति
राकेश की कलम से
कभी ना बिसरूँ राम को,
जीवन हो समर्पित कृपानिधान को।
चाहे दुनिया सारी बिसर जाए,
राम नाम का रहे स्मरण हर श्वास को।
स्नेह का सागर राम का नाम है,
भक्ति में जिसकी परम आनंद है।
चिर संगीं मेरे राम है,
कृपा से जिनकी बनते बिगड़े काम है।
राम नाम सम्पूर्ण जीवन का सार है,
जिसके सिमरन से हो जाता बेड़ा पार है।
राम ही दाता, राम ही खिवैया,
राम ही आसरा पार लगाता सब की नैया।
राम नाम से मिलती शक्ति प्रतिदिन है,
धन्य हैं वो जो राम की भक्ति में लीन हैं।
राम के नाम में ही सब कुछ है,
उनकी भक्ति में ही है सच्चा सुख है ।
जो धर्म और सत्य का प्रतीक है,
कभी ना बिसरूँ उस नाम को।
जिसने तन, मन, और धन दिया है,
सब कुछ अर्पण उस राम को।

आरिया यादव

मधु खरे
वर्जीनिया, अमेरिका

विजयदशमी!

राम गए वनवास सखी रे,
संग में सीता कोमल नार।
बंधु लक्ष्मण हो गए साथ,
अति गहन था भ्राता प्यार।।
लंकेश रावण इक विद्वान,
मति मारी सीता सौंदर्य।
भूल गया अपनी मर्यादा,
स्वर्ण हिरण ने लूटा धैर्य।।
सीता लाँघी लक्ष्मण रेखा,
रावण ने किया अपहरण।
जटायु विचलित देख व्यथा,
भेजा संदेश राम लक्ष्मण।।
हनुमान श्री प्रकट हुए तब,
जा पहुँचे लंका विदेश।
देख सीता अशोक वाटिका,
राम मुन्दरी दिखाई विशेष।।
हनुमान करें लंका संहार,
लंबी पूँछ आग लगाकर।
रावण मूर्छित हो स्वीकारा,
अपनी कामुकता हारकर।।
विजय पताका फहरा कर,
किया फिर था रावण दहन।
नकारात्मकता का निकास,
जीवन ये बनेगा सुंदर भवन।।
लेकर सीख रावण दशानन,
सदुपयोग हो शक्ति सम्मान।
करना नहीं दुरूपयोग कभी,
राम हृदय विराजित हनुमान।।

मोनिका (नूर)
पानीपत

जश्न

आओ मिलकर हम मुस्काएं
नई सुबह का जश्न मनाएं
कुछ चेहरों पर खुशियां लाएं
जो सोचा वह सब कर जाएं
सूरज चांद सितारों जैसे
हम भी सब पर प्रेम लुटाएं
आओ कुछ ऐसा कर जाएं
नई सुबह का जश्न मनाएं

अब तक केवल जो सोचे थे
वो सपने साकार बनाएं
बैठ हवा के पंखों पर हम
उस अंबर को छूकर आएं
कभी–कभी छोटी बातों पर
बिना बात के हम मुस्काएं
कुछ चेहरों पर खुशियां लाएं
जो सोचा वह सब कर जाएं
सूरज चांद सितारों जैसे
हम भी सब पर प्रेम लुटाएं
आओ कुछ ऐसा कर जाएं
नई सुबह का जश्न मनाएं

जो उदास है उसे हंसाएं
जो नाराज है उसे मनाएं
जिससे रूठें बरसों बीते
उसको वापिस ले कर आएं
कब तक जिंदा हैं हम यारों
हमें हि इसकी खबर नहीं है
छोड़ के जिद्द और झूठे मसले
दुनिया मैं खुशियां बिखराएं
दिलों में प्रेम के फूल उगायें
आओ मिलकर हम मुस्काएं
नई सुबह का जश्न मनाएं

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

गरिमा सूदन, बहरीन

कविताएँ

जमीर- आईना हूँ मैं तेरा!

आईना हूँ मैं तेरा
मुझसे कुछ भी नहीं छुपा
कि मैं अक्स हूँ तेरा
तू क्या सोचता और क्या रवैया है तेरा
मैं सब जानता और मैं सब देखता
तू मेरी परछांई, मेरे आर–पार से घिरा
आईना हूँ मैं तेरा!
तेरा अहम, तेरी अकड़
जिस पर है तेरी मजबूत पकड़,
जो कर रहा तुझे अपनी खोखली जंजीरों में जकड़!
तेरा राबता है सबसे कैसा?
मैं मुस्कुराता पर सब कुछ देख रहा!
कि मैं अक्स हूँ तेरा!
मुझसे कुछ भी नहीं छुपा,
तू सबको पर्दों में रख
पारदर्शी तू है मुझसे
नासमझ हैं क्या सभी यहाँ?
कि तू समझता यही
कि सबको भुलावे में रखकर
खघ्ुद को ही धोखा देता रहा।
तू कौन है, तेरा वजूद है क्या!
अपने जमीर को कभी तो जगा!
तेरी गलतियाँ और तेरे गुनाह
कर दे हवाले श्उसकीश पनाह।
जो की हैं तूने गलतियाँ उस पर गौर कर
कि सब जानकर भी अंजान है।
क्या तेरी आँखों पर पट्टियाँ हैं?
और दिल भी बदगुमान है!
खुद की तकलीफ की तुझे है बहुत फिक्र
कई बार तूने दूसरों के दिल को छलनी किया
जिसका तुझे बिल्कुल एहसास नहीं और न ही कदर!
अपने जमीर को कभी तो झकझोरा कर
गर अपनापन नहीं तो इंसानियत के तौर पर!
अनदेखा तू करता रहा पर मैं तो सब देख रहा
कैसे तेरा अहम जिसको तूने महत्व दिया
वही तुझे हरा रहा
पर तू नहीं समझ सका।
संस्कारों और रिश्तों को पीछे रखकर
तू अहम के साथ ही बढ़ता जा रहा
कि तुझे अपना अहम ही दिखा
बाकी सब तेरे लिए धुंधला–सा रहा!
आईना हूँ मैं तेरा,
मुझसे कुछ भी नहीं छुपा!
तू कौन है, तेरा वजूद है क्या?
अपने जमीर को कभी तो जगा!
तू क्या सोचता और क्या रवैया है तेरा
मैं सब जानता और मैं सब देखता
आईना हूँ मैं तेरा!

सिमरन गिरधर, पानीपत

रिश्ते

इस रंग बदलती दुनिया में
रिश्ते भी है बदले बदले से
अब कहां अपनत्व रहा इनमें
आ गए हैं इनमें फासले से
वो भाई बहन का खिलखिलाना
वो बुआ भतीजी का इठलाना
अब खो गया बाहरी चकाचौंध में
वो रिश्तेदारों का घर आना
हे ईश्वर सबको नेक बुद्धि पर चला दे
वो पहले सा प्रेम फिर लौटा दे
प्यार करें सब अपनों को दिल से
वो भाव सबके दिलों में जगा दे

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

कविताएँ

मुकेश कुमार सिन्हा

प्रेम का अपवर्तनांक

नजरें सीधी रेखा में कर रही थी गमन
कुछ ऐसा जैसे घोड़े की नजरों को
रखा जाता हो सामने
जिंदगी बस यूं ही चल रही थी
हमारे समानान्तर
नहीं था आकर्षण
नहीं थी कोई फिकर
शायद तभी थे थोड़े निडर
विज्ञान की शिक्षिका ने भी
बताया था
पारदर्शी माध्यम में
प्रकाश का गमन
होता है सीधी रेखा में
कुछ ही तो बदला था समय,
जब गणित के छात्र को
रसायन विज्ञान की छात्रा में
दिखा आकर्षण
शिक्षिका की बातें
फिर से आई याद कि
माध्यम के बदलते ही
प्रकाश की किरणें
झुकती हैं अभिलम्ब की ओर
चाहते न चाहते
रास्ते बदलने लगे,
यहां तक की
कक्षा की सीट भी बदली
दूरियां नजदीकियां बन गई,
अजब इत्तफाक है
ऐसे में,
जब प्रकाश अपने पथ से
विचलित हो सकता है
तो मैं क्यों नहीं,
मेधावी छात्र ने स्वयं को
तथाकथित रूप से समझाया !
आपतित किरण,
अपवर्तित किरण और अभिलम्ब
सभी होते हैं एक तल में
वैज्ञानिक सूत्र की व्याख्या
की जा रही थी
ब्लैक बोर्ड पर
और नजर थम गई,
दरवाजे पर
नजर गई,
मुड़ी और फिर
खिलखिलाई,
गुलाबी आभा के साथ
वो बस आई ही तो थी ......
मुसकुराते हुए
दिल ने भी कह दिया
विज्ञान का दिल
धड़कता ही नहीं
धधकता भी है
महाविद्यालय
परिसर का अपवर्तनांक
रहा हर समय नियत
प्रेम धड़कता रहा
क्लासेज चलती रहीं,
बरगद के पेड़ ने
सहेजे कुछ दिल के चिन्ह,
ब्लेड से बने हुए
और फिर एक सुबह,
आई खबर,
कल है उसका ब्याह!
चन्द्र यान की तरह
प्रेम यान की लैंडिंग भी
अंतिम पलों में लड़खड़ाई
छात्र ने अंतिम पन्ने में
शुभ विदा लिखा
विज्ञान की शिक्षिका ने
त्याग पत्र दिया !

अंशु जैन देहरादून

स्वीकार करो

मानव जीवन बहुत मुश्किल से मिलता है,
चाहें जैसे भी हालसत हों इसे स्वीकार करो!
फूलों सी डगर हों, या कांटों का सफर हों
कोई साथी हों या रहगुजर हों
जीवन को स्वीकार करो!
मन रहे अकेला या साथ में हों रेला
संसार है झमेला, तन्हाई हों या मेला
फिर भी जीवन को स्वीकार करो!
अहसासों की घुटन हों, कोई भी चुभन हों,
या मन में सूना पन हों, स्वीकार करो!
शब्दों की कमी हों या आँखों में नमी हों,
बंजर सी जमीं हों, मुश्किलों की सरगमी हों
जीवन को स्वीकार करो!
जब तक प्राण रहे तन में, हौंसला हों मन में,
लेकर उम्मीदों को उड़ने दो गगन में,
खुशहाली के चमन में खिलते रहो सुमन से,
हर हाल में जीवन को स्वीकार करो!

उषा किरण ''मानव''

रुख मोड़ दिया

उठते समुंद्र की धाराओं का,
रुख मोड़ दिया हमने।
नदी की बहती धाराओं का,
मुख मोड़ दिया हमने।
हो कितनी भी मुश्किलें
वक्त आने पर दुश्मन का,
रुख मोड़ दिया हमने।
हो कितना भी कठिन वक्त,
वक्त आने पर तूफानों का,
मुख मोड़ दिया हमने।
एक तेरे भरोसे पर
खुद को छोड़ दिया हमने,
एक तेरे कहने पर खुद को
मोड़ दिया हमने।

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

कविताएँ

शिखा पोरवाल
मनस्विनी कनाडा

नव्य भारत

ये गण का तंत्र,
कैसा हो गया
मन का मंत्र, हरेक जप रहा
नव्य भारत ऐसा हो कि
सारा गणतंत्र जागरूक...
अन्तर्मन दहके
ज्वाला सा मुख
मचा हाहाकर..
सेंध लगा नियमों में
लोकतंत्र के नाम
मजाक बनाया
समेटा था बहुत
जा रहा बिखर–बिखर
हर कोई सोच रहा
अपनी–अपनी...
नव्य भारत ऐसा हो कि
सारा गणतंत्र जागरूक....
नेताओं से पहले हो
जय–जयकार वीरों की
सरहद की सोच
बारूदों से परे
इंसानियत की छांव में
मजहब का नहीं
देशप्रेम का हो दरख्त
अटल विश्वास,
उष्ण हो श्वांस
तब घर– घर में
पैदा होगा
अब्दुल कलाम
नव्य भारत ऐसा हो कि
सारा गणतंत्र जागरूक...
लोकतंत्र का करके मंथन
एक देश एक कानून
का राज है अपनाना
सत्यं, शिवम, सुंदरम के
विज्ञान नव कलेवर संग
ख्वाहिशों से परे
विकास की संस्कृति ओढ़के
नया कुछ हैं गढना..
ये गण का तंत्र,
कैसा हो गया
मन का मंत्र, हरेक जप रहा
नव्य भारत ऐसा हो कि
सारा गणतंत्र जागरूक.....
बुलंद लोकतंत्र में
बिना डिगें,
कदमताल से चलकर
विवेक, जोश व
सच्चे देश प्रेम की ज्वाला
हवनकुंड में झोंककर
नव्य भारत ऐसा बनाना है
कि सारा गणतंत्र जागरूक...
उम्मीद की चुनर ओढ़कर
नहीं तो साल– दर – साल
वक्त कि बिसात से
इंकलाब के नारे
लगाने हैं व्यर्थ...
पुरजोर कोशिश करे की
नव्य भारत ऐसा हो कि
सारा गणतंत्र जागरूक

आशीष मिश्रा, लंदन

मुझे एक राम बना दे

हे राम, सुबह और शाम बना दे।
हे राम, मुझे एक राम बना दे।।
मेरे मन के मनके में
राम झलकियाँ तेरी
राम दिखा दे अपना द्वारा
हाँ, तोड़ बेड़ियाँ मेरी
तेरे माथे पर पुष्पित है
सूरज की पहचान
कितने राम बटोरे तूने
बनने को एक राम
आज हृदय एक कोने में
उस निषाद की नाव बना दे।
हे राम, मुझे एक राम बना दे।
कठिन राह, राहों के काँटे
राम सहज ही काटे
राम युद्ध में भी केवल तुम
अनुकम्पा ही बाँटे
झूठे बेर कहीं खाकर
या किष्किन्धा ही जाकर
तुमने बतलाया झूठा सब
बेमतलब का पाकर
शबरी के मन के दीपक–सा
सुंदर मुझमें भाव जगा दे
हे राम, मुझे एक राम बना दे।
राम चतुर्भुज होकर भी तुम
मानवता का मान रहे
कितने ही रावण से मिलकर
राम सदा तुम राम रहे
राम महल से रावण तक
हाँ, कितने वक्री काल पड़े
लेकिन धीरज के संबल से
बार बार तुम राम बने
ऐसी अलग सहज नीति को
मुझमें भी आसान बना दे।
हे राम, मुझे एक राम बना दे।
मेरे हर विश्वास में रामा
स्वामी तुम और दास मैं रामा
राम चंद्र ही भरे हुए हैं
और हृदय आवास में रामा
राम मुझे मेरे जीवन में
संयम का आकाश बिछा दे।
हे राम, मुझे एक राम बना दे।
आशीष मिश्रा, लंदन
राम हृदय विराजित हनुमान।

जारिशा खान
उम्र 11 वर्ष

कविताएँ

साधना मिश्रा 'लखनवी'

भारत भू की नार

बेचारी मत कहना मुझको, हिन्द देश की मैं हूँ नार
लाचारी से मुक्त हुई हूँ, दुनिया ली है अब तो जीत।
जो मुझको अबला कहता है,ना रखती हूँ उससे प्रीत।।
अपने पर जब आ जाती हूँ, चंडी का रखती हूँ रूप।
संस्कारों को साथ ले चलती, संस्कृति की मैं सेकूँ धूप।।
बेचारी मत कहना मुझको, मैं हूँ भारत भू की नार।
रखती सारी शक्ति समाये, मैं ही हूँ सोलह श्रृंगार।।
दुश्मन के छक्के उड़ा रही है, सीमा पर लड़ती है जंग।
कुश्ती दंगल दौड़े आगे, देख–देख कर दुनिया दंग।।
आओ प्यारे साथी आओ, नारी का कर लो तुम गान।
माता भगिनी पत्नी है वह, हर नारी का कर सम्मान।।
नारी में वह शक्ति छिपी है, माँ दुर्गा का है अवतार।
कष्टों को सहकर जीती है, मातृशक्ति जग का आधार।।
इक्कीसवीं सदी की नारी, करती है जय–जय उद्घोष।
महाकाल जब बन जाती है, नही देखती गुण अरु दोष।।
ना समझो नारी बेचारी, ईश्वर ने दी सारी शक्ति।
देव मनुज किन्नर भी पूजे, श्रद्धा वंदन करते भक्ति।।
बेचारी मत कहना मुझको, हिन्द देश की मैं हूँ नार..

कविता गुप्ता, शिक्षक, उत्तर प्रदेश, सह–संपादक हिंदी की गूँज

कागज कलम

कागज कलम जब से मेरी साथी बनी हैं।
ये मेरे कई कच्चे रिश्तों की बर्बादी बनी हैं।
रूह मेरी खुद अभी मुक्कमल हुई भी नहीं
जाने कौन से धागे टूटकर आजादी बनी है।
यूं तो जी रही हूं मुस्कुराकर बेइंतहा मैं
पर मुस्कुराहट उदासी की कहानी बनी है।
मन की पीड़ा मन को कचोट रही है
बिना गुत्थी के ही मेरी परेशानी बनी है।
खुद से ना जाने क्यों नाराज हूं मैं
शायद वजह ही इसकी हैरानी बनी है।
कहते हैं कि अंतर्मन की इच्छाएं बहुत हैं
इच्छाओं को करे तृप्त वो वारि बनी है।
भागे है मन एक अलग ही दिशा में
मुसाफिर को तो जैसे धानी बनी है।
कागज कलम जब से मेरी साथी बनी हैं
ये मेरे कई कच्चे रिश्तों की बर्बादी बनी हैं।

डॉ. कीर्ति वर्द्धन

पुराना दौर

चला गया वह दौर पुराना चक्की का,
सुबह सवेरे आटा पिस्ता चक्की का।
सबसे पहले झाड़ू चौका साफ सफाई,
मधुर मधुर गीतों का संग चक्की का।

दादी ताई रोज चलाती घर में चक्की को,
समय समय पर टंक लगवाती थी चक्की को।
घुरन्ड लीपना पीली मिट्टी से, काम रोज का,
सेहत का राज बताती माँ–दादी चक्की को।

डॉ. अंजना सिंह तोमर
नोएडा (उत्तर प्रदेश) भारत

नारी

बना कर मनगढ़त बातें जो दुनिया को बताती हैं
यही कमजोरियाँ अपनों की मेरा कद बढ़ाती हैं
ये अपने संस्कारों से बँधी कुछ इस तरह से हैं
ये सब भारत की नारी हैं ये हर दुख भूल जाती हैं
मुझे बेवजह अक्सर कोसने वालों जरा सुन लो
तुम्हारी बद्दुआएँ ही मेरी हिम्मत बँधाती हैं
बुराई पर तुम अपनी ध्यान दो कुछ द्वेष कम होगा
मेरी अच्छाइयाँ क्योंकर तुम्हारा दिल जलाती हैं
ये भारतवर्ष की नारी हैं रघुकुल रीति में आकर
कोई वादा किसी से कर लिया है तो निभाती हैं
न जाने किसके पापों ने इसे धरती बना डाला
यहाँ इक झील बहती थी मेरी दादी बताती हैं
ये श्रद्धा भी अजब है 'अंजना' जिसके लिए अक्सर
कुँवारी ख्वाहिशें खुश होके अपना दिल झुकाती हैं

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

कविताएँ

डॉ. रामचन्द्र स्वामी

अनुनय विनय

हे गुरु रवि कभी,
मेरा नमन स्वीकारों
व्याकुल इस हृदय को
तृप्ति तान से झंकारों
संगीत के सुरभी से
आज भी महकता है समीर
तारका, रवि ,शशि, नभ में
तुम बिन आज है अधीर
अनल ,अनिल, भूधर ,सलिल
गाए नित तब गुणगान
दिवस, रजनी, संध्या, प्रभात
कविता में जाग्रत हर प्राण
मधुकर गाए गुन गुन धुन
वन कानन और उपवन में
बजती है बांसुरी आज भी
हृदय के निधिवन में
शश्य श्यामला धरणी को
दिया है आपने गान
याद कर आपको आज भी
क्रंदन करें हर प्राण
कर्ण प्रिय सुमधुर गीत
जगाती हर प्रभात को
तन्मय हो मानव मन
भूलता जीवन आघात को

कृष्ण कन्हैया, बर्मिंघम

शून्य

एक दिन, तुमने कहा था–
मैं शून्य हूँ– तुम अंक हो
गणित की भाषा में –
एक पिछड़ा प्रसंग हो
संख्या के चक्कर में
ऐसा उलझा कि–
जिंदगी का पहाड़ा भूल बैठा
और अपनी शिकस्त कबूल बैठा
पर इस बात ने मुझे
गफलत से निकाला
जब तुम्हारी इकाई पर
मैंने अपना शून्य डाला
तब मैंने पाया कि
मेरा वजूद बड़ा होता है
जब मेरा शून्य तेरे बाजू
में खड़ा होता है!
गणित के मापदण्ड पर
शून्यता के बावजूद भी
तुमसे कहीं बड़ा होता है!!

नाम– गौरव

डॉ. रजनी शर्मा ''चंदा''

जीवन एक तमाशा

जीवन है यह एक तमाशा।
पल में तोला पल में माशा।
तुम से मिलकर हमने जाना –
कितना निर्धारित है पाशा।।
मन की पीड़ा को सहलाना ।
आंसू पी कर तुम रह जाना।
मिलना और बिछड़ कर जीना–
घाटा है यह अच्छा खासा।।
मन गति का यह काल अलग है।
विश्वासों का ढाल अलग है।
अंबर तक आडंबर छाया –
कब तक ढोएं झूठी आशा।
सुख में होता सबका हिस्सा।
दुख लगता है झूठा किस्सा।
जब अपनी पर आ जाए तो–
घिर आती घनघोर निराशा।।
कठिन राह पर चलना होगा।
खुद से आज संभलना होगा।
चमकेगा यह चांद फलक पर–
सूर्य किरण ने स्वयं तलाशा।।

नाम– नैतिक

कविताएँ

रश्मि विभा त्रिपाठी

हम मिलेंगे

तुम
मेरे कृष्ण
मैं तुम्हारी राधा
हमारा प्यार
दुनिया के लिए है
प्यार का
एक सबसे पवित्र
उदाहरण
मगर
तुम द्वारका में
मैं बरसाने में
किसी भी जमाने में
मैं तुम्हें
नहीं कर पाऊँगी वरण
पिछले जनम
जब तुम मेरे राम थे
तब भी मेरा हुआ था हरण
हम कहाँ रह सके
एक दूजे के संग– संग
मन में ही
दबी रह गई
मिलने की उमंग
जब तुम थे मेरे फरहाद
और मैं शीरीं
तो
क्या तुम्हें है याद?
हमारे बीच
तब भी तो नहीं हो सका
कोई भी प्रेम– संवाद
जब
तुम थे राँझा
मैं तुम्हारी हीर
हम एक आत्मा
दो शरीर
कहाँ
एक दूजे के गले मिलकर
हमने तृप्ति पाई
कहाँ
मिला पाई
हमें तकदीर
जब– जब तुम आए
बाँहें फैलाए
हमारी राह में
कितने तूफान आए
सुनो
हम मिलेंगे
तो सिर्फ
ख्वाबों– ख्यालों में
तुम्हारे नाम के होंगे
मेरे वो सारे पल
गुजरते दिन महीने सालों में।

गव्या मल्होत्रा
10वीं कक्षा
आयु 16 वर्ष
पानीपत (हरियाणा)

डॉ शोभा रावत

तुम

तुम्हारी परछाई
छूने की चाह में
मेरी हथेलियां सिर्फ
अपने खाली पोरों को ही
छू पाई।
तुमने जहाँ कदम रखे
उन कदमों के
नक्शेकदम चलने की चाह में
कई बार
सन्तुलन खो गिरी
पर तुम्हारे कदमों की
कॉपी न कर सकी।
तुम्हारे खिलखिलाने के बाद
मैने भी हँसना चाहा
हँस नहीं पाई बस
शून्य में ताकती रही।
तुम्हारी आँखों मे
आँखें डाल बातें करूं
चाह थी मेरी
पर ख्वाबों में भी
तुमसे बात की
तो दुनिया ने
पागल समझा मुझे।
तुम्हारी राह देखते देखते
पथराई आँखे मेरी
तुम न आये
जब आये
तुम्हें पहचानने के
काबिल न रही

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

कविताएँ

कविराज बाबू
मॉरीशस

मानवता

युग के बदलाव में,
आ गयी कैसी तीव्रता।
मानव मानव न रहा,
कहाँ खो गयी मानवता ?
अंग–प्रत्यंग से तो,
लगते हैं हम मानव स
पर स्वभाव यदि देखें तो,
लगते हैं अधिकतम दानव।।
धर्म ग्रंथों ने हमारे,
गाए गुणगान मानव के।
तनिक खुद से पूछें तो,
क्या, हैं अधिकारी हम इस पद के?
भागते रहते दिन–रात हम,
जाने क्यों मानवता से दूर स
फंसते जा रहे मोह–माया में,
क्या, हम हैं इतने मजबूर?
घमंड में अपने मदमस्त,
अच्छाइयों को अपने पीछे छोड़।
बिना सोचे–विचारे हम,
चल पड़ते बुराइयों की ओर।।
द्वंद्व चलता रहता निरंतर,
सद्मार्ग और कुमार्ग के बीच।
जब भी सद्मार्ग हमको पुकारता,
कुमार्ग के प्रलोभन लगते, हमको खींच।।
कब तक और कब तक,
दुष्चक्र यह रहेगा चलता?
इस गंभीर समस्या का होगा,
कोई–न–कोई तो रास्ता?
समय न रहा सोने का अब,
जागो शीघ्र खोलो आँखें।
युवाओं का भविष्य है दाव पर,
सिखाओ इन्हें मानवता की बातें।।
और कुछ यदि हम न कर पाएँ,
तो प्रेरित करें इन्हें सत्संग की ओर।
अवश्य जागेगी मानवता इनमें,
दिखेगी हमें आशा की भोर सस
कुछ भी असंभव नहीं यदि,
करले हम मन में दृढ़ निश्चय।
चलिए मानवता को पुनः,
दिलाएँ हम एक नया परिचय।।

स्मिता श्रीवास्तव
शिक्षाविद, भाषा प्रशिक्षक

सच्चा मित्र

दोस्ती के पल बड़े मस्ताने ,
दोस्ती के दिन बड़े सुहाने।
दोस्तों की मिश्री सी मीठी बातें,
खेल– कूद और हुड़दंग भरी मुलाकातें।
दोस्तों संग खूब खेलते खाते,
बात–बात पर रूठ भी जाते।
सच्चे दोस्त सच्ची राह दिखाते,
सफलता के पथ पर चलना सिखाते ।
मन को रखते बिल्कुल साफ,
खुशियों का भी रखें हिसाब।
दोस्ती की मिठास है बड़ी कमाल,
कृष्ण सुदामा की दोस्ती है बेमिसाल।
महकेगा जीवन की बगिया का इत्र,
जब संग साथ हो सच्चा मित्र।
दोस्ती की पतंग की स्वछंद उड़ान,
सहज विश्वास को मिले मुक्त आसमानद्य

तृप्ति मिश्रा

बस चलते रहना

जीवन की मुंडेर पर
खड़े होकर
दूर क्षितिज में
देखना झांककर
देखना जीवन को कभी
उजियारा हमेशा पाओगे
हो सकता है तुम अभी
खोए हो कहीं अंधेरों में
हो सकता है तुम अभी
घिरे हो कई फरेबों में
पर जीवन के क्षितिज पे तुम
हरदम उजियारा पाओगे
अगर निकलना हो तुमको
अपने घने अंधेरों से
बस एक ही बात
समझ लेना
उस क्षितिज की
राह पकड़ लेना
कभी नहीं रुकना
बस चलते रहना
निरंतर
बस चलते रहना
निरंतर
बस चलते रहना

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

कविताएँ

डॉ. बी. निर्मला, मैसूर कर्नाटक

इंसानियत

अगर तुम बनना चाहते हो एक इंसान,
तो बोना हृदय में इंसानियत के बीज,
अपने स्वार्थ में तुम,खुद खो न जाना,
परोपकार के भाव,सदा मन में रखना।
नसीब से मिला जन्म, हमें मनुज का,
मनुष्यता के गुण को,सदा याद रखना,
हो सके,कभी रोते हुओं को हंसाना,
मगर अपनों को,भूल से भी न रुलाना।
भूखों को रोटी देकर, उनसे दुआ लेना,
गरीबों की लाचारी का फायदा न लेना,
कभी इतनी सहजता से नहीं है होता,
आंखों से अश्रु,आसानी से न बरसता।
लगती,जब दिल को, कभी चोट गहरी,
वही कहता है,उसके दर्द की कहानी,
जब आत्मा को लगती है,गहरी ठेस,
तभी तड़पता है वह मछली की तरह।
इंसान वही,जो समझे सबके जज्बात,
समझे अपने,पराए और सबका मर्म,
इस जग में कोई छोटा,कोई बड़ा न,
उस परमात्मा के ही बंदे हैं हम सब।
फिर तुझको किस बात का है,अहम,
क्यों पाल रखें हैं मन में ढेर सारे वहम,
इस धरा पर,सब प्राणी हैं एक समान,
इंसान हो,छोड़ना न,कभी इंसानियत।

ध्रुव मेहरा
उम्र 16 वर्ष

अरुण भगत

शून्य और शून्य के बीच

जीवन एक छोटा सा
अंतराल ही तो है
शून्य और शून्य के बीच
शाश्वत मौन और मौन के बीच
फिर इसको लेकर
इतना कोहराम क्यों
कोलाहल क्यों ?
कहाँ ले जाएगी
यह सरपट दौड़
क्या पा लेंगे,
क्या पास रह जाएगा
क्यों चिंता हैं खोने की
जब अपना कुछ है ही नहीं
जब कुछ साथ लाए ही नहीं
और न ही ले जाएँगे
तो फिर/क्या पाना और क्या खोना
किस बात का
विषाद और विवाद
किसी से/क्या जीतना है
क्या है हारना
जब हार–जीत का
कुछ प्रयोजन ही नहीं,
तो हारने पर अपमान कैसा
जीतने पर उन्माद क्यों
जो कुछ भी दिखता है
जब नश्वर है
तो उससे लगाव क्यों
उसके प्रति/आसक्ति कैसी?
जीवन एक
स्वप्न मात्र ही तो है,
अस्थाई और क्षणभंगुर
उसे ले इतने विह्वल क्यों
उत्तेजित क्यों/यही प्रश्न हमें ले जाएँगे
विरक्ति के मार्ग पर
अंतर्मन के मौन के गर्भ में
वहीं से आरंभ होगी
हमारी/शाश्वत मौन की दिशा में
वापसी यात्रा !

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

कविता

मोहन गोरखपुरी

संतृप्तजीवन

आज जब वसुधा से,
अम्बर पर उड़ा तो
निशा का साम्राज्य
अभी स्थापित था
और साथ–साथ
कोहरे के आवरण से
क्षोभमण्डल आच्छादित था
परिस्थितियाँ प्रतिकूल थी
मन में संशय का वास था
नभ में विचरण,
अभेद सा लग रहा था
उड़ने में भय भी
पर
लक्ष्य पूर्व निर्धारित था
एवं
जीवन के हौसलों भी
साथ थे
कुछ अंतर्द्वंद कुछ बहिर्द्वंद
से संघर्षरत
एवं
हिचकोले खाते हुए
मैं उड़ चला व्योम में
इस आशा के साथ कि
निशा की कालिमा
ऊषा के आलिंगन से
अस्तित्व विहीन जाएगी
फिर रश्मि अपने स्पर्श से
हर्षित करेगी
किरण अपने आँचल से
धुँध के आवरण को छाँट
मुझे अपने आँचल में
सुरक्षित विचरण
करने की अनुमति
प्रदान कर
विजय की अनुपम
अनुभूति करायेगी
पुनश्च
जैसी संकल्पना
वैसा ही आविर्भाव हुआ
मेरी आशा
सम्भावना को
यथार्थ में
परिवर्तित करती चली गयी
एवं जीवन में
हर्षिता रूपी धूप की
अनुपम ऊष्मा मिली
धारणा ने एक नयी
ऊर्जा संचारित की
अब मैं
उम्मीद के आसमान
को छुकर
धरा पर एक ऐसा
वातावरण बना रहा हूँ
जहां कोई धुँध नहीं है
सब स्पष्ट है
अब मैं पुनः
अपने जीवन पथ पर
अग्रसर हूँ
जीवन में एक नयी
उमंग के संग

विनोद पाण्डेय
संपादक, हिंदी की गूंज अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका,.
टोक्यो जापान

रात तनिक भारी है

रात तनिक भारी है
लेकिन
कौन सवेरा
को होने से रोक सका है ?
साथी हिम्मत रखो !!
पीड़ा को पहचान रहा हूँ
शंकाओं को जान रहा हूँ
दुर्गम राहें ,पाँव फिसलते
डर हावी है ,मान रहा हूँ
मगर हमें
बढ़ना ही होगा
उसकी खातिर,
जो सहमा है
थका–थका है !!
आशाओं के दीप जलाओ
विश्वासों के फूल खिलाओं
जिन–जिन के चेहरे उदास हैं
उनकी हँसी ढूढ़ कर लाओ
जो दुःख में हैं
उन्हें संभालो
दर्द करो कम
जिनका –जिनका
घाव पका है !!
संघर्षों का साथ पुराना
हमसे बेहतर किसने जाना
इतिहासों में दर्ज कई हैं
कठिन दिनों का आना –जाना
कुछ गलती
हमने भी की है
वक्त का शायद
इसीलिए
माथा ठनका है !!
अनहोनी पर जोर नहीं है
मन में लेकिन चोर नहीं है
हमें उड़ा लेगी यह आँधी
हम इतने कमजोर नहीं है
तूफानों का/दौर थमेगा
अभी हवाओं का
रुख थोड़ा बहका है !!

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

अजमत कैश

तुम्हारी याद

रात भर याद करता था,
खुदा से फरियाद करता था।
मेरी बस बात हो तुमसे,
यही चाहत में करता था।
मगर जब बात ना होती थी,
तुमसे उन दिनों मेरी।
मैं कागज और कलम से ही,
रात भर बात करता था।
तुम्हारी याद ने मुझ जैसे को,
लिखना सिखा दिया।
के तेरा शुक्र है तूने मुझे,
शायर बना दिया।

अमित कुमार कौशल

राजनीतिक यज्ञ

राजनीती का क्या पढ़ा हैं?
विपक्ष दल इक दूजे के समक्ष खड़ा हैं।
किसने माना आपस में कब धर्म लड़ा है?
बेरोजगार युवा उम्मीद लिए अड़ा है।
हैं नेता कितने जो देश की सोचे?
बढ़ती आबादी सच में देश को नोचे।
नागरिक देश का ना हारा हरबार,
नारी शक्ति भारत माँ की है अपरम पार।
जीतेगा वही जिसमें है संस्कार,
गरीबों का मसीहा खोजो ऐसी हो वो सरकार।।

सरोज अहुजा
पानीपत, हरियाणा

उड़ान

पंख फैलाकर उड़ने को ही
नहीं कहते हैं उड़ान,
मन में फैलते विचारों को भी
कहते हैं उड़ान,
आसमान पर विचरते भरते उड़ान
किन्नर देवता क्या थाह
पा सकेंगे मन की उड़ान?
जी चाहता है बाहें फैलाकर
आगोश में भर लूँ आसमान,
सपनों को सच करने को
भी कहते हैं उड़ान।

ललिता दत्ता
कतार

नोंक-झोंक

विश्वास और नौक– झौक
है दांपत्य जीवन की नीव।
इसके बिना यह रिश्ता
लगता है अजीब।

चाहे कितनी भी हो तकरार
वो प्यार रहता ही है बरकरार।
एक अंदीखी डोर सी है ,
जो खींचे एक दूजे के ओर।

विश्वास और नौक– झौक
ही है दांपत्य जीवन की नीव।
इसके बिना यह रिश्ता लगता है अजीब।

लघुकथा

अजय शर्मा
जयपुर, राजस्थान

अपना-पराया

'डॉक्टर साहब, जल्दी कीजिए। पेशेंट की जान खतरे में है। आप तुरंत चलकर संभालिए।' एंबुलेंस से उतरते हुए इंस्पेक्टर वर्मा ने कहा।

'माफ कीजिए इंस्पेक्टर साहब, मेरी ड्यूटी ऑफ हो चुकी है। आप इमरजेंसी में ले जाएं या ड्यूटी डॉक्टर से संपर्क करें।' अपनी गाड़ी में चाबी लगाते हुए डॉ सिन्हा ने कहा।

'अगर इस वक्त स्ट्रेचर पर आपका बेटा लेटा हुआ हो तो', इंस्पेक्टर वर्मा ने कहा, 'ध्यान से देखिए। आपका बेटा आकाश ही है। कॉलेज के पास एक दुर्घटना का शिकार हो गया है।'

डॉ. सिन्हा पागलों की तरह बेटे का स्ट्रेचर खुद ही धकेलते हुए ऑपरेशन थिएटर की तरफ दौड़ रहे थे।

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

बाल कविताएँ

आद्रिजा गुप्ता
कक्षा–5

बड़े बुजुर्ग लोग

बड़े बुजुर्ग लोग हर घर की जान होते हैं।
दादू दादी नानू नानी नाम से हमारी शान होते हैं ।
इनके आशीर्वाद से तकदीर बदल जाती हैं।
इनके पॉव के नीचे जन्नत सी नजर आती हैं।
टीवी, मोबाइल, गूगल से बहुत जानकरी आती हैं।
परन्तु इनके अनुभव और ज्ञान से समस्या टल जाती हैं।
आजादी के समय से आज तक का समय देखने वाली पीढी है यह बड़े बुजुर्ग लोग।
रोटी दाल का मन होते हुए भी इन्होंने हमारे लिए पिज्जा बर्गर को झेला हैं।
हमारे लिए अपने आप को हर रंग में ढाला है ।
ना जाने अपनी कितनी इच्छाओ को मारा हैं।
उमर के इस पड़ाव में इन्हें हमारे हाथ की जरुरत हैं।
इन्हें हमारे साथ की जरुरत हैं।
आज की पीढी अगर यह कदम उठायेगी
तो आने वाले समय में किसी व्रद्धाश्रम की जरूरत नहीं आयेंगी।

– नाएशा शर्मा
कक्षा ६ब

धरती माँ का कर्ज

हम आपके आभारी है धरती माँ,
आपने जो भी दिया है उसके लिए।
हमें जन्म देने के लिए,
और इस चमकते सूरज के लिए।
आपके हरे–भरे पेड़ों ने हमें भोजन और साफ हवा दी जीने के लिए,
और आपकी खूबसूरती ने कोई कमी नहीं छोड़ी हमारे मन को मोह लेने में।
आपने तो अपने मातृधर्म को बहुत अच्छे से निभाया है,
लेकिन हम इंसानों ने आपको सिर्फ दर्द ही पहुंचाया है।
हमने आपको हर तरह से प्रदूषित किया,
और आपको गंदा और बदबूदार बना दिया।
नहीं जानते हैं हम माध आपका कर्ध्ज कैसे चुकाएंगे,
कैसे आपको पहले जैसा हरा–भरा बना पाएंगे ।

रिदम पंढरीनाथ पाटील
3 तक चावरा पब्लिक स्कूल

झाँसी की रानी

झाँसी की रानी, मान हमारा
देश का गुमान हमारा,
जब दुश्मनों ने हमला किया,
अपनों ने ही फँसा दिया,
युद्ध की आई घड़ी।
किले से नीचे कूदी घोड़ी
तब रानी ,घोड़े से गिर पड़ी,
फिरभी दुश्मनों से लड़ी।
आगे जाके देश का गौरव बनी बड़ी।

प्रियांशी जोशी
कक्षा– छठी

दीवाली आई

दीवाली आई ! दीवाली आई !
चारों ओर खुशियाँ छाई।
हर घर में दीयें जलते,
अंधेरे को वे रोशन करते।
बच्चों ने फुलझड़ियाँ जलाई,
बड़ों ने बांटी खूब मिठाई।
हर बार साल में आता ये त्यौहार,
अपनों से मिलता जिसमें मिलता खूब सारा प्यार व उपहार।
दीवाली आई ! दीवाली आई !
चारों ओर खुशियाँ छाई।

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

ग़ज़ल

देवी नागरानी

उम्मीदों के तिनके

पहले अनबन थी मगर बढ़ कर रकाबत हो गई
देख कर हैरान बरसों की रिफाकत हो गई
थे रफीक इक–दूसरे के, फिर न जाने क्या हुआ
बात तो कुछ भी न थी लेकिन अदावत हो गई
एक हाजत मंद की चाहत को पूरा कर दिया
थी तसल्ली ये कि पूरी उसकी हाजत हो गई
मिल के रहना जब से सीखा है मेरे परिवार ने
चारदीवारी मेरे घर की तो जन्नत हो गई
घर बना कर साहिलों पर डर रहे तूफान से
बेअसर उन सरफिरों पर हर नसीहत हो गई
जोड़कर तिनके उम्मीदों के बना जब आशियाँ
बिजलियों का उनपे गिरना जैसे फितरत हो गई
शोरो–गुल से दूर जो खामोशियों में हैं पले
उनको सन्नाटों में रहने की ही आदत हो गई

कृष्ण टंडन, लंदन

निजाम ए ख़ुदा

समंदरों से, किसी प्यास को मराम ना हो
यही निजाम–ए–खुदा है तो से निजाम ना हो!
उड़ान में ही रहें, आखरी मकाम ना हो
मेरे जुनूँ के परिन्दों का कोई शाम ना हो।
हवाओं में चलो सहरा में, ऐसे गुलशन से
जहां बहार की आमद का एहतिराम ना हो।
ये माना काम की बातें भी हैं जरूरी मगर
वो खत ही कैसा जिसमें दुआ सलाम ना हो।
मैं ढूँढता ही रहूँ काफिये, रदीफ नए
सफर तलाश का भगवान करे तमाम ना हो।
नहीं है करिश्मा कोई तो और क्या 'कृष्ण'
कि तू शहर में रहे और कतेल–ए–आम ना हो।

अर्थ : मराम : इच्छा या उम्मीद
निजाम : प्रबंध या बंदोबस्त
एहतिराम : स्वागत

विज्ञान व्रत

ढूँढ रहा हूँ

मैं कुछ बेहतर ढूँढ़ रहा हूँ
घर में हूँ घर ढूँढ़ रहा हूँ

घर की दीवारों के नीचे
नींव का पत्थर ढूँढ़ रहा हूँ

जाने किसकी गर्दन पर है
मैं अपना सर ढूँढ़ रहा हूँ

हाथों में पैराहन थामे
अपना पैकर ढूँढ़ रहा हूँ

मेरे कद के साथ बढ़े जो
ऐसी चादर ढूँढ़ रहा हूँ

संगीता चौबे पंखुड़ी, कुवैत

वैभव जगत

न हो तुम संग यदि तो मैं मरूँगी।
मिले वैभव जगत का क्या करूँगी।।
गुजारी शाम बीती रात गहरी।
चली आई सुबह फिर से सुनहरी।।
नयन से अश्रु बन कर मैं झरूँगी।
मिले वैभव जगत का क्या करूँगी।।
शिलालेखों सरीखी मैं अकेली।
बिना भाँवर खड़ी दुल्हन नवेली।।
सितारे माँग किस विधि मैं भरूँगी।
मिले वैभव जगत का क्या करूँगी।।
सफलता का खुला हो द्वार पथ पर।
खड़ी किस्मत लिए हो हार कर धर।।
तुम्हारे बिन न इक पग मैं धरूँगी।
मिले वैभव जगत का क्या करूँगी।।
विधाता ने लिखा हो भाग्य लेखा।
समय ने खींच दी हो काल रेखा।।
हरा यम को तुम्हें ही मैं वरूँगी।
मिले वैभव जगत का क्या करूँगी।।

ग़ज़ल

तेजेन्द्र शर्मा, एम.बी.ई. लन्दन

बर्फ भी आज हमारा बदन जलाती है...

खबर वहां के पहाड़ों से रोज आती है
पड़ोसी गोली से अपनों की जान जाती है।

वो कैसे लोग हैं, मरने से जो नहीं डरते
ज़मीन छोड़ने से शान पे बन आती है।

बमों और गोलियों से नाम जितने भी हैं जुड़े
अब उनके नाम की पहचान भी डराती है।

वो लोग भी हैं जिन्हें दोस्तों ने लूटा है
हो दिन या रात, याद गांव की सताती है।

वतन हमारा है अफसोस हम मुहाजिर हैं
बर्फ भी आज हमारा बदन जलाती है।

जीतू जलेसरी
युगाण्डा

भूल जाता हूँ

कहाँ पर है मेरा अक्सर ठिकाना भूल जाता हूँ।
मैं तुझको याद करता हूँ जमाना भूल जाता हूँ।

मेरी आदत मेरी खातिर मुसीबत बन गयी है अब,
उसे नाराज कर दूँ तो–मनाना भूल जाता हूँ।

न करना था, वो करता हूँ, जो करना था, नही करता,
रुला देता हूँ सबको मैं हँसाना भूल जाता हूँ।

जो वन्दे मातरम का स्वर कभी कानो में पड़ता है,
तो मैं दुनिया का हर फिल्मी तराना भूल जाता हूँ।

यहाँ परदेश में अक्सर ये मेरे साथ होता है,
गजल कहता तो हूँ पर मैं, सुनाना भूल जाता हूँ।..

श्वेता सिंह उमा

सरापा इश्क

सरापा इश्क की पहचान है तू
मेरा धर्म, मेरा कर्म, मेरा ईमान है तू
साहिब–ए–कलम का निगहबान है तू
फिर क्यों मेरी ख़्वाहिशों से अनजान है तू
अपने नूर की बारिश से जरकार कर दे
नजर–ए–इनायत मुझपे सरकार कर दे
रहमतों का अपनी हक़दार कर दे
हर खाता पे मुआफ बार बार कर दे
दुनियादारी का हुनर सीख रही हूँ अभी
इस रंगमंच का माँझा हुआ फनकार कर दे
क्योंकि... सरापा इश्क़ की पहचान है तू
मेरा धर्म, मेरा कर्म, मेरा ईमान है तू
साहिब–ए–कलम का निगहबान है तू
फिर क्यों मेरी ख़्वाहिशों से अनजान है तू
हुदुस–ए–जिंदगी से बेजार कर दे
गम–ए–दहर का मेरे उपचार कर दे
रकीबों को भी मेरा यार कर दे
मुक़द्दर को जरा वफादार कर दे
सहराओं में उन्स के फूल खिलाना चाहती हूँ
मेरे उजड़े नशेमन को गुलजार कर दे
क्योंकि... सरापा इश्क़ की पहचान है तू
मेरा धर्म, मेरा कर्म, मेरा ईमान है तू
साहिब–ए–कलम का निगहबान है तू
फिर क्यों मेरी ख़्वाहिशों से अनजान है तू
मेरे मुआफिक़ मौला मेरा संसार कर दे
मुझ फक़ीर को भी शहरयार कर दे
उदास सपनों को खुशगवार कर दे
जिंदगी के जंग के लिए तैयार कर दे
मेरे मुर्शीद मुझे तेरी ही तलबगारी है
अपनी सोहबत में मेरा उद्धार कर दे
क्योंकि... सरापा इश्क़ की पहचान है तू
मेरा धर्म, मेरा कर्म, मेरा ईमान है तू
साहिब–ए–कलम का निगहबान है तू
फिर क्यों मेरी ख्वाहिशों से अनजान है तू

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

पारुल सिंह
लेखक

उपन्यास से...

ऐ वहश्ते दिल पुस्तक से

बाजीचा–ए–अतफाल है दुनिया मेरे आगे
होता है शब–ओ–रोज तमाशा मेरे आगे

डॉक्टर अमिता आकर गुड मॉर्निंग कहती हैं और मेरा हाल पूछती है। मैं उन्हें देख कर चहक जाती हूँ वो थोड़ी सी जल्दी में लग रही थी। वो पर्दे खींचते हुए कहती हैं– 'मैं एक बार आपको चेक कर लूँ पारुल जी?' मैं सहर्ष तैयार हो जाती हूँ।

'आप सो पाईं रात में डॉक्टर?'

'बिल्कुल, घर जाते ही सो गयी थी।'

वो मेरे इंसिसन साइट और गरोइन को चेक करती हैं और फिर कहती हैं कि आज आपके टाँके हम इंसिसन के निकाल देते हैं पारुल जी। जब संगमा के साथ मिल कर उन्होंने ये प्रॉसेसेज किया तो बहुत ज्यादा दर्द तो नहीं हुआ पर कम भी नहीं था। उन्होंने मुझे एक लम्बी साँस खींचने को कहा और वो कोई तार पेसिंग वाइअर था जो उन्होंने निकल दिया और संगमा के साथ मिल कर ड्रेसिंग भी कर दी। वो जल्दी से फिर चली गयीं।

हम लोगों का नाश्ता हो गया था। आज मेरे लिए कोई सूप आया था।

संगमा के अलावा सभी डे शिफ्ट की नर्सेस आ गयी थीं। मैंने संगमा से पूछा कि वो क्यों नहीं गयी, तो उस ने बताया कि आज उसकी डबल शिफ्ट है,कल रात के बाद अब वो आज दिन में भी यहीं रहेगी, वो शाम को जाएगी।

नींद नहीं आएगी क्या इसे, मैं सोच रही थी। सिस्टर मेरे बालों में आज सुबह रबड़ बैंड लगा गयी थी, बाल मुझे पीठ में चुभ रहे थे तो मैंने चोटी आगे कंधे पर घुमा ली थी। ऑक्सीजन ट्यूब तो नहीं पर अब हाथ में बँधा ऑटोमेटिक बी पी अप्रेटस परेशान कर रहा था। हर पंद्रह मिनट में ये खुद्द ही घुन घूँ कर चालू हो कर रीडिंग लेता था जिस से अचानक मैं डर कर उछल पड़ती थी। कितना भी याद रखो, नींद आ जाए तो वो खुल जाती थी।

अब एक नर्स उस काम को कर रही थी जो वो खुद्द को ज्यादा स्मार्ट समझने वाला स्टाफ करता था उसकी शिफ्ट खत्म हो चुकी थी। और ये नर्स बार–बार दरवाजा चेक कर आती थी। पर आज मेरे डॉक्टर का कहीं अता–पता नहीं था। इसी बीच री–सर्जरी वाले मरीज अपने आप साँस लेने की कोई कोशिश न करते हुए सोने की धृष्टता भी कर चुके थे। ये व्यवहार तो संगमा को बिल्कुल पसंद नहीं था। वो एक और नर्स के साथ चिल्लाती हुई उनके पास पहुँची। श्आप से कहा है न, लम्बी साँस लीजिए, सोना नहीं है।श वो दोनों उस मरीज को देख ही रही थीं, कि आँधी तूफान की तरह बहुत सारे डॉक्टर्स के साथ मेरे डॉक्टर दाखिल होते हैं वो सीधे बगैर इधर–उधर देखे उन्हीं मरीज के पास पहुँचते हैं। खूब सारे निर्देश आदेश वो सब डॉक्टर्स को देते हैं, आज उनकी आवाज थोड़ी तीखी भी है तेज भी है।

वो आज जब मेरे पास आते हैं तो फिर वो ही ख़ूब सारे सैनेटाइजर से हाथों को रगड़ कर धो डालते हैं। इस धोने में गुस्सा है, तीव्रता है, जैसे कोई चिढ़ है, आज वो काफी बहुत ज़्यादा गम्भीर नजर आ रहे हैं और श्गुड मॉर्निंग मिसेज सिंहश के साथ श्हाउ आर यूश भी पूछा तो है पर उसके जवाब का इंतजार नहीं किया। सीधा दूसरा सवाल कर दिया।

''क्या मैं एक बार आपका इंसिसन साइट देख सकता हूँ मिसेज सिंह?''

''जी डॉक्टर।''

स्टाफ द्वारा पर्दे डाल दिए जाते हैं। संगमा डॉक्टर अमिता और मेरे डॉक्टर ही बस अंदर रहते हैं उन पर्दों के। वो संगमा की ओर देखते हैं संगमा और डॉक्टर अमिता आगे बढ़ कर मेरे घाव से कपड़े हटा कर ड्रेसिंग खोल देती हैं। वो चेक करते हैं फिर दोनों सिरों से दबा कर देखते हैं। पीछे हट जाते हैं। और पर्दे से बाहर निकल जाते हैं। संगमा मेरी ड्रेसिंग और कपड़े फिर से व्यवस्थित कर देती हैं।

''अब ठीक हैं पारुल जी, हम कर्टंज हटा दें ?'' पूछ कर मेरे जवाब से आश्वस्त होने के बाद डॉक्टर अमिता पर्दा हटा देती हैं। मेरे डॉक्टर दूसरी ओर मुँह फेरे खड़े हैं। डॉक्टर अमिता उन्हें 'सर' पुकारती हैं तो वो पलटते हैं।

''मिसेज सिंह आप अच्छा रिकवर कर रही है पर इसमें आपका कोई योगदान नहीं है। अभी तक आपकी ये आक्सीजन ट्यूब हट जानी चाहिए थी। अपने लंग्स के लिए आपको खुद मेहनत करनी होगी। आप लम्बी गहरी साँस लेती रहिए। आज से आपको स्पाइरोमीटर मिल जाएगा आपका लक्ष्य जल्द से जल्द उसकी तीनों बाल्स को उठाना होगा।'' फिर वो फर्श को देखते हुए कुछ सोचते से नजर आते हैं, जैसे कोई कहूँ न कहूँ, या कैसे कहूँ की कशमकश में होता है। और फिर वो कह देते हैं।

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

स्मिता श्रीवास्तव
शिक्षाविद, भाषा प्रशिक्षक

लघुकथायें

किश्वर अंजुम
दुर्ग
छत्तीसगढ़

कछुए का कवच

राहुल सुबह–सुबह दौड़ने जाता था। आते–जाते वह रोज एक वृद्ध महिला को देखता था। वह महिला तालाब के किनारे छोटे–छोटे कछुओं की पीठ साफ किया करती थी। राहुल जिज्ञासु था इसलिए उसने कछुओं की पीठ साफ करने का कारण जानने का निश्चय किया। राहुल वृद्ध महिला के पास गया और बोला, ''नमस्ते आंटी ! मैं आपको हमेशा इन कछुओं की पीठ को साफ करते हुए देखता हूँ। आप ऐसा क्यों करती हैं?'' महिला ने उस मासूम से लड़के को देखा और कहा, ''मैं कछुओं की पीठ साफ करते हुए सुख–शांति का अनुभव करती हूँ।'' इनकी पीठ पर जो कवच होता है उस पर कीचड़ जमा हो जाने की वजह से इनकी गर्मी पैदा करने की क्षमता कम हो जाती है इसलिए ये कछुए तैरने में मुश्किल का सामना करते हैं। इन कछुओं का जीवन १५० से २०० वर्षों का होता है यदि इनकी देखभाल न की जाये तो समय से पहले ही इनके जीवन का अंत हो जाता है। इन्हीं कारणों से कछुओं की कई प्रजातियां विलुप्त हो चुकी हैं।

यह सुनकर राहुल बड़ा हैरान था। उसने फिर कहा, "आप बहुत अच्छा काम कर रही हैं।" अगर आपकी तरह सभी यही सोचेंगे तो हम इनकी मदद कर सकेंगे क्योंकि एक और एक ग्यारह होते हैं। उसने स्वयं से वादा किया कि वह भी इस नेक काम में वृद्ध महिला का हाथ बँटाएगा। आखिर ये छोटे बड़े पशु –पक्षी भी तो पर्यावरण का महत्त्वपूर्ण अंग हैं, इनके प्रति हम मनुष्यों को संवेदनशील होना ही होगा।

नमस्वी पांडेय

आहट

बेवा मां को दो थप्पड़ लगाकर बेटा घर से चला गया.. ..सदमा होना लाजिमी था....बहू ठक ठक सैंडिल बजाते अपने कमरे में चली गई अपनी जीत का ऐलान करते हुए....

बुढ़िया औरत जिसका ये इकलौता लड़का था और जवानी की बेवगी थी तो जाहिर है लड़के को अकेले ही पाला था मां और बाप दोनों बनकर, इस सितम को बर्दाश्त करने मजबूर थी....क्या करती? कहां जाती? किससे शिकवा करती?

इस एक लड़के के अलावा कोई न था जिसको अपना कहती.....ये वही लड़का है जिसे मां के बिना एक पल भी अकेला रहना नहीं सुहाता था, जो मां में ही कुल कायनात समझता था।

आज इतना बेरहम कैसे हो गया कि अपनी मां पर ही हाथ उठा बैठा?

बुढ़िया खघमोश गुम हो गई सोचों में....अचानक उसके चेहरे पे एक अजीब सी मुस्कान आ गई।

बहू आई शान से बाहर तो देखा कि बुढ़िया सास मुस्कुराते बैठी है....नाराज होकर उसने कहा... ''ऐं अम्मा, बेटे के थप्पड़ ने दिमाग खराब कर दिया है क्या? रोने की जगह मुस्कुरा रही है।''

सास ने गर्दन को हल्की सी जुंबिश देते हुए कहा... ''मैं सोच रही हूं कि जो, अपनी बेवा मां की मेहनत और तरबियत का मान न रख सका, वो तेरी जवानी और लटकों झटकों का कब तक गुलाम बना रहेगा? तेरा नशा जब उस पर से उतर जाएगा तो तेरा क्या होगा? बस यही सोचकर हंसी आ गई।''

अब बहू गुमसुम बैठी है......आने वाले वक्त की आहट, उसके जहन को मथ रही है....

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

इंद्रजीत कौर

व्यंग्य

पुस्तक विमोचन

आपको किताब का विमोचन करवाना हैं तो मेरे अंदर सारे वे गुण मौजूद हैं जो एक वरिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ, समयनिष्ठ, गम्भीर और बोलने में धांसू विमोचनकर्ता में होने चाहिए। मेरे बालों की सफेदी दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। सोशल मीडिया में मेरे काले बाल दिखते होंगें पर ये सफेद ही हैं। पिछले छः सात सालों से इन पर काला रंग लगा रही हूँ। जैसे ही मुझे पुस्तक विमोचन के लिए ऑफर देंगे, रंगना छोड़ दूँगी। कृपया पंद्रह दिन पहले बताइएगा। मैं ज्यादा खिलखिलाकर नहीं हंसती, भारी दिखती हुई हल्की सी मुस्कुराहट फेर देती हूँ। चेहरे पर 'गम्भीर लुक' आ जाता है । विद्वान दिखने के लिए दांतों को अंदर रखना जरूरी है। मेरा इन पर भी पूरा नियंत्रण रहता है। विमोचन के समय किताब पर लगे फीते की गाँठ आसानी से खोल लेती हूँ। जिंदगी की बड़ी से बड़ी गांठें खोली हैं मैंने। कई लोगों की मित्रता की मजबूत गांठों को खोल–काटकर परे किया है। फेविकोल से भी मजबूत कई रिश्तों पर पैनी नजर डाली है। उन्हें सकुशल कोर्ट पहुंचाया है तो किताबी गाँठ किस खेत की मूली है, उसे तो फूँक मारकर खोल दूँगी। मुझे गठिया भी नहीं है। आप जहाँ और जब बुलाएँगे दौड़कर हाजिर हो जाऊँगी। मंगल ग्रह पर विमोचन करवाना हो तो भी इंकार नहीं। चाँद पर आमंत्रण देंगे तो ऑक्सीजन का ड्रम बाँधकर आ जाऊँगी।

कुछ लोग विमोचन के समय किताब को उल्टा पकड़ लेते हैं। टोकने पर सीधा करते हैं। विश्वास दिलाती हूँ, मैं ऐसा नहीं करूँगी। पकड़ने से पहले ही पूछ लूँगी कि किधर से सीधी है। कवर के किसी अक्षर के ऊपर मेरे हाथ नहीं रहेंगे। मेरा चमकता, दमकता और विमोचिता चेहरा दिखे ना दिखे, किताब पूरी की पूरी दिखेगी। मेरी गर्दन 'विमोचन–फ्रैंडली' भी है। जब और जिधर चाहें, गर्दन झुका दूँगी। तीन सौ साठ डिग्री तक मुझे शाल ओढ़ाने, बुके देने और फोटो खींचने में आपको कोई दिक्कत नहीं होगी। 'प्लस पॉइंट' यह कि मेरे विचार भी ऐसे ही घुमावदार हैं। पाला बदलना हो तो पल भर में तैयार। मुँह से जिसके खिलाफ या समर्थन में उगलवाना चाहो तो हाजिर। पिछली बात को पलटना हो तो भी कोई दिक्कत नहीं। निकटदृष्टा को दूरदृष्टा, अकालजयी को कालजयी, हल्के को गंभीर, गंभर को हल्का आदि जो कहना हो बता देना।

मैं बचपन से ही एहसानमंद व्यवहार की रही हूँ। कोई सौ रुपये की एक चॉकलेट देता तो बदले में अपने ग्लूकोज वाले लोकप्रिय बिस्कुट के पैकेट से एक या आधा तोड़कर अवश्य देती थी। इस उम्र में इतनी इज्जत के बाद आपको खाली हाथ कैसे रख सकती हूँ ? भविष्य में जब भी किसी सम्मान और पुरस्कार वाली निर्णायक समिति का सदस्य मुझे बनाया जाएगा, मैं आपका नाम आगे दूँगी। किसी किताब का संपादन करूँगी तो आपका लेख सबसे आगे रखूंगी। समीक्षात्मक लेखों में आपका नाम तारीफ के साथ घुसाने के लिए समीक्षकों पर दबाव डालूंगी, भले ही कुछ मेहनती लेखकों के नाम उड़ जाय। वे नहीं मानेंगे तो मैं अपने संपादक होने का फर्ज निभा दूँगी।

इससे आपकी विश्वसनीयता दिन दूनी रात सोलह गुणी रफ्तार से बढ़ जाएगी। सम्मान देने वाली संस्थाएं बिना पढ़े आपको सम्मानित कर देंगी। आप व्यंग्य लिखते हैं तो गंभीर साहित्य वाले आपको नवाजेगे। गंभीर साहित्य रचते हैं तो हास्य–व्यंग्य वाले भी शाल ओढ़ा देंगे। आप कहानी वाले हैं तो 'कविता चोटी' और सिर्फ कवि हैं तो 'कथा शिखर' सम्मान से सम्मानित करवा सकतीं हूँ।

साहित्य के अखाड़े में आप किसी भी रास्ते से पहुंचे हों या दरवाजे पर ही खड़े होने लायक हों , हर रास्ते में आपके लिए माला, शाल, नारियल, बुके, स्मृति चिह्न , पुरस्कार राशि आदि देने वाले खड़े रहेंगे। आप उस स्तर तक पहुँच जायेंगे जहाँ सम्मान से आपका नहीं, सम्मान खुद सम्मानित होगा।

तो मित्रों, आप अपनी किताब के विमोचन के लिए मुझे कब बुला रहे हैं ?

समृद्धि रोमा काशीनाथ
आयु 8 वर्ष

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

रश्मि सहाय
ग्रेटर नोयडा

कहानी

जमाना बदल गया है

शुभा, ओ शुभा! विनीता आवाज लगा रही थी, पता नही कहाँ जाकर मर गई है, उसका गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था।

क्या है माँ, क्यों चीख रही हो? अच्छा! ये माँ से बात करने का तरीका है। जैसे– जैसे बड़ी हो रही हो उद्दंड होती जा रही हो।

शुभा पलट कर वापस जा रही थी, बिना कोई उत्तर दिए कि विनीता ने खिसिया कर कहा, लो अब वापस चल दी। सुबह से काम में लगी हूँ, थोड़ी मदद करा देती। कम से कम भाई और पापा को नाश्ता ही पहुंचा दो।

तो ऐसे बोलो न, तुम तो चिल्लाने लगती हो। शुभा ने बर्तनों की रैक से 2 प्लेट निकाली और सब्जी परांठे लेकर चल दी पापा और भाई को देने।

विनीता उसे जाते हुए देख रही थी। कभी उसे लगता वो ही गलत है पर अधिकांश समय उसे शुभा ही गलत लगती।

युवा बेटी का खुले कपड़े पहनना, उन्मुक्त विचार, उसे उत्तेजित कर जाते और बेफिक्री से पैसा उड़ाने की आदत?

वो एक मल्टीनेशनल कंपनी में एक अच्छे पैकेज पर थी। घर में भी सभी के लिए कुछ न कुछ करती ही रहती थी कभी भाई के लिए जीन्स, तो कभी पापा के लिए शर्ट और कभी विनीता के लिए सलवार सूट––

विनीता समझ नही पा रही थी कि कमी कहाँ थी।

शुभा कभी लौट कर उसे बताती कि उसने पार्लर में

स्लिमिंग का कोर्स जॉइन कर लिया है वो पूछती कितने का?

तीस हजार हर महीने, क्या? तीस हजार रुपये तुमने ऐसे ही लुटा दिए? विनीता का मूड ऑफ होने लगता।

शुभा भी ओफ्फो माँ आपको तो कुछ भी बताना मुश्किल है। कौन सा आपसे मांग रही हूँ?अपने ही तो हैं जिन्हें खर्च कर रही हूँ, कह कर उठ जाती।

विनीता घुट कर रह जाती, इतनी बर्बादी पैसों की और कुछ न सुनना।

प्रशांत से कहती तो भी सुनने को मिलता, विनीता समय के साथ बदलना सीखो उसकी कमाई है, खर्च करने दो उसे, और विनीता का मुँह फूल जाता।

उसे लगता कोई उसे समझना ही नही चाहता।इधर कई दिनों से वो प्रशांत से कह रही थी कि शुभा के लिए वर देखना शुरू करें पर प्रशांत कहते उसे खुद ही देखने दो। वो बताएगी अपनी पसंद के लड़के के बारे में।

यूं तो विनीता भी प्रेम–विवाह की विरोधी नही थी और इसी इंतजार में थी कि कब शुभा उसे अपनी पसंद के लड़के से मिलवाती है।

एक इतवार जब शुभा की छुट्टी थी दुलार दिखाते हुए उससे कहा, माँ एक बात कहूँ? और विनीता का दिल बल्लियों उछल गया, लगता है अब शुभा उसे अपनी पसंद के लड़के से मिलवायेगी।

मुस्कुरा कर विनीता ने कहा, हां, बताओ न–––

माँ, मेरी अच्छी मां, आप पापा को भी तैयार कर लेंगी,

मुझे पता है। मेरी पसंद विशाल है मेरे ऑफिस में मेरे साथ ही काम करता है।

कब ला रही हो मिलवाने , विनीता ने उत्सुकता से पूछा?

माँ, मैं 6 महीने उस के साथ रहकर देखना चाहती हूं।

यानी लिव इन रिलेशनशिप में–

क्या?? विनीता को समझ में नही आ रहा था कि वो क्या बोल रही थी।

मतलब तू शादी के बिना––– हां माँ!

पागल हो गई हो क्या? शारीरिक संबंध–––

ओफ्फो माँ! "किस जमाने में जी रही हैं आप?"

अभी के अभी निकल जा तू मेरी आँखों के आगे से

विनीता ने क्रोध से आगबबूला होते हुए कहा।

उसके जाने के बाद विनीता सर पकड़ कर बैठ गई।

थोड़ी देर में गुस्सा शांत होने पर उसे फिर समझने को उठी पर तब तक शुभा एक सूटकेस उठाकर जा चुकी थी।

प्रशांत को बताया तो वो उल्टे उसी पर गुस्सा होने लगे।

सब तुम्हारी शह देने की वजह से हुआ।

एक दिन बाद शुभा को फोन किया तो उसने कहा वो विशाल के साथ है। उसे अपने अधिकारों का भी पता है, अगर कोई बच्चा होता भी है तो भी उसे पिता की संपत्ति में पूरा कानूनी अधिकार है।

ये कौन सी शुभा थी ? विनीता रोती जा रही थी और सोचती जा रही थी।

माँ–बाप से ऐसी बातें और कितना खुलकर––, कहाँ चूक हुई थी शुभा को पालने में?

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

धीरे–धीरे 6 महीने बीत चुके थे शुभा न लौटी थी।प्रशांत भी चुप–चुप रहने लगे थे।

एक बार शुभा फिर घर लौटी थी, विशाल उसे छोड़कर जा चुका था। उसके मां बाप के घर भी एक मोटा सा ताला शुभा को मुँह चिढ़ा रहा था।

शुभा प्रेग्नेंट थी। 2 महीने विशाल को ढूंढने के बाद घर आई थी। विशाल विदेश जा चुका है कहाँ ये पता नही चला।

किस पिता से अपने बच्चे का अधिकार लेगी शुभा?

अपनी सर्विस के गर्व से भरी शुभा एक बार फिर अफसोस के साथ अपने घर में थी। अपने मम्मी पापा ही याद आये थे उसे।

काफी डांट खाने के बाद मौन शुभा की बेचारगी का अहसास माँ और पिता को कैसे न पिघलाता?

डॉ. सीमा निगम

कविता

नारी हूँ मैं

किन शब्दों में दूँ मैं परिचय अपना
कहीं गृहलक्ष्मी हूँ तो कहीं पराया धन
कहीं देवी स्वरूपा हूँ तो कहीं पैर की जूती
कहीं जीने का संबल तो कहीं दर्द का समंदर
कहीं हँसती हुई तो कहीं रोती सदा
कहीं अपनी सी तो कहीं अबूझ पहेली
कहीं तन्हा उदास तो कहीं बसंत बहार
कहीं समस्या सुलझाते तो कहीं सिहरती सहमी
कहीं दाम्पत्य सहेजती तो कहीं बिखरता दाम्पत्य
कहीं पिता पति के नाम तो कहीं जगमग व्यक्तित्व
कहीं कुशल गृहिणी हुँ तो कहीं कैरियर वुमन
कहीं अर्धांगनी हूँ तो कहीं वस्तु स्वरूप मेरा
कहीं बेसहारा हूँ तो कहीं आज की आवाज
कहीं कथा बांचती हूँ तो कहीं होंठ सीले मेरे
कहीं ममतामयी माँ तो कहीं गर्भ में खत्म मातृत्व
नियति के अकाट्य मंच पर परिचय यही मेरा
झंझावतों से लड़ती सम्हलती संघर्ष करती,
जीवन के दो राहे पर खड़ी आज की नारी हूँ मैं।

नीलम मेहता
पानीपत हरियाणा

जो होता है अच्छे के लिये होता है

बचपन से सुनते आए हैं कि घर में सब बड़े जब भी किसी के साथ कुछ बुरा भी हो जाए तब उसे दिलासा देने के लिए यह बोलते हैं कि जो होता है अच्छे के लिए होता है, तो हम सोचते कि यह सब क्या कह रहे हैं। एक तो उसके साथ इतना बुरा हुआ ऊपर से यह कह रहे हैं कि जो होता है अच्छे के लिए होता है। लेकिन आज बड़े होकर यह समझे कि हम सब के साथ जो भी अच्छा बुरा होता है उसके पीछे कोई न कोई अच्छाई छिपी है। बचपन में सुनी एक कहानी आपको सुनाती हूं।

एक किसान हर रोज अपने बगीचे से तरह तरह के फल राजा के लिए लेकर जाता था। लेकिन एक दिन इतने फल होने के बावजूद अपनी टोकरी में सिर्फ अंगूर भर कर राजा के पास ले गया। रास्ते भर सोचता रहा कि आज मैं सिर्फ अंगूर ही क्यूं लाया अमरूद,सेब, नारियल छोड़ कर। किसान ने टोकरी ले जाकर राजा के आगे रख दी और खुद एक कोने में जाकर बैठ गया। राजा आज कुछ परेशान से दिख रहे थे और गुस्से में भी। राजा एक अंगूर मुंह में डाला और एक अंगूर किसान को निशाना बनाकर उसको मारा तो किसान के मुंह से निकला शईशवर बड़े दयालु है श। इसी तरह राजा एक अंगूर खाते और एक अंगूर किसान को मारते गये और हर बार किसान यही बोलता श ईश्वर बड़े दयालु है श। अब राजा से रहा नहीं गया। उन्होंने किसान से पूछा क्यों ये हर बार बोलते हो श ईश्वर बड़े दयालु है श। मैं तो तुम्हें मार रहा हूं।तब किसान न हाथ जोड़कर कहा महाराज आज न जाने क्या हुआ कि मैं अमरूद, नारियल छोड़ कर केवल अंगूर ही आपके लिए लाया तो समझ आया कि ईश्वर ने मेरे लिए कुछ अच्छा ही सोचा था अगर कहीं मैं नारियल, अमरूद लाता और वो आप मुझे मारते तो मेरा क्या हाल होता। इसलिए जो होता है अच्छे के लिए ही होता हैं और आगे भी अच्छा ही होगा। यह बात हम उस वक्त नहीं समझते जब कुछ अच्छा या बुरा होता है बाद में समझ आता है कि वो बुरा आगे कुछ अच्छा होने के लिए होता है।

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

ज्योतिष विज्ञान

डॉ. विनय कुमार
सेवानिवृत्त हिंदी अध्यक्ष
और संकायाध्यक्ष मानविकी, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

जो विपरीत परिस्थितियों में अपने को संतुलित रखते हैं, वही महान हैं। क्योंकि, कठिन चुनौतियों को पार किए बिना व्यक्ति की महानता प्रमाणित नहीं होती है। अतः, जो निराशा और उदास होकर बैठ जाते हैं, उन्हें इस बेदर्द दुनिया से तो कुछ नहीं मिलता, साथ ही ऊपर वाले की कृपा भी उन पर नहीं रहती है। यदि जीवन में विपरीत परिस्थितियां आए तो आप को चाहिए कि पुरानी बातों को याद करते हुए वर्तमान से उनका सामंजस्य से बिठाकर अपनो को संतुलित करें, क्योंकि अगर धन हानि के कारण कोई व्यक्ति निराश है या प्यार में असफलता मिलने के कारण कोई व्यक्ति निराश है तो उसके रोने और दुख में रहने से परिस्थितियां नहीं बदलेंगी, क्योंकि यह ईश्वरीय शक्तियों के हाथ में है और ईश्वरीय शक्तियों से कोई लोहा नहीं ले सकता। साथ ही यह हमारे कई जन्मों के कर्मों और विचारों का फल होता है इसलिए प्रकृति के नियमानुसार इसमें परिवर्तन भी नियमतरू ही होते हैं।

समाचार पत्रों में मैं अक्सर देखता हूं कि प्यार में असफल होने के कारण कई लोगों ने संसार को छोड़ दिया और यह भी देखता हूं की धोखा देने वाले प्रत्यक्षतः बड़ी सुखी नजर आते हैं, किंतु ऐसा होता नहीं है। जो धोखा देते हैं, जो फरेब करते हैं, उन्हें ईश्वर दंड भी जरूर देते हैं और भयानक दंड देते हैं। अगर कोई व्यक्ति इस मुगालते में जी रहा है कि उसने किसी को भारी ठेस पहुंचाकर अपने लिए सुख का साधन जुटा लिया तो उससे बड़ा मूर्ख कोई नहीं है, क्योंकि वह दुनिया की नजरों में तो गिर ही जाता है, ईश्वर की नजरों में भी गिर जाता है। दुनिया की नजरों में कोई व्यक्ति गिर जाए तो चलता है। कुछ संभालने का मौका उससे मिलता है, किंतु ईश्वर की नजरों में गिरने के बाद तो कोई रास्ता ही नहीं बचता है। इसलिए, हर काम को करने के पहले ईश्वर के बारे में जरूर सोचना चाहिए कि वह हमारे इस कार्य से क्या सोच रहे होंगे और हमारे लिए किस तरह के दंड का विधान कर रहे होंगे। हमेशा ईश्वर का आशीर्वाद लीजिए, अपने अच्छे कर्मों और विचारों के द्वारा, यही आपके जीवन की सफलता है परिस्थितियां यदि बहुत विपरीत हो तो हिंदी की गूंज के माध्यम से आप मुझसे संपर्क कर सकते हैं और यदि मैं आपके सामने दो घंटे बैठ गया आपसे बातचीत कर ली और अपने अनुसार कुछ ज्योतिष उपाय किए तो निरूसंदेह आपको उसका बहुत फायदा होगा। हिंदी की गूंज का उद्देश्य साहित्य साधना के अतिरिक्त समाज सेवा भी है और डॉ रमा शर्मा इस उद्देश्य को लेकर आपके बीच आ गई हैं तो हमसे जुड़े जो भी लोग हैं, उनके जीवन में सुख शांति और समृद्धि की कामना हमारे भीतर है और हम सदा आपके साथ खड़े हैं, एक परिवार के सदस्य की तरह।

फलक

हिंदी की गूँज

हिंदी की गूँज बड़ी प्यारी, जैसे सवेरे की रोशनी।
बातों में बांधे दिलों को, जैसे खुशबू बगिया की।

खेले गली में बच्चे, जब हिंदी में गाते गीत,
हंसी खुशी की भाषा, लगे सबको मीठ।

किताबों में, कहानियों में, हर जगह हिंदी का साथ,
जैसे धूप में छाया, जैसे सर्दी में आग की बात।

हिंदी हमारी भाषा, हिंदी है हमारी माँ,
सिखाती हमको प्यार, बांटे खुशियाँ हर जहाँ।

स्कूल हो या घर पे, हिंदी में ही बातें हों,
दोस्ती और प्यार में, हिंदी के ही गीत हों।

सोचो अगर हिंदी ना होती, कैसे हम जुड़ते,
भावों की ये डोर, बिना हिंदी के कैसे बुनते?

इसलिए हम सब कहें, हिंदी में ही प्यार की बातें,
हिंदी की गूँज से ही, बनते जीवन के सुनहरे नाते।

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

कहानी

भूल-भुलैया

सुधा ओम ढिंगरा, शिकागो

वे दोनों बहुत देर से उससे थोड़ी दूर उसके पीछे भाग रहे थे। उसके दिल की धड़कन तेज हो गई। जॉगिंग में परेशानी हो गई। वह रुक गई। वे दोनों भी उसके साथ रुक गए। अब उसका शक पुख्ता हो गया कि वे उसका पीछा कर रहे हैं। इस शहर के भारतीय समुदाय में फैली अफवाहें उसकी सोच पर हावी हो गईं। वाट्सएप ग्रुपों और समुदाय के न्यूज लेटर के समाचार उसके दिमाग में घूम गए। पार्क में अकेले जॉगिंग नहीं करनी चाहिए, एक दो मिल कर जॉगिंग या सैर करें। साऊथ एशियंज पर अटैक हो रहे हैं। अकेली महिला देकर बलात्कार भी किया जा रहा है। वह अकेली है, पर पीछा करने वाले पुरुष और स्त्री हैं। सिर्फ पुरुष नहीं इसलिए रेप का डर तो उसके दिमाग से निकल गया। दूसरा समाचार उसके मस्तिष्क में कौंध गया। वह तेजी से पीछे की ओर मुड़ी और जिस रास्ते से आई थी उसी रास्ते पर पीछे की ओर जॉगिंग की बजाय दौड़ने लगी। पीछा करने वाले आदमी और औरत को समझने का समय ही नहीं मिला। वे कुछ क्षण वहीं खड़े रहे। वह जानती है, आगे के रास्ते पर शायद कम लोग हों पर पीछे के रास्ते पर, जिस पर से वह जॉगिंग करके आगे आई है, वहाँ लोग बैंचों पर बैठे धूप सेंक रहे थे। कुछ लोग सैर कर रहे थे और कुछ जॉगिंग। वह रास्ता सुरक्षित है।

वापस जाते हुए उसे कुछ लोग मिले। जॉगिंग करते हुए आगे की ओर बढ़ते हुए। पर उसके मस्तिष्क में दूसरा समाचार बेतहाशा घूम रहा है। समाचार जो भारतीय समुदाय में चर्चा का विषय है कि सफेद रंग का ट्रक शॉपिंग मॉल और पार्कों के कार पार्क करने वाले स्थानों पर दिखाई देता है और साऊथ एशियंज को किडनैप करके उसमें ले जाया जाता है। उसके पीछे के दरवाजे पर बाहर से ताला लगा होता है ताकि कोई दरवाजा खोल कर भाग न सके। जो भी साऊथ एशियन अकेला कार खोल कर बैठने लगता है या पार्क में अकेला होता है उसे टार्गेट किया जाता है। अपहरण किये स्त्री पुरुष के ऑर्गेन निकाल कर उनकी लाशें दूसरे प्रदेशों में मिलती हैं। यह शक उसके भीतर जोर पकड़ गया। उसने एक बड़ा सफेद ट्रक आज पार्क में घूमता देखा था। पर उसने उस तरफ ध्यान नहीं दिया। पीछा करने वाले स्त्री –पुरुष उसके पीछे उसे अपहरण करने के लिए दौड़ रहे थे। उसे जल्दी–जल्दी घर लौट जाना चाहिए।

इस सोच ने उसे बेहद बेचैन कर दिया। उसकी साँस की गति अत्यधिक तीव्र हो गई। एक तरह से बेकाबू हो गई। उसे लगा उसके भीतर कुछ फट जाएगा। अपनी साँसों को काबू में करने के लिए उसे रुकना पड़ा। जिस जगह पर वह रुकी वहाँ काफी लोग थे। वह स्थान उसे सुरक्षित लगा। उसने पीछे पलट कर देखा, पीछा करने वाले आदमी औरत उसे दिखाई नहीं दिए। वह वहीं एक बेंच पर बैठ गई, जहाँ से उसे अपनी कार भी नजर आ रही है।

उसके शहर में सर्दी–गर्मी अधिक नहीं होतीं। ठंड का मौसम अभी शुरू ही हुआ है। बेंच पर हल्की–हल्की धूप आ रही है। उसकी आँखें बंद होनी शुरू हो गईं। इस मौसम में उसे गुनगुनी धूप बहुत सुहाती है।

भीतर की उथल–पुथल बंद हुईं आँखों की खुमारी में भी चल रही है। वह तो सोशल मिडिया और समुदाय में फैली किसी भी अफवाह पर विश्वास नहीं करती। हमेशा उनकी तह तक जाना चाहती है। बिना सच जाने वह किसी बात को नहीं मानती। आज उसे क्या हुआ है? अफवाहें उस पर इस कदर हावी हो रही हैं कि वह अपना मानसिक और शारीरिक संतुलन खो रही है।

इस विचार के साथ झटके से उसकी आँख खुली। उसने उस आदमी और औरत को अपनी तरफ आते देखा जो उसका पीछा कर रहे थे। वह घबरा तो गई पर उसने उसी स्थिति में अपनी कार को देखा। उसने देखा पार्किंग लॉट में उसकी पार्क की हुई कार के साथ वाली कार में एक पति –पत्नी अपने तीन बच्चों के साथ कार को खोल रहे हैं । वह वहाँ से फुर्ती से उठ कर अपनी कार की ओर भागी और उसकी कार के साथ खड़ी कार वाले पति –पत्नी अभी कार में बच्चों को बैठाकर स्वयं बैठने ही वाले थे कि उसने अपनी कार का दरवाजा खोल लिया। शीघ्रता से कार में बैठकर कार को स्टार्ट कर पार्किंग लॉट से निकल गई। पार्किंग लॉट से निकल कर उसने अपनी सीट बेल्ट बाँधी।

पहली बार घबराहट में भी उसके विवेक ने उसका साथ नहीं छोड़ा। अक्सर परेशानी में उसकी सोचने–समझने की शक्ति काम नहीं करती। उसने घर जाने की बजाय कार को पार्क के मेन गेट के कार्नर पर जा कर रोक दियाय जहाँ किसी को उतारने या लेने के लिए कार रोकी जाती है। पार्क

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

का एक ही गेट है। आने और जाने वालों के लिए। यह पार्क एक लंबी लेक के साथ–साथ बना हुआ है, जिसे क्रैब ट्री लेक पार्क कहा जाता है। उसने उसी समय पुलिस को फोन किया कि उसका पीछा किया जा रहा है और उसे डर लग रहा है। उसकी कार पार्क के गेट की साइड पर खड़ी सुरभि ने व्हाट्सएप पर कई भारतीय ग्रुपों से फॉरवर्ड की गई खबर उन्हें दिखा दी।

जिसे पढ़ कर विलियम हँस पड़ा– ''मैडम, यह फोटो कैलिफोर्निया की है, जो वहाँ की पुलिस ने सर्कुलेट की थी अपनी स्टेट में। वहाँ यह ट्रक सबडिवीजनस में घूमता था और चोरों का एक गिरोह घरों में चोरी कर इस ट्रक में भागता था। वह गिरोह पकड़ा गया है।''

''हमें कोई सूचना नहीं है कि कहीं कोई एशियन किडनैप हुआ है और उसके ऑर्गेन निकाल लिए गए हैं और उसकी लाश किसी दूसरे प्रदेश में मिली है। यह बहुत बड़ी बात है। अगर यह खबर सही होती तो सबसे पहले हम लोकल टीवी पर इसके बारे में जनता को जानकारी देते। जो अक्सर हम करते हैं। चेतावनी और सतर्कता वहाँ बताई जाती। क्या आपने कहीं ऐसे समाचार को देखा?'' यह सुन सुरभि सोच में पड़ गई।

पुलिस ऑफिसर आगे बोला– ''आपको इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि पुलिस की सूचनाएँ देने के तरीके बड़े स्पष्ट होते हैं। वे बेचौनी या डर पैदा नहीं करतीं बल्कि सतर्कता अभियान के अंतर्गत आती हैं।''

''यहीं क्रैब ट्री पार्क पर जोबलात्कार करने की कोशिश की गई, वह तो झूठ नहीं।" उसने ऑफिसर विलियम की ओर देखते हुए पूछा।

''यह भी आपको व्हाट्सएप गुरु ने बताया होगा।'' दोनों ऑफिसर मुस्करा पड़े।

''मिसेज पाण्डेय घटना यूँ हुई कि एक एशियन महिला सैर करते हुए बीच रास्ते में रुक कर अपने शू को बाँध ाने लगी। उसने यह भी नहीं सोचा कि इस तरह बीच रास्ते में बैठकर शू बाँधना सैर, जॉगिंग और तेज भागने वालों के लिए कितनी असुविधा पैदा कर सकता है। यह सैर,जॉगिंग और तेज भागने वालों के लिए जो नियम बने हैं, उनका उल्लंघन है। हमेशा साइड पर जाकर शू बाँधने होते हैं। कोई भी भागने वाला टकरा सकता है। वही हुआ। एक तेज दौड़ने वाला उससे टकरा गया और वह महिला गिर गई और दौड़ने वाला वह व्यक्ति उस महिला पर गिर गया। महिला ने शोर मचा दिया। हम जब पहुँचे तो आस–पास वालों ने सारी सच्चाई बताई। नियमों का पालन न करने पर महिला को फाइन देना पड़ता पर हमने इस शर्त पर उसे चेतावनी देकर छोड़ दिया था कि भारतीय समुदाय में गलतफहमियाँ या अराजकता वह इस घटना को लेकर नहीं फैलाएगी। क्योंकि लोग अक्सर अपनी गलती नहीं बताते, सच नहीं बोलते और दोष दूसरों पर मढ़ देते हैं। अब हमें दोनों ही घटनाओं की इन्क्वारी करनी पड़ेगी।'' दोनों ऑफिसर गंभीर हो गए।

तभी सुरभि को वह सफेद बड़ी वैन आती दिखाई दी, जो ट्रक की तरह लगती है। उसका पीछा करने वाले उसमें बैठे हैं।

उसने उसे गेट की ओर आते देख कर ऑफिसर विलियम को कहा– ''सर, यही वे दोनों हैं जो मेरा पीछा कर रहे थे।''

विलियम और जैक ने उस वैन को रोका। स्त्री– पुरुष दोनों कार से बाहर आ गए और बिना कुछ कहे उन्होंने अपने आई डी कार्ड पुलिस की ओर बढ़ा दिए। ऑफिसर विलियम ने उन कार्डों को देख कर सुरभि को कहा– ''मैडम ये उस ग्रुप के हैं जो पार्कों और सार्वजानिक स्थलों पर अकेली महिलाओं की सहायता करते हैं। इनके वॉलंटियरज का पुलिस के पास रिकॉर्ड है। इस वॉलेंटियर संस्था को पुलिस की स्वीकृति प्राप्त हैय क्योंकि यह पुलिस की सहायता करते हैं। हर जगह तो पुलिस नहीं पहुँच सकती। महिलाएँ जान भी नहीं पाती कि ये उन्हें प्रोटेक्ट कर रहे हैं।''

''क्या हुआ ऑफिसर ?'' उस महिला ने पूछा।

''मैडम को यह लगा कि आप इनका पीछा कर रहे हैं इनको किडनैप करने के लिए।'' विलियम ने सुरभि की ओर इशारा करके कहा।

''क्या ?'' महिला और पुरुष दोनों हैरान हो गए।

''ऑफिसर, इनको भी बताना चाहिए कि ये पीछा कर रहे हैं, प्रोटेक्ट करने के लिए।'' सुरभि ने रोष से कहा।

''हम और हमारे वॉलेंटियर तो बहुत दिनों से आपका ध यान रख रहे हैं, आप अकेली का ही नहीं इस पार्क में और भी कई अकेली घूमती महिलाओं और लड़कियों का भी। यह लीजिए हमारा कार्ड। इस पर लिखी वेबसाइट पर जाकर आप इसके बारे में जान सकती हैं। इस की संस्थापक स्वयं एक 'रेप विक्टम' हैं। न्यूयॉर्क के एक ऐसे ही पार्क में अकेले सैर करते हुए उनका बलात्कार हुआ था। उसके बाद उन्होंने इस संस्था की स्थापना की। अमेरिका की कई स्टेट्स में इनके वालेंटियर पुलिस के साथ मिलकर काम करते हैं।'' उस महिला ने सुरभि को अपना कार्ड देते हुए कहा।

''सुरभि पाण्डये, व्हाट्सएप अफवाहें और आपके समुदाय की बातों ने आपके दिमाग में डर और नेगेटिविटी भर दी। आपने कुछ भी जानने की कोशिश नहीं की। इससे संदेह इतने बढ़ गए कि किसी को भी लेकर शक पैदा होना स्वाभाविक होता है। बी केयर फुल एबाउट दीज रयूमर्ज। दीज विल हार्म द सोसाइटी। पीपल स्प्रेडिंग दीज रयूमर्ज विल बी पनिश्ड।'' (इस तरह की अफवाहों के प्रति सतर्क रहें। ये समुदाय को

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

नुक्सान पहूँचा सकती हैं। जो ये अफवाहें फैला रहे हैं, उन्हें सजा मिलेगी।) ऑफिसर विलियम ने बात समाप्त कर सुरभि से हाथ मिलाया और सुरभि सबको सॉरी कहकर अपनी कार में आ बैठी।

उससे यह क्या हो गया? वह तो खुद को विवेकशील समझती है। क्राउड साइकोलॉजी (भीड़ का मनोविज्ञान) पुस्तक पढ़ते हुए उसने पाया था कि भीड़ और अफवाहों की मानसिकता एक जैसी होती है, बड़े–बड़े बुद्धिजीवी और विवेकशील इसके बहाव में बह जाते हैं। विश्वास न करते हुए भी वह विश्वास कर गई। अफवाहों के बहाव में बह गई।

अपने को कोसते हुए सबसे पहले उसने सब व्हाट्सएप ग्रुपों को लिखा–श्शमेरी पुलिस ऑफिसर्ज से बात हुई है। सब खबरें झूठी हैं। ये अफवाहें हैं इन्हें आगे मत फैलाओ। पुलिस इनकी तह तक जाने वाली है।"

कार स्टार्ट करते हुए वह सोचने लगी, अफवाहें तो जंगली घास की तरह हैं। कहाँ से जन्म लेती हैं और कहाँ–कहाँ फैल जाती हैं, पता ही नहीं चलता। अफवाहों ने कितने रंग बदले हैं कि ऑफिसर से बात करते समय सच और झूठ भी डगमगा गए। अफवाहें तो ऐसी भूल–भुलैया है, जिसमें व्यक्ति अगर उलझ जाए तो रास्ता ही भटक जाता है, जैसे वह भटक गई थी। थैंक गॉड ! पुलिस ऑफिसर्ज से बात करके सही दिशा मिली। कई दिनों बाद उसने अपने भीतर शांति महसूस की जो वह खो चुकी थी.

निवान यादव
कक्षा–सातवीं, आयु–12 वर्ष

यह मन पंछी–सा

दिशाहीन यह मन पंछी–सा
आशा की टहनी पर जब बैठा।

जग मकडी के जैसे आकर
पंखो पर इक जाल बुन गया।

सूरज की सतरंगी किरणें
खघ्वाब दिखघ कर चली गई।

साँझ ढ़ली, सूरज डूबा
मै जग के हाथों हार गया।

आलेख

पॉपी डे उर्फ अपरूमा बसु डे, लंदन

दालपूरी पराई हो गई

हमारे बिहार व भोजपुर के सीधी–सादी दालपूरी की एक हैरतअंगेज कथा हो सकती है इसका पता ही नही चलता अगर मुझे लन्दन के कालेज में कैरेबियन कूईजिन के (Caribbean Cuisine) व्यंजन सिखाने का अवसर मिलता।

कैरेबियन व्यंजनों में दालपूरी न केवल कैरेबियन देश गायाना, त्रिनिदाद, टोबागो, जमाईका और एशियाई मारिशस की ही रेस्टोरेंट व स्ट्रीट फूड में लोकप्रिय व्यंजनों की सूची में है बल्कि अमेरिका, कनाडा और लन्दन के कैरेबियन रेस्टोरेंट के मेनू की भी चहेती है। भारतीय दालपूरी को कैरेबियन पाकशैली (Caribbean Cuisine) का एक लोकप्रिय व्यंजन के रूप में जाना जाता है। कैरेबियन देशों में और मॉरीशस में दालपूरी का आगमन भारत के बिहार व भोजपुर के गिरमिटिया या बंधुआ श्रमिकों द्वारा हुआ था। ये श्रमिक कुली कहलाते थे और दास प्रथा के समापन पर इन को गन्ने व कपास के खेतों में काम के लिए लाये गये थे। कनाडा के टोरेन्टो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर रिचर्ड फंग ने श्क्संचनतप क्पेंचवतंश नामक एक फिल्म 2012 में अंग्रेजी व भोजपुरी भाषा में बनाई। रिचर्ड फंग त्रिनिदाद में जन्मे चीन मूल के गिरमिटिया कुली परिवार के हैं। उन्होनें भारत मूल की दालपूरी की जन्मभूमि बिहार व भोजपुर जाकर इसके बारे में पूरी जानकारी ली ताकि दालपूरी की असलियत पर फिल्म का निर्माण कर सके। भारत आकर दालपूरी की जन्मभूमि बिहार और भोजपुर के विभिन्न रेस्टोरेंटों और खाने–पीने की दुकानों पर जाकर प्रोफेसर रिचर्ड फंग बहुत निराश होना पड़ा क्योंकि दालपूरी कहीं नही मिली। बाद में उन्हें पता चला कि दालपूरी अपनी जन्मभूमि में आज भी जिन्दा है पर घरों के रसोईघर में ।

फंग को भारतीय दालपूरी का स्वाद भी काफी अलग लगा। यहाँ की दालपूरी मसालेदार और आटे की बनी हुई थी जबकि कैरेबियन दालपूरी हल्के मसाले की व मैदे से बनती है क्योंकि कुलियों को राशन में अमेरिका और कनाडा का मैदा और कम मसाला दिया जाता था। फिर भी कुलियों के घरों में बने हल्के मसालों की मैदे की दालपुरी के स्वाद का चस्का अन्य देशों के कुलियों को ऐसा लगा कि सीधी–सादी दालपूरी रसोईघर की दहलीज लाँघ कर कैरेबियन व मारिशस में बाजारू होकर पराई हो गई। दालपूरी कैरेबियन व्यंजन बन के भले ही पराई हो गई हो लेकिन इसका नाम नही बदला है।

"मेरा नाम ही मेरी पहचान है" और मेरा मन मयूर खुशी से नाच कर कहता है, दालपूरी हमारी है।

आलेख

डॉ. अजय शुक्ला
(व्यवहार वैज्ञानिक)

**"सिया राम मय सब जग जानी :
करहु प्रणाम जोरी जुग पानी"**

डॉ. अजय शुक्ला (व्यवहार वैज्ञानिक)

"भारतीयता की पृष्ठभूमि में भारतीय आत्मा द्वारा– "सर्व धर्म समभाव..." के उद्‌घोष को विराटता के सानिध्य में– "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय..." की संस्कृति के माध्यम से संपूर्ण मानवता को सुखी बनाने के संदर्भित प्रसंग में– "सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया..." के सिद्धांत को प्रतिपादित करते हुए संपूर्ण विश्व को ही– "वसुधैव कुटुंबकम..." की गरिमा के विहंगम स्वरूप में स्वीकार कर लेता है जिसमें– विश्व गुरु भारत, द्वारा धर्म ग्रंथो से आलोकित– "सिया राम मय सब जग जानी : करहु प्रणाम जोरी जुग पानी..." का महानतम संदेश समाहित रहता है। शुभ भावना एवं शुभ कामना के आत्मगत स्वरूप द्वारा सर्वगुण सम्पन्नता की उच्चता का निर्माण, अंतःकरण में आत्महित से आरंभ होकर सर्व मानव आत्माओं के उन्नयन और उत्थान हेतु निरंतर गतिशील रहता है। आत्मगत समभाव की सुखद परिणिति, मानव जीवन शैली की गतिशीलता के रहस्य को उजागर करती है जिसमें गुणात्मक परिवर्तन एवं परिवर्धन हेतु– 'राजयोग द्वारा आध्यात्मिक पुरुषार्थ की उपयोगिता...' को संपूर्ण , समादर भाव से आत्मिक परिष्कार हेतु आत्मसात किया जाना आवश्यक होता है । आत्म ज्ञान की बोधगम्यता में 'सत्य–दर्शन' की स्वाभाविकता, आत्मिक सम्पन्नता का बहुमुखी स्वरूप होता है जिसमें– 'आत्मगत स्वभाव की सहजता एवं सरलता...' सामाजिक समरसता के माध्यम से निरंतर प्रवाहित होती रहती है।"

आत्मज्ञान अभ्युदय की नैसर्गिक अनुभूति : दिव्य गुणों से एवं शक्तियों से सुसज्जित मानव आत्माएँ सदा आत्मज्ञान के अभ्युदय की नैसर्गिक अनुभूति से गतिशील रहती हैं और अर्न्तमुखी अवस्था के लिए पुरुषार्थ करते हुए राजयोग का अनुकरण करके मौन स्वरूप में परिवर्तित हो जाती हैं। जीवन में आत्मज्ञान के प्रस्फुटित स्वरुप से चेतना की चेतनता को संपूर्ण संचेतना की व्यापकता के साथ अनुभव किया जा सकता है जिसमें– निमित्त, अकर्ता रूप का ज्ञायक भाव ही उपस्थित रहता है जो आत्मानुभूति की स्वतंत्रता को प्रतिपादित करता है। मनुष्य जन्म की सौभाग्यशाली स्थिति को सामर्थ्यवान अवस्था में परिणित करने हेतु आत्मबल का सहारा लिया जाता है जो आत्मिक शक्तियों की उपयोगिता को – मन, वचन एवं कर्म के सात्विक स्वरूप से आत्मसात करने के प्रबल पुरुषार्थ में सुनिश्चित किया जाता है। आत्मज्ञान के अभ्युदय होने पर आत्मिक बोधगम्यता का परिवेश अभिवृद्धि को प्राप्त होते हुए, आत्मानुभूति के वृहद् परिदृश्य की ओर गतिशील होता है जहां से अतिइन्द्रिय सुख एवं शाँति की गहन अनुभूति, जीवात्मा द्वारा किया जाना सहज हो जाता है। जीवात्मा जब स्वयं को स्वानुभूति के रहस्यमयी स्वरूप में प्राप्त कर लेती है तब उसकी धन्यता का पक्ष आत्मानंद के संदृश्य परिलक्षित होने लगता है और वह आत्मानुभूति से परमात्मानुभूति की ओर अग्रसर हो जाती है ।

सत्य दर्शन का आध्यात्मिक दृष्टिकोण : जीवन के व्यापक परिप्रेक्ष्य में – " मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः, आचार्य देवो भवः, सत्यं वद, धर्म चर..." का अनुष्ठान करते हुए जब मानव जाति गतिशीलता की ओर अभिमुखित होती है तब – 'सत्य दर्शन' का अलौकिक स्वरूप मानवीय संवेदनशीलता के रूप में प्रस्फुटित होता है। आत्मगत स्थिति की वास्तविकता को उसके मूलभूत अस्तित्व गुण– "अजर, अमर, अविनाशी, अचल, अडोल एवं स्थितप्रज्ञ..." के नैसर्गिक रूप में ही स्वीकारना– 'सत्य दर्शन' के प्रति श्रध्दावान होने की परिणिति है जिसमें आत्मा के स्वमान, स्वरुप एवं स्वभाव के अनुसार जीवन के ब्यावहारिक पक्ष को पूर्णतरू आत्मसात करने की जीवंतता सन्निहित रहती है। सत्य दर्शन का आध्यात्मिक दृष्टिकोण सदा ही लौकिक, अलौकिक एवं पारलौकिक स्वरुप के मध्य निर्धारित अन्तराल को मान्यता प्रदान करता है और स्वाध्याय में प्रमुख एवं गौण के अंतर्गत 'भेद–विज्ञान' का अनुपालन करते हुए आत्म तत्व का विश्लेष्णात्मक अध्ययन– 'आत्म कल्याण' के संदर्भ तथा प्रसंग में किया जाता है। आत्मिक भाव, भासना के सानिध्य में निज, निधि–निजानंद के मंगल स्वरुप की अलौकिक चेतना–सत्यम, शिवम–सुन्दरम की पारलौकिक विराटता में सत, चित्त, आनंद अर्थात– सच्चिदानंद की अनुभूति में सम्बद्ध हो जाती है। 'सत्य ही ईश्वर है, ईश्वर ही सत्य है' का आध्यात्मिक स्वरूप मानव जीवन में सदा– 'आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः' अर्थात् हे प्रभु–मेरे समीप चहुँ

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

दिशाओं से पवित्र विचारों के आगमन का आह्वान करते हुए– पुण्यात्मा, महात्मा, धर्मात्मा एवं देवात्मा, स्वरूप में स्थापित होने का पुरुषार्थ अनवरत गतिशील होता रहे।

आत्मिक संपन्नता के व्यावहारिक परिदृश्य : धर्म एवं कर्म के विधिवत निर्वहन से – 'उपराम स्थिति' के निर्माण की पूर्णता चेतना का परिष्कृत स्वरूप है जिसमें जीवात्मा, कर्मबन्धन से मुक्त होकर आत्म वैभव की सत्यता का सहज अनुभव करती है। जीवन में कर्मयोग संपादित करते हुए स्वयं को आध्यात्मिक पुरुषार्थ की शक्ति से सदा, कर्म के संबंध से सुरक्षित रखने की उच्चतम प्राप्ति आत्मा के कर्मातीत अवस्था का सुखद परिणाम है जो आत्मिक सम्पन्नता के स्थायित्व को प्रतिपादित करता है। अव्यक्त स्वरुप की आत्मिक उपलब्धि जीवन की सर्वोच्चता का जीवंत प्रमाण है जो राजयोग से मौन की ओर गतिशीलता को सुनिश्चित करके– 'आत्मा की सम्पूर्ण पवित्रता' के व्यावहारिक परिदृश्य को स्थापित कर देता है। सर्वगुण सम्पन्नता की व्यावहारिकता को आत्मानुभूति के माध्यम से सदा आत्महित की संलग्नता के सानिध्य में– 'आत्मगत चेतना की चेतनता...' को बनाए रखना, जीवन के परिष्कृत स्वरूप हेतु किया जाने वाला– 'आत्म केन्द्रित' स्वाध्याय होता है। जीवात्मा द्वारा प्रकृति के– 'पंच तत्वों को पावन' बनाने की सेवा का – उत्तरदायित्व, आत्मिक सम्पन्नता के व्यावहारिक स्वरूप को– 'आभारयुक्त उदारता के संवेदनशील दृष्टिकोण...' से पूर्णता प्रदान करने में मददगार सिद्ध होता है।

संपूर्ण समर्पण द्वारा सर्वगुण सम्पन्नता : जगत में आराध्य के प्रति 'भक्ति–भाव से सम्पूर्ण–समर्पण' के व्यावहारिक उदाहरण दुर्लभ स्वरूप में विद्यमान है जिसका अध्ययन एवं विश्लेषण करने से भक्तिकालीन सभ्यता और संस्कृति के उच्चतम आयाम 'स्वान्तः सुखाय रघुनाथ गाथा...' के व्यापक परिदृश्य में प्रतिबिम्बित होते रहते हैं। ज्ञान की बोधगम्यता से जुड़ी यथार्थ आत्मानुभूति जब– 'श्रद्धावान लभते ज्ञानम्..' के संदर्भ एवं प्रसंग की विशिष्ट भूमिका के सानिध्य में संपूर्ण समर्पण द्वारा प्रस्फुटित होती है तब– 'आत्मा स्वयं का ही मित्र..' बनकर आत्मिक वैभव सम्पन्नता की उच्चता प्राप्त करती है। शुभ भावना एवं शुभ कामना के आत्मगत स्वरूप द्वारा सर्वगुण सम्पन्नता की उच्चता का निर्माण, अंतःकरण में आत्महित से आरंभ होकर सर्व मानव आत्माओं के उन्नयन और उत्थान हेतु निरंतर गतिशील रहता है।

आत्मज्ञान युक्त भक्ति का पवित्रम स्वरूप : आत्मिक समृद्धि की मंगलकारी अवस्था सदा आत्मा के गुणों एवं शक्तियों से भरपूर रहती है जिसमें लोक कल्याणकारी भाव जगत की उपलब्धिपूर्ण गरिमामयी स्वरूप की विराटता का आभामंडल स्वमेव ही चहुँ दिशाओं में व्याप्त हो जाता है। परमात्म सत्ता के समक्ष सम्पूर्ण समर्पण, आत्मज्ञान युक्त भक्ति का पवित्रतम स्वरूप है जो आत्मिक परिदृश्य के सम्पूर्ण परिवेश को 'सर्वगुण–सम्पन्नता' की नैसर्गिक उच्चता में रूपांतरित कर देता है। जीवन में 'धर्म–कर्म' के सामंजस्य से उपजने वाले 'सुखद–संयोग' को जीवात्मा द्वारा आत्मसात् करते हुए जब 'आध्यात्म–पुरुषार्थ' के संदर्भित, गरिमामई स्वरूप को– "बड़े भाग्य मानुष तन पावा..." की व्याख्या के सानिध्य में व्यावहारिकता के साथ चरितार्थ कर देता है तब आत्मज्ञान युक्त भक्ति का पवित्रम स्वरूप आत्महितकारी स्वरूप में स्वयं सिद्ध हो जाता है।

आत्मगत समभाव में सामाजिक समरसता : समाज में शांति, अहिंसा एवं पवित्रता की स्थापना में – धर्म, अध्यात्म और राजयोग के अवदान को वैश्विक दृष्टिकोण से वृहद स्तर पर स्वीकारोक्ति प्राप्त हुई है जिसके परिणाम स्वरूप–आत्मानुभूति के द्वारा "अहिंसक जीवन शैली की नैसर्गिक व्यावहारिकता..." आत्मगत समभाव के रूप में – 'मानव समाज की समरसता' के माध्यम से प्रकट हो सकी है । जीवन की शुचिता का नैतिक धर्म , आत्मगत चेतना के प्रति संवेदनशील दृष्टिगत मनोभाव अपनाते हुए सदैव श्रेष्ठ मानव व्यवहार के योगदान की उज्जवल पृष्ठभूमि को संपूर्ण मनोयोग से रेखांकित करता है ताकि नैतिकता के उच्चतम मानदंड की गरिमा को बनाए रखने में मदद प्राप्त हो जाए। आत्मगत समभाव की सुखद परिणिति, मानव जीवन शैली की गतिशीलता के रहस्य को उजागर करती है जिसमें गुणात्मक परिवर्तन एवं परिवर्धन हेतु– "राजयोग द्वारा आध्यात्मिक पुरुषार्थ की उपयोगिता ... " को संपूर्ण , समादर भाव से आत्मिक परिष्कार हेतु आत्मसात किया जाना आवश्यक होता है।

जीवात्मा के सर्वांगीण विकास की सुनिश्चितता : चेतना का परिष्कृत स्वरुप जब सत्कर्म की गतिशील प्रवृति के अनुकरण एवं अनुसरण की सत्यता को जीवात्मा के सर्वागीण विकास की सुनिश्चितता के संदर्भ एवं प्रसंग में सम्प्रेषित करता है तब सामाजिक समरसता की प्रमाणिकता सहज ही स्थापित हो जाती है। आत्म ज्ञान की बोधगम्यता में– 'सत्य दर्शन' की स्वाभाविकता आत्मिक सम्पन्नता का बहुमुखी स्वरुप होता है जिसमें– "आत्मगत स्वभाव की सहजता एवं सरलता ..." सामाजिक समरसता के माध्यम से निरंतर प्रवाहित होती रहती है। भारतीयता की पृष्ठभूमि में भारतीय आत्मा द्वारा– "सर्व धर्म समभाव..." के उद्‌घोष को विराटता के सानिध्य में– "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय..." की संस्कृति के माध्यम से संपूर्ण मानवता को सुखी बनाने के संदर्भित प्रसंग में– "सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया..." के सिद्धांत को प्रतिपादित करते हुए संपूर्ण विश्व को ही– "वसुधैव कुटुंबकम..." की गरिमा के विहंगम स्वरूप में स्वीकार कर लेता है जिसमें – विश्व गुरु भारत, द्वारा धर्म ग्रंथो से आलोकित– "सिया राम मय सब जग जानी : करहु प्रणाम जोरी जुग पानी..." का महानतम संदेश समाहित रहता है।

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

आलेख

हरीश नवल
नई दिल्ली

हमारा स्वराज्य

अपना राज सन् सैंतालीस की आधी रात से हुआ और हम गुलामों की पंक्ति से बाहर हो गए। गुलाम पृथक होकर कहाँ किस ओर जाए, यह समस्या देश के सामने भी की और कर्णधारों के सामने की। उन्हें यह निदान समझ आया कि वे मालिकों की पंक्ति में खड़े हो जाएं, सो उन्होंने महात्मा तथा असंख्य नामी, अनामी क्रांतिवीरों के सौजन्य से टूटी बेडियाँ को फैंका और अपना लक्ष्य मिल्कियत कर लिए जिसके लिए वे जिये अथवा नहीं पर तब मरे जा रहे थे।

अब लगा सब हमारा है। नवसंस्कार प्रदान किए गये कि स्वराज्य में सब कुछ 'स्व' यानि अपना ही है। जब सब कुछ अपना सा लगता है तब वास्तव में कुछ भी अपना नहीं कहलाता। हमने कर्णधारों से एकलव्य की भाँति दीक्षा ली कि 'स्वराज्य' हम सब की कॉमन जायदाद है। कॉमन जो हो जाए वह किसी का नहीं होता – वह बाद में जान पाए। दस फ्लैटों के गलियारे की बत्ती अक्सर गुल रहती है क्योंकि उसकी जिम्मेदारी किसी एक ही नहीं होती।

स्वराज्य क्या मिला, हमें लगा कि हम इंग्लैंड के राजा बना दिए गए हैं। हमारी यह इकाई स्वयं को राजा ही मानती रही। जरा सोचिये उस इंग्लैंड की क्या दशा होगी, जिसके कई करोड़ राजा होंगे। राजाओं ने क्या किया? कहा गया था, फ्हम लाए हैं तूफान से कश्ती निकाल के, इस देश को रखना मेरे बच्चे संभाल के।य् परंतु बच्चे तो बन बैठे राजा, कहाँ कहाँ क्या क्या संभाला, उन्होंने तो छीना गेहूं बोने वाले से निवाला, व्यापार के नाम पर घोंटाला, मुद्रा आर्जित करने के नम पर हवाला और धीरे–धीरे दिवाला।

जिस स्वराज्य को पाने के लिए हजारों देशभक्तों ने बलिदान किए, हमने उसे क्या किया? अरे बाजार उसे मानो नीलाम कर दिया। जिस देश को आजाद करवाने के लिए सैकड़ों वर्षों से निरंतर बलिदानी गाथाएँ सुनने को मिल रही थी – क्या सच्ची आजादी पा सका? कर्णधारों ने लोकतांत्रिक प्रणाली की धज्जियाँ बरसों बरस लगातार उड़ाई।

रजवाड़े मिटा दिए, प्रिवी पर्स बंद कर दिए गए नवकर्णधारों के रजवाड़े, फूलने लगे, फलों से लदने लगे और शीघ्र ही 'खादी', 'टोपी' और 'नेता' के अर्थ बदल गए– सामान्य से विशेष हो गए। राजनीति भी ऐसी बदली कि उसमें की काली नीति काले नोटों को सफेद वोटों में तब्दील करने के लिए शहीद हो गई। वोटों और नोटों की चोटों के बीच निरीह खड़ा 'वह' जो स्वराज्य मिलने पर गर्व से फूल उठा था, लाल प्राचीर के सामने खड़ा होकर 'जयहिंद' के नारे लगाता रहा, अपनी अंटी सौंपता रहा, उस 'आम आदमी' के पल्ले केवल 'नारे' ही पड़े।

कैसा था मिलने वाला स्वराज्य जहाँ खेने वाला ही नाव डुबोने में तुल गया, जहाँ घर को आग घर के चिरागों से ही लगी। शताब्दियों से अर्जित संस्कृति धू–धू करने लगी। नव कुबेर संस्कृति पनपने लगी और राजपुत्र–पुत्रियां अपने विकास पथों का निर्माण स्वयं करने में जुट गए।

यह तो शुक्र है कि उन कर्णधारों की कलाई खोलने वाले भी सक्रिय हो गए और टोपियों के रंग कहीं कहीं बदलने लगे, बदलते रंग अधिकतर तो बदरंग हुए किंतु कुछ रंग इंद्रधनुषीय भी आए जिन्हें देख बसंत की संभावनाएँ भी बनने लगी।

बहरहाल–संभावनाएँ संभव हो यह आभास बन रहा है, हो सकता है स्वराज सच में हमारा हो सके। यह सच तभी सच होगा जब हम, आप और 'वे' स्वयं भी 'सच' का ही प्रयोग करेंगे और झूठ से परहेज करेंगे।

आइए उस 'स्वराज' की कामना करें।

अन्यशा रुस्तगी

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

अतीश मिश्रा 'बुन्नू'
खगेश भवन, मधुबनी, पुर्णिया बिहार

आलेख

पाश्चात्य संस्कृति और हम

देश की संस्कृति ही देश के दर्शन, परम्पराओं एवं कलाओं का प्रमाण देती है। 'संस्कृति' मानव अथवा मानव–समुदाय की मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों की अभिवृद्धि और परिष्करण की सूचक है।

हमारी धारणा रही है कि सृष्टि के प्रारम्भ में ईश्वर मनुष्य के जीवन–पद्धति को श्रेष्टतर बनाने हेतु वेदों के माध्यम से आवश्यक सिद्धान्त प्रदान किये ऋषियों ने अपने अन्तः करण में ईश्वर से दिव्य ज्ञान प्राप्त किये व वेदों के रूप में उसे प्रस्तुत किया यहीं से वैदिक संस्कृति का जन्म हुआ जो हमारी प्राचीनतम संस्कृति है।

विकास के क्रम में मान्यताएं, आस्थाएं, प्रथाएं व परंपराएं स्थापित होती गयी ये सब संस्कृति के अंग हो गए और मनुष्य इन ढांचों में ढलता चला गया।

संस्कृति का मुख्य उद्देश्य देश या जाति के जीवन को परिष्कृत करना है और मानव जीवन के पद–पद पर संस्कृति अपना कार्य करती है,परंतु संस्कृति एवं सभ्यता में भेद हैं।

हर संस्कृति की अपनी सभ्यता होती है जहाँ सभ्यता का संबंध मनुष्य के विचारों से है वहीं संस्कृति का संबंध उसके आचारों से। अस्तु दोनों एक दूसरे पर निर्भर हैं।

भारतीय संस्कृति की विशेषता जीवन की आध्यात्मिकता में है, जीवन की नैतिकता में है एवं जीवन की पवित्रता में है। इसकी गरिमा एवं महत्ता इतनी है कि इसके प्रति भारतीयों की अनन्य आस्था को अनेकों आक्रमण होने पर भी कोई नष्ट नहीं कर सका। शायर इकबाल ने ठीक ही कहा है–

यूनानी– मिस्रो– रूमा सब मिट गए जहां से,
अब तक मगर है बांकी नामों निशां हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरें जमा हमारा।

भारतीय संस्कृति संकुचितता से दूर सम्पूर्ण मानव जाति में समानता का संदेश देती है जहाँ ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य व अविश्वास की भावना स्वतः खत्म हो जाती है। इसी को दृष्टि में रखकर भारतीय संस्कृति 'वसुधैव कुटुम्बकम' के सूत्र द्वारा विश्व को एकता का उत्कृष्ट उपदेश देती है। हमारी संस्कृति की विशेष गुणों में उसकी जीव–मात्र के प्रति सहानभूति मुख्य है। अस्तु भारतीय संस्कृति का श्सर्वे भवन्तु सुखिनःश का उद्देश्य इस कथन की पुष्टि करता है। आध्यात्मिकता भारतीय संस्कृति की मुख्य केंद्र बिंदु है और भारतीय संस्कृति के निर्माण में धर्म का बहुमूल्य योगदान है। यहां धर्म का तात्पर्य किसी मत, पंथ, सम्प्रदाय या मजहब की संकुचित व्यवस्था से नहीं है। संस्कृति का उद्देश्य मनुष्य को सुसंस्कृत या शिष्ट बनाना है।

वैसे तो हर भारतीय अपनी संस्कृति का यशोगान करते नहीं थकते, परंतु पाश्चात्य संस्कृति की ओर उनकी रुझान साफ देखने की मिलती है। पाश्चात्य संस्कृति हमारे दिलो–दिमाग में इस कदर घर कर गयी है कि उसकी नकल करना हम अपना गौरव समझते हैं। आधुनिकता की होड़ ने हमें अपनी संस्कृति के धरातल से दूर कर दिया। वर्तमान में लोग अपने बच्चों को पाश्चात्य प्रणाली से शिक्षा–दीक्षा देने में गर्व महसूस करते हैं। जिससे भारतीय संस्कृति में बहुत–सी नई परम्पराएँ जन्म ले रही है। स्वतंत्रता के 76 साल बाद भी हम अंग्रेजियत के गुलाम बने बैठे हैं। क्या 'सोशल स्टेटस' या 'एडवांस' होने के लिए हमें अपनी संस्कृति, सभ्यता एवम भाषा की आहूती देना जरूरी है?

इस सम्बंध में निम्नलिखित शब्दों में कितना सही खाका खींचा गया है–

पश्चिमी सभ्यता में रंगे
युवकों को डिस्को करते देखकर
संस्कृत का अध्यापक ऊब गया
बोल उठा सूर्य को भी देखो
पश्चिम में ढला तो डूब गया।
डॉ सरोजनी प्रीतम

यहां हमारी मनसा पाश्चत्य संस्कृति या अंग्रेजी भाषा का अपमान करना कदापि नहीं, किसी भाषा की जानकारी का मतलब यह नहीं कि हम अपनी मौलिकता ही खो दें।

संबंध में महात्मा गांधी के यह अमृत वचन दृष्टव्य हैं– ''यह मैं पूरे आदर और दृढ़ता के साथ कहता हूं कि अपनी संस्कृति की प्रशंसा और उसे जीवन में अपनाने का कार्य सबसे पहले होना चाहिए दूसरी संस्कृति की प्रशंसा का स्थान उसके बाद है। मैं चाहता हूँ संसार भर की संस्कृतियों की हवा मेरे घर होकर बहे जितनी आजादी से बह सके उतनी आजादी से बहे, पर किसी अन्य संस्कृति की हवा से मेरे अपने पैर ही उखड़ जाएं, यह मैं पसंद नहीं करूंगा।''

हमारा कर्तव्य है कि हम इस ओर ध्यान दें वरना आने वाले वक्त का जबाब हमारे लिए ढूढना कठिन होगा।

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

कहानियां

यशोधरा भटनागर

कनिष्ठा

टैक्सी भागती सड़क पर दौड़ रही थी,साथ–साथ दौड़ रहा था उसका टसकता मन।

बात तो कुछ भी नहीं थी। मॉल में एक बड़े शोरूम में उसकी निगाहें उस आठ हजार की धानी साड़ी पर ऐसी उलझी कि बात उलझती चली गई।

साधारण सी नौकरी वाले सुबोध ने धीरे से बुदबुदाते हुए बस इतना ही तो कहा था– ''मीनू प्लीज अभी नहीं, बाद में खरीद लेंगे।अभी जरा हाथ तंग है।''

फिर क्या था...उसने तल्ख स्वर में सुबोध के लिए न जाने कितनी संज्ञाएँ और विशेषण गढ़ दिए थे।

उसके तल्ख स्वर सुबोध की बुदबुदाहट के साथ बड़ी कोठी तक पहुँचे तो शुरू से इस प्रेम–विवाह के विरुद्ध खड़े उसके माँ–बाप, भैया–भाभी ने आग में घी डालकर इस छोटे से झगड़े को तलाक के कगार तक पहुँचा दिया।

अनमनी उंगलियाँ फोन पर घूमने लगीं।ये टेक्नोलॉजी भी... मेमोरी फोटो सामने थी... उसके मेहंदी–कलीरे सजे हाथ में सुबोध का हाथ! कितनी सुंदर है विदाई की फोटो!

कनिष्ठा से कनिष्ठा कैसी कड़ी सी जुड़ी हुई हैं!

सुबोध ने तब उसके कानों में फुसफुसाते हुए यही तो कहा था– ''अपनी इस नाजुक–मजबूत उंगली में मुझ अनाथ की उंगली थामे रखना।''

और उसने मुस्कुराते हुए अपनी कनिष्ठा से सुबोध की कनिष्ठा को कसकर दबा एक आश्वस्ति सी दे दी थी।

एक दशक पहले ही तो कार दुर्घटना में सुबोध ने अपने माता–पिता को खोकर इस दुनिया में अकेलेपन का दर्द झेला है।

सहसा उसका ध्यान कनिष्ठा की ओर गया.... तलाक के कागजात पर दस्तखत करते हुए कनिष्ठा ने साथ न दिया था। बल्कि खुद चोटिल हो कर कागज से एक दूरी बना ली थी।

यह क्या?सामने धूल का बवंडर तेजी से घूमते हुए सब कुछ साथ लिए बढ़ता आगे को बढ़ता चला जा रहा है।

''भैया! भैया! मेरे कागज।''

''मैडम यहाँ रोकेगा तो चालान बनेगा। अर्जेंट था क्या?''

''नहीं !अर्जेंट तो कुछ नहीं!''

वह दूर उड़ते फड़फड़ाते कागजों को एकटक देखती रही।

अपनी कनिष्ठा को काफी देर तक निहारती रही जो अनामिका में पहनी हुई अंगूठी से सटी हुई थी।

सुरेश पांडेय
स्वीडन

आंगन की दीवार

''बहू एक ग्लास तो दे जाना।''

बूढ़े ससुर रमेश जी ने दरवाजे पर से आवाज लगाई।

गीता एक हाथ से अपना मुंह आंचल से ढके हुऐ और चेहरे पर मयूसियां लिए दूसरे हाथ में एक ग्लास पानी लेकर ससुर जी को हाथ में थमाते हुए कहा,

''बाबू जी, अब आप मुझे अलग कर दीजिए....''

क्या हुआ बेटी!!! ''किसी ने कुछ कहा तो नही?''

रमेश अपनी बड़ी बहू की बात बीच में ही काटते हुए पूछ बैठे।

''नही बाबू जी अब नहीं सहा जाता....''

गीता रमेश की बड़ी बहू है जो भरी जवानी में विधवा हो गई थी। उसके पति की किसी दुर्घटना में अचानक मृत्यु हो गई थी। तब वह अपने बच्चे की मां बनने वाली थी। उसका बेटा आज दस साल का हो गया है और स्कूल जाता है। अपने माता पिता और ससुर के भी कहने के बावजूद उसने दूसरी शादी करने से इनकार कर दिया था। तब से वह इसी घर की सेवा करती आंगन से चौखट तक आती जाती रही है और अपने बच्चे को पाल पोस रही है। घर में न तो उसे किसी से शिकायत कभी थी और नही किसी को उसने कोई शिकायत का मौका दिया था। गीता के देवर अनुभव की जब से शादी हुई है और वंदना घर में आई है तब से घर में चीख चिल्लाहट शुरू हो गई थी।

गीता दिन भर किचन से लेकर घर का सारा काम काज संभालती है परंतु फिर भी ताने की बौछारें उसे सुननी ही पड़ती है। वंदना उसे घर की नौकरानी से ज्यादा और कुछ नहीं समझती है क्योंकि अनुभव घर का कमाऊ पूत है। घर का सारा खर्च उसके ऊपर ही निर्भर है। गीता का बेटा पढ़ता है जो उसे खलता है।

''नही बेटा, घर में ये सब तो चलता ही रहता है और आखिर अब तुम जाओगी कहां?''

रमेश जी ने उसे समझाने की कोशिश करते हुए कहा।

''नहीं, बाबू जी। मैं जितनी मेहनत यहां करती हूं क्या उतने में दो रोटी कहीं नहीं मिलेगी? मन में शांति तो रहेगी। सुकून तो रहेगा।''

गीता अपनी जिद पर अड़ी थी।

रात दिन की चीख चिल्लाहट सुन कर परेशान तो रमेश जी भी थे। उनका मन भी ऊबा हुआ था।

''ठीक है बहू। जैसी तुम्हारी इच्छा। लेकिन मैं तुम्हारे साथ ही रहूंगा।''

अनुभव को बुलाकर सारी वस्तुओं का आधा आधा बंटवारा हो गया। अनुभव ने भी उसे स्वीकार कर लिया। आंगन में दीवारें खड़ी हो गईं। पर रमेश जी अपने ही निर्णय को अंदर से स्वीकार नही कर पाए और उन्होंने दो दिन बाद ही दम तोड दिया।

लेख

पवन शर्मा
गुरूग्राम, हरियाणा

भले भी हम, बुरे भी हम !

भले भी हम..., बुरे भी हम..., समझयो ना किसी से कम. .., हम हैं कलयुग वासी। जी हां, 21वीं सदी कहिए, आधुनिक युग कहिए या कलयुग कहिए, इस युग में हम सभी केवल आम इंसानों के रूप में ही रहते हैं। अब हमारे बीच में प्रत्यक्ष रूप में ना तो डरावने व भयानक चेहरे वाले राक्षस रहते हैं और ना ही हमें दिव्य स्वरूप लिए हुए देवी–देवताओं के दर्षन होते हैं, जैसा कि पहले सतयुग, त्रेता एवं द्वापर युगों में हुआ करता था। अब हमें अपने आसपास रहने वाले आम व्यक्तियों में ही इंसान, शैतान और भगवान के रूप देखने को मिल जाते हैं। सच तो यह है कि हम सभी सामान्य आदमी तो हैं लेकिन अपने अंदर इंसानियत पैदा किए बिना हम स्वयं को इंसान कहने का भी अधिकार नहीं रखते। जब कोई व्यक्ति इंसानियत वाले अच्छे काम करता है तो हम लोग उसे अच्छा इंसान कहते हुए उसकी तारीफ करते हैं और जब वही व्यक्ति इंसानियत से और ऊपर उठकर मानव, समाज एवं देश सेवा में अपना सर्वस्व बलिदान करने की राह पर चलता है तो उसे महापुरूष से लेकर भगवान तक की पदवी दे देते हैं। परंतु वही व्यक्ति अगर परिस्थितियोंवश अथवा दुर्भाग्यवश शैतानियत एवं दंरिदगी पर उतारू हो जाए या फिर किसी की जान तक लेने को तैयार हो जाए तो हम उसी व्यक्ति को शैतान या राक्षस भी कहने लगते हैं।

पहले इस धरती पर मानव के साथ दानव भी रहा करते थे। देवता भी इंसानों एवं राक्षसों की तपस्या एवं भक्ति से प्रसन्न होकर समय–समय पर दर्शन दिया करते थे और समय–समय पर धरती से पापों एवं पापियों का नाश करने के लिए ईश्वर भिन्न–भिन्न रूपों में अवतार भी लिया करते थे। त्रेता युग में भगवान राम एवं रावण तथा द्वापर युग में भगवान कृष्ण एवं कंस इसके बड़े उदाहरण हैं। परंतु कलयुग में प्रत्यक्ष रूप में इस धरती पर न तो पापी एवं दुराचारी राक्षस अथवा शैतान दिखाई देते हैं और न देवी–देवताओं के ही दर्शन होते हैं। अब कलयुगी आदमी के भीतर ही इंसान की इंसानियत, राक्षस की हैवानियत के साथ–साथ देवी–देवताओं का देवत्व संयुक्त रूप से समाहित हो गए हैं यानि सृष्टि की सारी अच्छाईयां एवं बुराईयां प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में आज आदमी के अंदर ही समाई हुई हैं।

दूसरे व्यक्ति की बात छोड़ दीजिए, आज हमें अपने ही अंदर छिपे चेहरों व मुखौटों की संख्या का अंदाजा नहीं होता है। पता नही हमारा कौन सा चेहरा कब लोगों के सामने उजागर हो जाए। एक ही व्यक्ति कभी इंसानी रूप में रहता है, कभी शैतानी रूप में, कभी राक्षसी प्रवृत्ति धारण कर लेता है और कभी देवी–देवताओं के समान महान भी बन जाता है। यही कारण है कि आज हम सामने वाले व्यक्ति के असली चेहरे तथा चरित्र की सच्चाई एवं गहराई का अनुमान नहीं लगा पाते।

पहले देवता देवलोक में, मनुष्य पृथ्वीलोक में तथा दैत्य एवं दानव पृथ्वीलोक के साथ–साथ पाताल लोक में भी रहा करते थे। परंतु समय–समय पर मानव, दानव और अवतरित देवता अपने–अपने रूपों में इस धरती पर एक साथ भी रहा करते थे। कोई भी व्यक्ति हमेशा न बुरा होता है न हमेशा अच्छा ही रहता है। अक्सर समय एवं परिस्थितियों के अनुसार व्यक्ति के आचार–विचार, क्रियाकलाप और चरित्र बदलते रहते हैं।

एक प्रसिद्ध चित्रकार बालकृष्ण भगवान के समान बालक की तथा राक्षस कंस के समान महादुष्ट व्यक्ति की स्वाभाविक तस्वीर बनाना चाहता था। जल्दी ही उसे ऐसा बालक मिल गया और उसने बालकृष्ण भगवान के रूप में उस बालक की एक अत्यंत आकर्षक, सुंदर एवं दिव्य तस्वीर बना डाली, जिसे देखकर सभी लोग वाह वाह करते। परंतु कंस के समान दुराचारी एवं महापापी व्यक्ति की तस्वीर बनाने के लिए उसे सालों तक वैसा व्यक्ति नहीं मिला और वह निराश हो गया। लगभग बीस वर्षों के पश्चात् उसे किसी ने बताया कि हत्या के जुर्म में राक्षसी प्रवृत्ति का एक अत्यंत क्रूर व्यक्ति जेल की सजा काट रहा है तो आप एक बार उससे भी मिलकर देख लीजिए। चित्रकार उस दुष्ट व्यक्ति से मिलकर कंस के रूप में उसका चित्र बनाने के लिए तैयार हो गया और उसने कंस के रूप में उसका एक बेहद प्रभावशाली चित्र बना डाला जिससे वह स्वयं भी पूर्ण संतुष्ट था। जेल में सजा काट रहे उस कैदी ने बाद में चित्रकार को रोते हुए बताया कि वह वही व्यक्ति है, जिसकी

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

बचपन में उसने बाल कृष्ण भगवान के रूप में तस्वीर बनाई थी। परंतु परिस्थितियों एवं दुर्भाग्यवश आज वो जेल में अपने दुष्कर्मों की सजा काट रहा है।

हमें जब भी कोई महत्वपूर्ण कार्य करना होता है तो हमारे मन के अंदर दैवीय एवं आसुरी यानि अच्छी और बुरी शक्तियों का द्वंद्व होता है और जो शक्ति विजयी होती है, हम उसीके अनुरूप उस कार्य को करने अथवा न करने का निर्णय लेते हैं। यानि हमारा मन एवं हमारी सोच जितनी निर्मल एवं पवित्र होगी उतने ही अधिक अच्छे कार्य करने का निर्णय हम ले पाएंगे और हमारा मन एवं हमारी सोच जितनी ज़्यादा मलिन, कलुषित अथवा नकारात्मक होगी, हम उतने ही ज़्यादा गलत एवं बुरे काम करने के लिए स्वयं से प्रेरित होंगे।

आदमी की अत्यंत खतरनाक प्रवृत्ति यह है कि वह अपने दुर्गुणों एवं हैवानियत को छिपाकर रखता है। यदि हम रावण का उदाहरण लें तो हम पाते हैं कि रावण के दसों चेहरे उजागर थे। यदि आज बुरे व्यक्ति अपने चेहरे पर बुराई के ही भाव रखना आरंभ कर दें तो लोग उनसे सावधान रह सकते हैं लेकिन आजकल लोगों के चेहरों पर अदृश्य नकाब रहते हैं। उनमें जो राक्षसी बुराईयां होती हैं वे उन्हें इंसानियत एवं महानता के आवरण में छिपाए रहते हैं।

पहले हम लोग डाकुओं एवं राक्षसों को देखकर सावधान हो जाया करते थे लेकिन आजकल ऐसी प्रवृत्ति के लोग भी इंसानी चोले में ही होते हैं। इसी तरह, जरूरी नहीं कि साधु के वेष में साधु ही हो। अनेक लोग पहले तो महिलाओं के उत्थान एवं कल्याण के लिए सुख–सुविधाओं से युक्त बड़े–बड़े आश्रम बनवाते हैं लेकिन वहां भी पर्दे के पीछे होने वाली दुराचार की घटनाएं अक्सर सुनने–देखने में आती रहती हैं।

एक आदमी ने दूसरे आदमी पर चाकू से हमला किया और वहां से भाग गया। कुछ ही देर में वहां देवदूत बनकर तीसरा व्यक्ति आया जिसने उसे इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया और आवश्यकता पड़ने पर चौथे अनजान व्यक्ति ने घायल आदमी को अपना खून देकर उसकी जान बचाई। इस घटना में हमें इंसान, राक्षस एवं भगवान तीनों के रूप मिल जाते हैं।

अनेक बार ऐसा भी होता है कि जिन लोगों को हम न केवल अच्छा इंसान बल्कि अपना नेता मानकर उनके हाथों में अपने राज्यों अथवा देश की बागडोर तक सौंप देते हैं, बाद में वही भ्रष्टाचारी पाए जाते हैं और अंततः जेल तक पहुंच जाते हैं। ऐसा इसीलिए ही होता है कि हम नायक चेहरे के पीछे छिपी खलनायकी को समझने–पहचानने में असफल रहते हैं।

ठगी, लूटपाट, बलात्कार एवं नृशंस हत्या करने वाले इंसानों के बारे में हम आए दिन सुनते रहते हैं। कई मामलों में वे लोग वहशीपन की सीमा पार करते हुए अपने बच्चों, जीवनसाथी अथवा मां–बाप तक की हत्या कर देते हैं। ऐसे लोग किसी दूसरी दुनिया से नहीं आते बल्कि वे भी भले व आम सामाजिक व्यक्ति के रूप में हमारे बीच में ही रहते हैं। हमारे आस–पड़ोस के ऐसे घर–परिवार जिन्हें लोग मंदिर समान मानते हैं और उस घर में रहने वाले पति–पत्नी को लोग राम–सीता की जोड़ी कहते हैं कभी–कभी वे भी जघन्य अपराधों को अंजाम दे देते हैं।

जिस आदमी में हमें बुराईयां दिखाई देती हैं, निश्चित रूप से उसमें अच्छाई भी अवश्य होंगी और जिसमें हमें अच्छाईयां दिखाई देती हैं, उसमें बुराईयां भी जरूर होंगी। वो अलग बात है कि उसमें अच्छाईयां ज्यादा हैं या बुराईयां ज्यादा हैं। एक व्यक्ति जो जरूरत पड़ने पर अपने परिवार, मित्र, पड़ोसी अथवा रिश्तेदारों की खातिर अपनी जान तक दांव पर लगा देता है, वही व्यक्ति दिमाग घूमने पर उन्हीं की जान तक ले भी लेता है।

अक्सर हम यह भी देखते हैं कि एक व्यक्ति इंसानी धर्म का पालन करते हुए अपने परिवार व समाज के प्रति अपने सभी कर्तव्यों को निभाता है परंतु कभी–कभी वही व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए अथवा सामने वाले के अन्यायों से तंग आकर न केवल उसे बड़ी हानि पहुंचाता है बल्कि उसकी जान तक ले लेता है। यही व्यक्ति कभी–कभी इंसानी बुलंदियों को इस कदर छू लेता है कि लोगों के लिए वह भगवान तक बन जाता है।

इसका तात्पर्य यह नहीं है कि पहले के युगों में आदमी के अंदर बुराईयां नहीं थीं या वे हिंसक या क्रूर नहीं हुआ करते थे। निःसंदेह तब भी आदमी के अंदर ये बुराईयां हुआ करती थीं लेकिन थोड़े व्यक्तियों में ही होती थीं और वह भी एक सीमा के अंदर हुआ करती थीं लेकिन अब सभी सीमाएं पार हो चुकी हैं!

अब अच्छाईयों के साथ–साथ धूर्तता, धोखेबाजी व बेईमानी के अलावा वहशीपन, क्रूरता, शैतानियत व तामसी प्रवृत्तियों समेत सभी आसुरी शक्तियां भी कम या ज़्यादा इंसानों में ही पाई जाती हैं। अलग से शैतानी एवं आसुरी बुराईयां लिए हुए राक्षस अथवा दिव्य शक्तियों से परिपूर्ण देवता धरती पर दिखाई नहीं देते हैं।

निष्कर्ष यह है कि हमें स्वयं की बुराईयों को यथासंभव खत्म करने का प्रयास करना चाहिए ताकि हमारे कारण किसी व्यक्ति को कोई हानि न पहुंचे। यदि हम अपनी अच्छाईयों को बरकरार रखते हुए अपनी बुराईयों को थोड़ा–थोड़ा भी कम करने की कोशिश करना शुरू करें तो निश्चित रूप से एक दिन हम यह कह सकेंगे –'भले हैं हम, बुरे नहीं हम !'

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

लघुकथाएं

ममता शर्मा 'अंचल', अलवर

बेगाने लोग

हर रोज हमारी गाड़ी उसी सड़क से होती हुई स्कूल तक पहुंचती है जिससे आज आई , मगर आज जब हम अपने स्कूल के पास आए तो देखा सड़क पर भारी भीड़ जमा थी। भीड़ को चेतावनी सी देते हुए गाड़ी वाले ने हॉर्न बजाया। हॉर्न के बजते ही लगा कि जैसे किसी की तपस्या ही भंग कर दी गई हो । कारण कि भीड़ ने बड़े अजीब भाव से गाड़ी वाले की ओर देखा था कि ये लोग इतना सा भी संवेदनशील नहीं हैं कि वक्त की नजाकत को तो देख सकें और इसी भाव के साथ उन्होंने रास्ता दे दिया। हमारी गाड़ी तो स्कूल पहुंच गई पर मेरे मन में जिज्ञासा बड़े वेग से छलाँगें भरने लगी कि आखिर राह में वह भीड़ क्यों थी? जब बच्चे स्कूल आए तो मैंने कक्षा नवीं की एक छात्रा राध ाा से पूछा कि आज रास्ते में इतनी भीड़ क्यों एकत्र थी? उसने बताया कि मैम! सागर की दादी मर गई। सब लोग उनके दफनाए जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। सुनकर सदमा लगा परंतु मैं एक क्लास से दूसरी क्लास में निरंतर पढ़ाने लगी रोज की तरह। अपना दायित्व निर्वहन जो करना था। कक्षा दसवीं में आई तो बच्चे वहां भी कम मिले। मैंने कारण जानना चाहा तो छात्रा रकीबा बोली कि मैडम जी! सागर की दादी मर गई तो वे चारों भाई बहन तो स्कूल आए ही नहीं, उनके मित्र और सहेलियां भी इसी कारण से आज स्कूल नहीं आए। इसलिए आज छात्र संख्या कम है। अब मैं समझी कि वहां इतनी भीड़ क्यों थी। एक लड़की यकायक बोल उठी मैम! सागर की दादी को उनके घर के पिछवाड़े ही दफनाएंगे। मैंने आश्चर्य से पूछा क्यों? तब वह बोली कि मैम ये लोग सपेरे जाति के हैं और इनका कोई अपना शमशान घाट नहीं है। इसलिए ये घर के आंगन पिछवाड़े,ग्वाड़े आदि में ही अपने सगे संबंधियों को दफनाते हैं । मुझे सुनकर बहुत बड़ा झटका लगा कि अरे! ! जहां हिंदुओं के लिए, मुसलमानों के लिए तो गांव में श्मशान घाट हैं लेकिन सपेरों के लिए नहीं। ये भी तो वे ही रस्म और रिवाज करते हैं जो मुसलमान लोग करते हैं। इतना भेदभाव उनके साथ ही क्यों? लड़की बोली पता नहीं मैम। हमें तो बस इतना ही पता है कि सपेरों के लिए गांव में कोई श्मशान घाट नहीं है। सुनकर मेरा मन भीतर ही भीतर घुटने लगा और मैं सोचने लगी कि समाज की यह कैसी व्यवस्था है? लोगों के कैसे दिलों दिमाग हैं जिनमें मृत्यु के बाद भी ऐसा भेदभाव किया जाता है कि मरने वाले को श्मशान घाट में मरने के बाद भी जगह नहीं मिलती।

ख्याल आया कि बहादुर शाह जफर को तो इसलिए अपने वतन में दो गज जमीन न मिल सकी कि वे रंगून में अंग्रेजों की कैद में थे लेकिन बेचारे सागर की दादी तो अपने ही देश में और खुद के ही गांव में बेगानी है। कैसे बेगाने हैं आज भी समाज में ये लोग! !

कंचन सागर, प्रभारी
पानीपत

जीवन की सच्चाई

सब को मालूम है कि जिसने जन्म लिया है उस का अन्त निश्चित है। परन्तु हम सब यही चाहते हैं कि परमात्मा स्वस्थ होने पर ही अपने पास बुला ले,बस तकलीफ न दे। लेकिन यह नामुमकिन है। कहते हैं कि पिछले जन्म के करम हमें इस जन्म में भोग कर जानें ही हैं।

आज बैठी तो श्रीमती विज की याद आ गई। उन्होंने मेरे साथ ही कईं नामी गिरामी विद्यालयों में पढ़ाया था। उनकी छोटी बहन उमा मेरी परम मित्र थीं।

एक दिन वह पति के साथ घूमने किसी पर्वतीय क्षेत्र में जा रही थी कि रास्ते में दिल का दौरा पड़ने पर इस नश्वर संसार को छोड़कर चलीं गईं। बहुत दुख हुआ। फिर दो माह बाद ही सब से छोटी बहन के पति की कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई। इनके परिवार पर तो दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। धीरे–धीरे श्रीमती विज बीमार रहनें लगीं। उनकी बीमारी समझ ही नहीं आ रही थी। मैं एक–दो बार ही उन का हाल पूछने जा पाई। तब किसी ने बताया कि वह अब शैय्याग्रस्त हो गईं हैं। मल त्याग भी वहीं होने लग गया है और छः माह बाद बहुत दुख भोगने के बाद भगवान को प्यारी हो गईं।

यादों के गलियारे में और पीछे निकल गई। उन्हें दीदी कहतीं थीं मैं। हर काम में निपुण... पढ़ाई, सिलाई, योग, क्रोशिया, व्यन्जन बनाना,

बागबानी न जाने कितने गुणों की खान थीं। उमा स्व. राज कपूर के गाने बहुत सुन्दर गाती थी।

प्रभु चुपचाप शांति पूर्वक अपने घर क्यों नहीं बुलाते?

इन के दुखद अंत सुनकर मन बड़ा दुखी हो गया। उनके साथ काम करने के कईं मौके मिले थे। दोनों ही बहुत चंचल, हँसमुख, मिलनसार सुन्दर तथा सभी की चहेती थीं।

आज बहुत याद आ रही थी सो कलम में उतार लिया।

दुनिया से जाने वाले कभी नहीं आते,
उन की याद आती है।

भगवान उन सब की आत्मा को शान्ति दें और अपने चरणों में स्थान दे!

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

आनंदा पाटनी
यू.के.

लघुकथाएं

रोटी का गणित

मंदा ने रोटी गिनी तो सात थीं। घर में खाने वाले पाँच बच्चे, वह खुद और पति, कुल सात जने। तीन टाइम चलाना था पर ये तो एक बार में ही खत्म हो जायेंगी, यह सोच एक एक रोटी के तीन तीन टुकड़े कर दिए। एक टुकड़ा सुबह, एक दोपहर और एक शाम के लिए।

आज का काम तो चल जाएगा पर बेचारी सोचती रही कि कल क्या होगा। एक उपाय है। आज वह और उसका पति अपने बाँट का हिस्सा नहीं खाएँगे तो कल बच्चों के लिए दो रोटी बच जाएँगी। उनके फिर टुकड़े कर बच्चों में बाँट कर खिला देंगे। पर पेट तो तब भी नहीं भरेगा। वह परेशान थी कि करे तो क्या करे।

पहले लॉकडाउन में तो वह अपनी तनख्वाह व मालकिन के कुछ एक्स्ट्रा पैसों से सबको पेट भर खाना खिला पा रही थी।

अगले लॉकडाउन में थोड़ी कॉजूसी करनी पड़ी। तीनों टाइम सबको एक एक रोटी और आधी कटोरी दाल। बच्चे और माँगते तो डाँट लगा देती, "बस और नहीं मिलेगी।" बच्चे बेचारे सहम जाते। मंदा मन ही मन बहुत दुखी होती पर सबर कर लेती कि जल्दी कॉरोना से मुक्ति मिल जाएगी, लॉकडाउन खुल जाएगा और सब कुछ पहले जैसा चलने लगेगा।

जैसे जैसे सोम, मंगल, बुद्ध बीत रहे थे वैसे वैसे आटा, दाल व अन्य खाने का सामान भी बीता जा रहा था।

दिल पर पत्थर रख कर आज जब उसने बच्चों के आगे रोटी का एक टुकड़ा और एक गिलास पानी रखा तो बच्चे रोने लगे। बेचारी मंदा अब क्या करे। अपनी बेबसी और लाचारी पर उसे गुस्सा आ रहा था। उसने खिसिया कर एक एक चांटा बच्चों के गाल पर रसीद कर दिया और चिल्लाने लगी, "खाना है तो खाओ नहीं तो भाड़ में जाओ।" और खुद भी रोने लगी। पति बेचारा असहाय सा देखता रहा।

घर का दरवाजा खुला था। तभी एक भिखारी आ खड़ा हुआ, हाथ फैलाए। मंदा गरज उठी, "देख नहीं रहे बच्चे कैसे भूख से बिलबिला रहे हैं। हमारे ही खाने के लाले पड़ रहे है, ऊपर से चले आ रहे हो माँगने। बच्चों पर दया करना तो दूर, खड़े हो तमाशा और देख रहे हो। जाओ बाबा, जाओ यहाँ से।"

बेचारा फटेहाल भिखारी मंदा का गुस्सा देख सकपका गया। हाथ से जाने का इशारा कर मुड़ा और चल दिया। बाहर निकलते निकलते दरवाजे के बाहर झुका। मंदा को शक हुआ, जरूर कुछ उठा कर ले जा रहा दिखता है। जल्दी से बाहर निकल कर आई कि तुरंत पकड़ ले उसे। जैसे ही दरवाजे के पास आ कर देखा तो देखती क्या है एक बड़ा सा खाने का पैकेट , जिसके ऊपर लिखा हुआ था समाज सेवी संस्था द्वारा वितरित खाना और पकाने की अतिरिक्त सामग्री।

डॉ. नीरजा मेहता, 'कमलिनी'

खाली वॉलेट

"और बेस्ट गायक का ये अवार्ड जाता है सुरेश कपूर को।"

तालियों की गड़गड़ाहट की जगह लोग एक–दूसरे को आश्चर्य से देखने लगे तभी संचालक की आवाज गूँजी "जोरदार तालियों के साथ सुरेश जी का स्वागत किया जाये।"

तालियाँ बजीं पर उनमें वो उत्साह और खुशी नहीं थी। एक ऐसा गायक जिसको न सुर की समझ, न आवाज में खनक, उसको अवार्ड वो भी बेस्ट गायक का। सबकी आश्चर्यमिश्रित निगाहें रोशन की ओर गईं जिसको गायन में अधिक वक्त तो नहीं हुआ था पर उसकी आवाज के लोग दीवाने थे।

सुरेश को अवार्ड लेते देख रोशन अपनी जेब से खाली वॉलेट निकालकर माँ की तस्वीर देखता रहा।

अंशिका

लघुकथाएं

शालिनी वर्मा, कतर

औकात

"बेवकूफ औरत ! अपनी औकात नहीं पता तुझे। औरत है औरत की तरह रह, समझी।'' ये शब्द मोनी के कानों में पिघले सीसे से उतर गए स अब तो उसे आदत सी हो गई है अपने पति सोम से अपशब्द सुनने की। घर में जब भी कुछ खराब हो जाता है या सोम का मूड बिगड़ा हो उस दिन तो मोनी की आफत ही आ जाती। पर आज जब सोम ने बच्चों के सामने उसे बुरी तरह फटकारा तो उसका दिल जार–जार रोने लगा। क्या उसे बोलने का कोई अधिकार नहीं है ? क्या वह सिर्फ अपशब्द सुनने के लिए इस घर में आई है ? अभी तक वह सोचती आज सोम का दिन अच्छा नहीं निकला उसे ऑफिस में काम बहुत है तो वो कहाँ अपनी भड़ास निकाले। पत्नी से ही तो कहेगा ना। पर कुछ दिन से वह देख रही थी कि उसके बेटे शानू में बहुत परिवर्तन आने लगा है। अब वह मोनी को बात–बात पर पलट के जबाव देने लगा है। पर होली की शाम से सब कुछ बदल गया स होली के दिन सोम अपने मित्रों के साथ बैठा ठहाके लगा रहा था स मोनी गर्मागर्म पकौड़े, दही–बड़े और ठंडाई उन्हें परोस रही थी तभी उसके हाथ से चटनी की कटोरी छूट गई और पूरे कमरे में चटनी फैल गई। सोम ने गुस्से में दोस्तों के सामने ही गाली देना शुरू कर दिया और जैसे ही अपना हाथ उसको मारने के लिए उठाया स मोनी ने उसके हाथ को पकड़ लिया और कहा– "सोम मैंने आज तक आपको कभी कुछ नहीं कहा पर अब और नहीं, आप मेरी बात–बात पर बेईज्जती करते हैं, मैंने भी सोचा ये तो हर पुरुष का अधिकार होता है पर आपको देख कर हमारा बेटा शानू भी यही सब सीखने लगा है और मैं नहीं चाहती कि मेरे घर से एक और ऐसा पुरुष निकले जो महिलाओं को पैर की जूती समझे। जो चीज मेरी सास ने नहीं रोकी वो आज मैं रोकती हूँ ताकि किसी और लड़की को वो ना झेलना पड़े जो आज तक मैं झेलती आई हूँ स तो आज के बाद हमारे घर में ये सब नहीं होगा।'' सोम का हाथ नीचे गिर गया और शर्मिंदगी से उसकी आँखें झुक गई। उस दिन से मोनी के घर में परिवर्तन आने लगा स गलत बातों को रोकना भी आवश्यक हो जाता है इसलिए गलत बातें चाहे घर में हों या बाहर उनके खिलाफ आवाज उठाइए तभी हम इस पीढ़ी दर पीढ़ी चलती आ रही गलत बातों को रोक पाएँगे।

सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'

रिश्ते की भीख

मैं सुबह रोज की तरह स्टेशन पर पहुँचकर डेली पैसेंजर की तरह अपनी रेलगाड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था, नौकरी के लिए काम पर जाने के लिए रेल से अच्छा साधन नहीं था।

स्टेशन पर जमीन पर दीवार की टेक लगाये अपने बच्चे के साथ एक युवती प्लास्टिक की प्लेट में भीख माँग रही थी, मैं भी वहाँ खड़ा होकर तमाशबीन की तरह अपने फोन पर लगा था।

भीख माँगने वाली युवती ने अपने रोते बच्चे को चुप कराते हुए मुझसे कहा, "बाबू जी जरा मुन्ने को देखना मैं इसके लिये पानी लेकर आती हूँ", कहकर वह भीख की प्लेट मेरे सामने रखकर एक डिब्बे पर मुझे बैठने को कहा।

मैं अपने फोन पर व्यस्त था पर उसके कहने पर वहाँ डिब्बे पर बैठकर बच्चे को अपना पेन बच्चे को खेलने के लिये दे दिया और फोन पर लग गया। तभी अचानक कोई मेरे सामने आकर कोई खड़ा हो गया और उसने दो –तीन सिक्के के प्लेट में फेके जो खनखनाये, अपना सिर उठाकर देखा कि मेरी मंगेतर भीख देकर अपनी सहेलियों के साथ खड़ी थी।

मेरा माथा चकराया, जब तक सब कुछ समझ पाता वह यह कहकर पाँव पटकते चली गई,

"मुझे नहीं पता था कि तुम भीख भी माँगते हो।"

मैंने उसे रोका, "सुनो डार्लिंग, मेरी बात तो सुनो। मैं उसके पीछे भागने को हुआ, पर भिखारी युवती दूर तक न दिखी और बच्चे को छोड़कर कैसे जाऊँ बच्चे का खय्याल आते ही उसकी करुणा में रुक गया। तभी रेल आयी मैं कश्मकश में था की भागकर अपनी मंगेतर के साथ रेल पर चढ़ जाऊँ। पर रेल छूट चुकी थी, मानो मेरे होने वाले रिश्ते की रेल मेरे सीने से गुजर गयी और मेरी नजर उसके प्लेट में भीख में दिये सिक्के ऐसे लग रहे थे जैसे मेरी मंगेतर रिश्ते की भीख देकर चली गई हो।

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

कहानी

प्रो. पंढरीनाथ पाटील 'शिवांश'
गंगामाई महाविद्यालय, नगांव, धुले (महाराष्ट्र)

तलाक

जैसे ही मोबाइल की घंटी बजी सीमा मोबाइल उठाकर बेडरूम में चली गई। बाहर से आकाश उसे आवाज दे रहा हैं, पर सीमा अनसुना कर मोबाइल पर किसीसे बात करती रहती हैं।

आकाश और सीमा की शादी हुए केवल दो महीने हुए हैं। पर सीमा एक भी दिन आकाश से ठीक से बात नहीं कर पाई हैं। इसका मुख्य कारण हैं मोबाइल ! जब भी आकाश सीमा से बात करना चाहता हैं , सीमा का मोबाइल बज उठता हैं और उसे बेडरूम में ले जाता हैं और घंटों आकाश राह नहीं देख सकता। आकाश एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में नौकरी करता हैं और सीमा ने भी बी.ए. की पढ़ाई की हैं। आकाश का मानना था कि यदि नौकरी करनेवाली लड़की से शादी करूँगा तो दोनों के वैवाहिक जीवन में कठिनाइयाँ आएगी। दोनों एक–दूसरे को समय नहीं दे पायेंगे और आगे चलकर बच्चों को पालना घर में रखना होगा। रुपये तो बहुत होंगे पर प्रेम ? इसीकारण उसने छोटे से गाँव की लड़की सीमा से शादी की हैं, पर सीमा तो दिन–रात मोबाइल से चिपकी रहती हैं। जिस कारण उनके रिश्ते टूटने की कगार पर हैं। जब मनुष्य शादी के बाद भी प्रेम नहीं पा सकता तो वह जीवन से ही ऊब जाता हैं। अत्यव उसने आज छुट्टी ले ली हैं कि अब जीवन के विषय में गंभीरता से सीमा से बात की जाए। पर सीमा बेडरूम में !

"क्या बात हैं सीमा ! तुम मुझसे सीधे मुँह बात क्यों नहीं करती ? क्या तुम्हारी शादी जबरदस्ती से हुई हैं ? क्या मैं तुम्हें पसंद नहीं हूँ ?

"नहीं, वैसी कोई बात नहीं हैं।" सीमा नजरे झुकाये।

"हमें यहाँ आये दो महीने हो गए हैं, पर एक भी दिन हमने बैठकर बात नहीं की हैं। एक तो मुझे समय कम मिलता हैं और तुम मोबाइल पे चिपकी रहती हो। रात को जब मैं आता हूँ तुम सो चुकी होती हो। तो हमारा रिश्ता आगे कैसे बढ़ेगा ?" आकाश ने सीधी बात कह दी। फिर सीमा के मोबाइल की घंटी बजी, उसे बंद करते सीमा ने कहा, "मुझे दिनभर यहाँ अकेले रहना पड़ता हैं। बोर हो जाती हूँ, इसलिए माँ और सहेलियों से बात करती रहती हूँ।"

"एक रात मैंने तुम्हारा मोबाइल देखा था। माँ से तुम मात्र दो या पाँच मिनट बात करती हों। बाक़ी तो सागर जान से ही घंटों तक बात करती रहती हो। यह तुम्हारी सहेली हैं ?"

"मेरी सहेली के पास मोबाइल नहीं हैं। उसके भाई का नाम हैं सागर ! उसके फोन पर मैं उसे कॉल करती हूँ।" सीमा ने दृढ़ता दिखाने की चेष्टा की।

"मैं आय.टी.इंजीनियर हूँ सीमा ! कोई ऐरा–गैरा नहीं। मैंने उस नंबर से फोन कर सागर की पूरी कुंडली निकाल ली हैं। उसे कोई बहन नहीं हैं। वह तुम्हारी ही गली में रहता हैं। तुम्हारे ही क्लास में पढ़ता था। फिलहाल बेरोजगार हैं। चोरी के आरोप में दो बार जेल जा चुका हैं। शादी से पहले तुम उसके साथ कहीं भाग गई थी।" आकाश के शब्दों में कठोरता थी। यह सुनते ही सीमा दौड़ती बेडरूम में चली गई और दरवाजा बंद कर दिया। चोरी पकड़ी गई थी, अब रोकर आकाश को पिघलाना चाहती थी। स्त्रियों का सबसे प्रभावी शस्त्र आँसू होते हैं। पर आकाश अब इस शस्त्र से भी हारने वाला नहीं था। शहरों में टूटते संबंध उसने देखें थे। इसीकारण उसने देहाती लड़की से शादी की थी। उसे लगा था कि देहाती लड़की उसे और उसके परिवार को सँभाल लेगी। पर सिनेमा का प्रेम शहर की अपेक्षा देहातीं लड़कों–लड़कियों में इतनी गहराई तक पहुँचा होगा , यह वह नहीं जानता था। बुरी तरह फँस गया था आकाश !

दरवाजे के बाहर से उसने सीमा को आवाज दी, "अरे चलो! मैं सबकुछ भूलने को तैयार हूँ। तुम भी सबकुछ भूल जाओ। आओ ! नया जीवन शुरू करें। हम कल का पछतावा कर आज क्यों बिगाड़े ? आओ , बाहर आओ।"

सीमा अंदर से ही कहती हैं, "नहीं ! मैंने उसे वचन दिया हैं कि मैं जल्द ही उसके पास चली जाऊँगी। आप वकील साहब को बुला दीजिए, मैं आपसे विभक्त होना चाहती हूँ। मुझे आपके साथ नहीं रहना, मुझे तलाक़ चाहिए।"

यह सुनकर हताश आकाश की आँखों से आँसू बहते हैं कि अभी उसने शादी को नहीं समझा हैं और तलाक़ ?

उसके पावों तले मानो जमीन खिसक गई हो। वो बेजान सा फर्श पर गिर पड़ा।

डॉ. शिप्रा मिश्रा

लघुकथाएं

मनीषा जोशी मनी

पेंशन

'अम्मा तुम भी ना... कर दी ना देर.. तुम्हें तो समझाना बेकार है.. एक दिन घंटी नहीं डोलाती तो कौन सा पहाड़ टूट पड़ता.. जानती हो बैंक में कितनी लंबी लाइन लगी रहती है.. तो भी बैठ गई भोग लाने...'

माँ तो बस दम्मी साधे निर्विकार भाव से बैंक की सीढ़ियों पर एक हाथ को रेलिंग के सहारे दूसरे हाथ को अपनी छोटी सी लाठी का सहारा देती हुई अपने को ऊपर की ओर ढकेलती हुई किसी तरह चढ़ी जा रही थी

कई बार ऊपर उम्मीद से बेटे को देखती.. शायद चार कदम पीछे उतर कर उसे पकड़ ले.. लेकिन वह जानती थी हर बार की तरह आज भी उम्मीद करना बेकार है..

सचमुच आज बैंक में बहुत भीड़ थी.. सोमवार का दिन था और कई दिनों के बाद बैंक खुला था तो भीड़ होना जायज भी था घंटों लाइन में खड़े होने के बाद रुपये मिले.. माँ उन रुपयों को जी भर देखने का लोभ संवरण नहीं कर पाई..

संज्ञा शून्य सी न जाने कब तक खडीध रहती..बेटे की बातों ने जैसे उसे नींद से उठाया..

''ये बीस रुपये रख लो माँ.. बस पकड़ लेना.. इधर उध र मत चली जाना कथा कहानी बतियाने.. कंडक्टर से बोल देना अच्छे से चढ़ा देगा और उतार भी देगा.. दस रुपये से ज्यादा भाड़ा मत दे देना पिछली बार की तरह.. तुम तो एकदम से सठिया गई हो...''

माँ समझ गई थी हर बार की तरह आज भी उसके पेंशन से बहू की पाजेब और बच्चों की मिठाईयाँ आएंगी.. और वह आज की रात बिना कुछ खाए ही काटेगी..

उसके पैर घिसटते हुए बस स्टैंड की ओर बढ़े जा रहे थे...

स्तुति गर्ग

कक्षा 11, उम्र 15 साल, पानीपत (हरियाणा)

क्रिसमस

अनाथ आश्रम के सभी बच्चे आज बहुत खुश थे क्रिसमस पार्टी की तैयारी वो हर साल बड़े उत्साह से करते थे।

आश्रम का सबसे छोटा बच्चा जिसे सब बहुत प्यार करते थे तुतलाते हुए बोला यह क्या कल लहे हो नितिन भैया ..नितिन अनाथ आश्रम का सबसे समझदार और जिम्मेदार बच्चा था बहुत प्यार से नन्हे अंश को गोद में उठाकर कहता है आज क्रिसमस है हम सब आज पार्टी करेंगे। केक काटेंगे गाने गायेंगे डान्स करेंगे. तभी एक बच्चा बोला और गिफ्ट भी तो मिलेगा हमें गिफ्ट सुनकर नन्हे अंश की आंखें चमक उठी। नितिन बोला नहीं इस बार शायद कोई गिफ्ट न मिले पर हम सब खूब मस्ती करेंगे ठीक है। अंश खुश हो गया पर नितिन का मन बेचौन हो गया काश इस बार भी गिफ्ट मिल पाते कम से कम अंश को ही मिल पाता.. जो आंटी हर साल उनको गिफ्ट बांटती थी वो पिछले साल करोना में दुनिया छोड़ गयी। उनके पति भी इस महामारी में गुजर गये दोनों के बच्चे नहीं थे .दोनों अनाथ आश्रम के बच्चो को समय–समय पर बहुत मदद करते थे.. नितिन की आंखें भीग गई भारी मन से उसने अपनी जिम्मेदारी पूरी करी शाम को सभी बच्चों ने बहुत सुंदर प्रस्तुति दी अनाथ आश्रम की प्रबंधक कमेटी बहुत खुश हुई। विकास सर जो सभी बच्चों के फेवरेट सर थे ने बच्चों के साथ खूब मस्ती करी 12 बजे हमेशा की तरह केक काटा गया विकास सर ने जब सब बच्चों को गिफ्ट बांटे तो सब बच्चे बहुत खुश हो गये मगर सबकी आंखों में एक प्रश्न भी था सर बोले आप सब को ये गिफ्ट वहीं अंकल आंटी से ही मिला है उन्होंने अपनी वसीयत में अपना सबकुछ हमारे आश्रम के नाम किया था जिससे आप की पढ़ाई और परवरिश अच्छे से हो अंकल आंटी वाकई बहुत अच्छे इंसान थे और तुम सबको बहुत प्यार करते थे और तुम्हारे सांता थे.. कुछ बच्चों की आंखें नम हो गई। कुछ खुशी से झूम उठे ..अंश के कुछ समझ नहीं आ रहा था वो बोला. मुझे छैन्टा क्लॉज ने दिफ्ट दिया, मुझे छैन्टा क्लॉज ने दिफ्ट दिया, उसकी मासूमियत पर विकास सर और सभी बच्चे खिल खिला कर हंस दिये।

अभिषेक चन्दन

कहानी

मेरा नन्हा दोस्त

मैं उनिन्दी अवस्था में अपने बिस्तर पर पड़ा हुआ था। मस्तिष्क में थोड़ी थोड़ी हलचल मची हुई थी, चिन्तन चल रहा था किस तरह आगे की योजना कार्यान्वित हो।

'ठक... ठक... ठक' – बालकनी की ओर खुली खिड़की पर ठोकरें मारने की आवाज आई।

थोड़े अन्तराल पर वैसी ही आवाजें पुनरू सुनाई पड़ी।

आलस्यवश अभी बिस्तर पर ही लेटा हुआ था। इसलिए जानने की कोई कोशिश नहीं की– किस तरह की आवाज है यह?

पुनः 'ठक... ठक' की आवाज आई।

सोचा देख तो लूं माजरा क्या है ?

खिड़की के पास जाकर देखा– सूर्य उदय से कुछ पहले का समय था। अंधेरा थोड़ा थोड़ा छंटने लगा था।

सामने रेलिंग पर कोई चिड़िया बैठी थी, पंखों के मध्य और गले पर हल्की हल्की सफेदी दिख रही थी । बाकी शरीर गहरे काले रंग का था – बस कम रोशनी से ऐसा ही लगा।

उत्सुकता हुई आखिर कौन सी चिड़िया है?

अंधेरा इतना नहीं छंटा था कि कुछ स्पष्ट दिखाई दे।

मैं उसी तरह उस चिड़िया को निहारता रहा।

थोड़ी देर इधर उधर देखने के बाद पास के किसी बड़े पेड़ पर जा बैठी।

घने पत्तों के बीच उसे खोजने की कोशिश भी की। लेकिन वह कहां जा बैठी थी, खोज नहीं सका।

मैं अपनी सामान्य दिनचर्या में लग गया।

शायद दिमाग से यह बात भी निकल गई।

दुसरी सुबह, पौ फटने के पहले का समय।

पुनः 'ठक... ठक' सुनाई पड़ी।

इस बार मैं उठ कर जल्दी से खिड़की तक पहुंचा। देखा कल वाली ही चिड़िया थी। बहुत देर उसे निहारता रहा।

आज उसने थोड़ा ज्यादा समय रेलिंग पर बिताया। और फिर फुर्र से उड़ गयी।

मैं अन्य दिनों की तरह पुनः अपने काम में लग गया।

पौ फटने के समय तीसरे दिन अनायास ही पांव खिड़की की ओर बढ़ चले।

आज थोड़ी देर से वह पहुंची। अपने पूर्व के अंदाज में ही रेलिंग पर अपनी चोंच से 'ठक... ठक' करती रही।

उसकी ठक ... ठक में मैं एक लय महसूस कर रहा था। मैं एक टक उसकी चंचलता निहारता रहा। कुछ देर के बाद वह फिर से फुर्र हो गयी।

मुझे लगा वह कल फिर आयेगी। इसलिए शाम को ही उसी जगह प्लास्टिक के दो छोटे छोटे कटोरे में चावल के दाने और पानी का इंतजाम कर दिया था।

चौथे दिन भी वह पहुंची। थोड़ा झिझकते झिझकते वह मुंडेर से नीचे उतरी और चावल चुगने लगी।

चावल दाना चुगने के बाद वह उड़ चली।

अब यह नियमित रुटीन सा हो चला था। यह रुटीन लगभग महीनों चलता रहा। अब मैं दरवाजा खोल कर सामने बैठा रहता। उसमें अब असहजता नहीं दिखती।

मुझे अपने नन्हे मित्र से आत्मिक लगाव सा हो चला था।

इसी बीच किसी कार्य के सिलसिले में मुझे बाहर जाना पड़ा। और फिर लम्बे समय तक अनुपस्थित रहा। जब लौटा तो सुबह कोई आवाज नहीं आई। उसी समय पर खिड़की खोलकर देखा। उसकी कहीं कोई निषानी नहीं दिखाई दी।

थोड़े इन्तजार के बाद मैं अपने रुटीन में व्यस्त हो गया।

दूसरे दिन भी सुबह होने के कुछ पहले ही खिड़की खोल कर उस का इन्तजार करने लगा।

कहीं भी उसका आभास नहीं मिल पाया।

अब मैं हर रोज सुबह अपने नन्हें दोस्त का इन्तजार करता, ठीक उसी समय।

फिर इंतजार में महीनों गुजर गए।

मैं उस अलग तरह की चिड़िया को पुस्तकों में , गूगल पर ढूंढता रहा – कौन सी चिड़िया थी वह।

'मैग्पाय' – हां यही नाम मिला। एक चतुर और बुद्धिमान पक्षी।

इस अप्रवासी नन्हें पक्षी से मेरी दोस्ती लगभग एक वर्ष चली।

मैंने सोचा इस मित्र को कैसे याद रखूं ?

उसकी चंचलता, बुद्धिमत्ता और कुछ हद तक एक अलग ही श्रेणी की सुन्दरता! मुग्धकारी!

अपने इस मित्र की सम्पूर्ण सुन्दरता से मुग्ध एक फैशन पत्रिका निकालने की योजना बना डाली।

और इस मैगजीन का नाम दिया ''मैग्पाय'' (MAGPIE).

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

प्रकृति की असंख्य नियामतें हमें किसी न किसी रूप से प्रेरित करते रहती है।

उसी नन्हें मित्र से प्रेरित होकर मैं ने यह ''मैग्पाय'' मासिक फैशन मैगजीन निकालना शुरू किया, जिसका प्रथम अंक जनवरी 2020 को नव वर्ष के उपलक्ष में प्रकाशित किया गया था। तब से लगातार यह प्रकाशित होता आ रहा है, बिना किसी रुकावट के। अभी इसका 36 वां अंक निकल रहा है।

निस्संदेह इसकी प्रेरणा मुझे अपने नन्हें, क्यूट से मित्र से ही मिली।

एक अंक के सम्पादकीय के उपसंहार में मैं ने लिखा था–

Let us spread love in the UNIVERSE.

"आइये, विश्व में स्नेह और प्रेम फैलाने का संकल्प लें।"

यह पंक्ति भी उस नन्हें मित्र को देख कर ही प्रस्फुटित हुई थी।

मैं आज भी अपने उस अप्रवासी नन्हें दोस्त का इन्तजार कर रहा हूं।

बाल मजदूर दोहे

डॉ. पंकजवासिनी
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय,

काया कोमल फूल–सी, करे भवन निर्माण।
बचपन अपना त्याग कर, झोंक रहा नित प्राण।।
तीखी धूप प्रचंड है, बालक ढोता ईंट।
वाम विधाता है हुआ, मात्र दिया दुख छींट।।
सूखी काया धूप में, वस्त्र नहीं भरपूर।
पेट –पीठ मिल एक हैं, सुख से जीवन दूर।।
बहे पसीना भाल से, चूकर पहुँचे पाँव।
लिखा भाग्य में है नहीं, मिले नेह की छाँव।।
मात–पिता मजबूर हैं, रखें नहीं सुख–छाँह
क्षुधा–अग्नि विकराल में, खींच लिए धर बाँह।।
वाहन–मिस्त्री कर्म है, बर्तन धुले दुकान।
कलछी होटल में चला, रहता नित हल्कान।
पूँजीपति का दास है, बँधा हुआ जंजीर!
खेल–कूद की उम्र में, हाय बना श्रमवीर!!
भोलापन गायब हुआ, करें बड़ों–सी बात!
दुख ने है सिखला दिया, बनें प्रौढ़ अरु तात!!

लघुकथा

सुमन मलिक तनेजा

खोज

हर थोड़ी देर बाद फोन चेक करती ....रमा ! कंही कोई कॉल मिस तो नहीं हो गयी ,हो सकता है घंटी उसने सुनी न हो ...मैक्सिमम वॉइस कर दी थी बेल्ल कि, क्यूँ नहीं आया अब तक कोई फोन, कंही ...न तो नहीं कर देंगे वो ! नहीं .नहीं ऐसा नहीं होगा, ..अच्छी लग रही थी कल केतकी ..साफ रंग छरहरा बदन, एम.फिल. कि हुई है सीनियर अध्यापिका लगी हुई है, गुण भी ठीक मिल गये थे जनम कुंडली मे ! उनके लड़के के हिसाब से तो बीस ही है अपनी केतकी ..लग तो रहा था बात बन जायेगी! उसकी माँ और बहन अच्छे से बात कर रही थीं केतकी से .. लड़के का तो रंग भी पक्का था..तनख्वाह भी बराबर ही थी दोनों कि .....फिर क्या सोच रहे होंगे वो लोग घर अगर हमारा किराये का है तो उनका भी तो किराये का ही है सोचना तो हमे है !

उन्तीउस बरस कि हो जायेगी अबकी बार केतकी .....माँगा तो नहीं कुछ मुँह से लगा अच्छे लोग हें ..फिर फोन तो आ जाना चाहिये था अभी तक ..सोच रही थी वो ही कर के पूछ ले ...पर सब ने घर मे मना किया है, हम सब तो वंही रेस्टोरेंट मे ही बोल आये थे कि हमें लड़का पसंद है. क्या पता उसे कोई और लड़की पसंद हो ...शायद कंही और बात चल रही हो फिर भी बताएंगे तो सही हाँ या न, मैं ही मिला लेती हूँ फोन ..हेलो सहम के बोली रमा.. जी नमस्ते, जी मैं केतकी कि माँ रमा बोल रही हूँ . .जी क्या विचार बनाया आपने.. लड़का मना कर रहा है ...जी क्यूँ ?..कह रहा है कि हाइट कम है लड़की कि ....जी पर वो तो उसके बायो डेटा मे साफ लिखा था .बता भी दिया था फोन पे. .जी वो लम्बी लड़की चाहता है ...क्षमा चाहता हूँ .लड़के के पिता ने कहा .और फोन रख दिया .....भरभरा के बैठ गयी रमा ...जब बायो डेटा मे लिखा था तो बेकार क्यूँ तमाशा बनाया मेरी बच्ची का, बुझ गया जैसे उसके अंदर कुछ ...तीन घंटा तक खाना पीना गप्पे ...पिकनिक समझ लिया था क्या उन्होने ...हजार से ज्यादा ही रूपया भी खर्च हो गया !!

....कब खतम होगी यह खोज ..भगवन !!!

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

अजय शर्मा

धारावाहिक उपन्यास

तलाश अस्तित्व की

पिक पिक पिक पिक पिक...

अलार्म की आवाज सुनकर यश की नींद खुली। उठकर बिस्तर पर बैठ गया और आदत के मुताबिक दोनों हाथों को मसल कर हथेलियों को चेहरे से स्पर्श करा लिया। अचानक जैसे ही उसकी नजर दीवार घड़ी पर पड़ी, उसके होश ही उड़ गए। घड़ी में सुबह के 10:00 बजे थे। यश को आश्चर्य का जबरदस्त झटका लगा। जब उसने खुद रात को सोने से पहले 6:00 बजे का अलार्म सेट किया था तो फिर अलार्म 10:00 बजे क्यों बजा? बंद दरवाजे से फ्लैट के अंदर कौन आकर 6:00 बजे के अलार्म को 10:00 बजे का अलार्म कर गया और आखिर क्यों?

आश्चर्य के सागर में गोते लगाता ही जा रहा था यश, कि अचानक उसको वही चिर परिचित हंसी सुनाई दी। मानो कोई जलतरंग बज उठा हो और एक पल में ही यश को सारी बात समझ में आ गई। ''मैं तुम्हारी जिंदगीबदल कर रख दूंगी और अब से तुम्हारी जिंदगी में कई अनदेखी और अप्रत्याशित घटनाएं घटित होने लगेंगी।'' यश के कानों में उस अजनबी नारी के कहे मधुर स्वर गूंज रहे थे। लेकिन यह समय इन सब बातों को सोचने का नहीं था। आंधी–तूफान की तरह यश उठा और फटाफट जैसे तैसे तैयार होकर गाड़ी लेकर वह ऑफिस की तरफ जाने वाली सड़क पर निकला तो अपनी फुर्ती और रफ्तार पर उसे खुद आश्चर्य हुआ। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी।

यश की अनुपस्थिति के कारण मीटिंग मजबूरन कैंसिल करनी पड़ी थी। उससे संपर्क करने के सारे प्रयास असफल सिद्ध हो गए थे क्योंकि उसका मोबाइल नॉट रीचेबल बता रहा था। मीटिंग में शामिल होने आया विदेशी प्रतिनिधिमंडल भी नाराज होकर लौट गया था। जबरदस्त कारोबारी नुकसान हुआ था मिस्टर थॉमसन को, और उस समय वह आग उगलती भयंकर मूर्ति बने खड़े थे।

यश को एक शब्द भी बोलने का मौका नहीं मिला था और उसका टर्मिनेशन लेटर उसके मुंह पर मार कर, उसे लगभग धक्का मारकर नौकरी से निकाल दिया गया था। आंखों में आंसू और मन में अंधेरा लिए यश किस प्रकार अपने फ्लैट पर लौटा, उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। घर, परिवार, जिम्मेदारियां, ईएमआई, कार्यक्रम,डरावना भविष्य, बस यही सब उसको नजर आ रहा था। अपने कमरे में आकर, पलंग पर औंधे मुंह पड़कर सिसकियां भरता हुआ वह कब गहरी नींद में सो गया, उसको पता भी नहीं चला।

अचानक मोबाइल की घंटी सुनकर उसकी नींद खुली। दूसरी तरफ आकाश था, उसका दोस्त, ''अरे यार यश, कहां है तू ?और आज ऑफिस क्यों नहीं आया? बिना सूचना के अनुपस्थित रहा। पता है आज कितनी आश्चर्यजनक बात हुई। आज ऑफिस में पुलिस आई थी। साथ में थ्मतंए म्कए थ्ंपए थ्वए ब्इप और गृह मंत्रालय की संयुक्त टीम थी।

हमारे सॉफ्ट ड्रिंक सैंपल्स के कंटेंट्स की सीक्रेट फाइल जाने किसने उनके पास भेज दी? पूरे प्लान के साथ छापा मारा है। कई गिरफ्तारियां हुई हैं। बैंक अकाउंट भी सील कर दिए गए हैं। प्रोजेक्ट पूरी तरह बर्बाद हो गया है। बदनामी और कानूनी कार्रवाई होगी सो अलग। मिस्टर थॉमसन तो जैसे तैसे छुप कर निकल गए, वरना मारे जाते। अच्छा हुआ तू वहां पर नहीं था वरना तुझ पर भी गाज अवश्य गिरती। खैर, मैं बाकी डिटेल्स बाद में बताऊंगा। बाय, टेक केयर। ''आकाश ने फोन रख दिया। यश के जेहन में मानो आंधियां सी चलने लगीं।यदि आकाश का बताया हुआ यह घटनाक्रम सच है, तो फिर वह क्या था जो स्वयं उसके साथ सुबह 11:30 पर घटा था? बॉस ने स्वयं उसे डांट कर नौकरी से निकाला था। उसने तुरंत अपने बैग में से वह टर्मिनेशन लेटर तलाश किया लेकिन वहां एक ब्लैंक पेपर था। वि उल ळवक! यश सर थाम कर बैठ गया, दोनों हाथों से।

यह कैसा इंद्रजाल है ?वह किस अदृश्य शक्ति के चंगुल में फंस गया है? सोचते ही उसे अपने कमरे में एक भीनी भीनी खुशबू का अहसास हुआ और सुनाई दी एक विचित्र हंसी, ''कहा था ना कि तुम मेरी ताकत के बारे में नहीं जानते हो। मैं तुम्हारा वजूद बना भी सकती हूं और मिटा भी सकती हूं। लेकिन बनाऊंगी ही, मिटाउंगी नहीं, अगर तुम मेरी

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

बात मानते रहे तो।'' यह कहकर वह जलतरंग ध्वनि गायब हो गई। उसकी मनोदशा बहुत विचित्र हो गई। क्या करे? किससे कहे? कौन विश्वास करेगा? अंततः काफी जद्दोजहद के बाद उसने स्वयं को नियति के हवाले कर दिया और चादर ओढ़ कर दोबारा सो गया।

शाम के लगभग 7:00 बजे थे,जब उसकी आंखें खुली। उसके सिरहाने एक नीला बंद लिफाफा रखा हुआ था। उसमें वही चिर परिचित खुशबू आ रही थी। लपक कर खोला तो लिखा था– होटल कैसिनो रॉयल, रात 8:00 बजे, नौ नंबर से गेम शुरू करो। यंत्र चालित सा उठकर यश तैयार हुआ और तत्काल कैब बुलाकर होटल पहुंच गया।

अन्दर जन्नत की रंगीनियां बिखरी पड़ी थीं। पहली बार किसी होटल में गैमबलिंग के लिए गया था यश। 9 नंबर पर दांव लगाकर खेल शुरू किया और जीत गया। उसके बाद जो सिलसिला शुरू हुआ पूरे पचास लाख पर जाकर ही रूका।हर बार उसके कानों में वांछित नंबर पर दांव लगाने के निर्देश आते रहे और रोबोट की तरह उनकी पालना करते हुए वह खेलता गया और जीतता चला गया। अंत में खूब तगड़ा खा–पीकर, टैक्सी में बैठकर 50 लाख की रकम लेकर अपने फ्लैट पर पहुंचा तो उसके पांव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे।

एक झटके में इतनी बड़ी रकम कमा कर वह अपने आपको एक अजीब सी रौ में बहता हुआ महसूस कर रहा था। घर पहुंच कर अपने बेड पर बैठा तो वही नारी आकृति अपनी चिर परिचित छाया वाली रहस्यमयी छवि में दीवार पर उभर कर बोली, ''देखा मेरी ताकत का जलवा, तुम्हारी कामयाबी की शुरुआत। अब तुमको वह दो कौड़ी की नौकरी करने की भी जरूरत नहीं है। ऊपर से वह सॉफ्ट ड्रिंक प्रोजेक्ट भी टल गया है। तुम्हारी अंतरात्मा पर पड़ा बोझ भी हट गया। देखते जाओ आगे आगे क्या–क्या होता है? तुम्हारी जिंदगी के नए अध्याय शुरू हो गए हैं। बस याद रखना कि मुझे तुम्हारी वफादारी चाहिए। मुझे धोखा देने का मतलब है, एक दर्दनाक मौत और तुम्हारे पूरे परिवार की बर्बादी।

''यश इस समय एक अलग ही मनःस्थिति में विचरण कर रहा था। उसने अपने आप को पूरी तरह उस अजनबी ताकत के सामने समर्पित कर दिया था। कल क्या होगा यह भूल कर वह मीठे सपनों में खो गया था। आज की रात कुछ अधिक नशीली और मादक थी। रहस्यमयी नारी आकृति मुस्कुराकर गायब हो गई थी। अपने सुंदर और सुखमय भविष्य के विषय में सोचते हुए यश भी गहरी नींद के आगोश में सो गया।

माँ, मनस्वी वंदन

राकेश छोकर, सहारनपुर

माँ
अमिट हैं
मेरे मानस स्मृति पटल पर
कि...इंसान भले मर जाए
पर कर्म–विचार जिंदा रहते हैं
यहीं गुणता आया हूँ मनीषियों से
जो सिखाया था तुमने कायदे से।
माँ
तुम ह्रदय मंदिर में स्पंदित विचार हो
और मेरे शीश पर रखी
सद्‌कर्मों की शीशमणि
असाध्य दुर्भिक्षकाल में भी
माँ
तुम्हारे द्वारा रचित संवेदना का धरातल
वैभव उर्वरा से समृद्ध हो
बोये बीज को धनवान करता रहा
प्रेम की अनंत गहराई तक
अनंत आकाश तक
यहीं तो है शाश्वत संबंधों की प्रगाढ़ता
और सार्वभौमिक सच।
माँ
तुम्हारा सानिध्य ही कराता है
ईश्वर से साक्षात्कार
देता है जीने का हौसला
और संघर्ष की जिजीविषा
माँ
आज उस भागीरथी माँ को वंदन
जिसने इस धरती को बनाया जीवनदायी
पावनमयी धरती पर बहा दिया
ज्ञान–स्नेह का अविरल प्रवाह
आल्हादित किया भागीरथ जन्म
तुम्हारी कर्मशीलता की पावनता
निरंतरता में रचता रहा इंद्रधनुष
ईश्वरीय अनुकंपा ही तो रहीं
कि कभी रिक्त न हुई
अमृत द्रव्य से तुम्हारी अंजुलि
मेरे जीवन को फलित करती रही
यहीं संजीवनी
खिलती रही जीवन उपवन की कली कली
हे ईश्वर रूपी माँ
तुझे कोटिशः मनस्वी वंदन
माँ मनस्वी वंदन।

शशि महाजन, नाइजीरिया

धारावाहिक राम

वन गमन

इससे पहले कि राम कैकेयी के कक्ष से बाहर निकलते, समाचार हर ओर फैल गया, दशरथ पिता और राजा, दोनों रूपों में प्रजा के समक्ष दोषी घोषितकर दिए गए थे।

राम के निकलते ही सेवक ने सूचना दी,

"सभी आपकी मुख्य कक्ष में प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

राम बिना कोई प्रश्न किये मुख्य कक्ष की ओर मुड़ गए।

द्वार पर पहुँचते ही लक्ष्मण उनसे लिपट गए,

"आप चिंता न करें भईया, पूरा जन समूह और माताओं का आशीर्वाद आपके साथ है।"

राम शांत मन से कौशल्या के सामने खड़े हो गए,

"मेरी माता की क्या आज्ञा है ?" राम ने कहा।

"आज्ञा नहीं है, विश्वास है, तुम ऐसा कुछ नहीं करोगे, जिससे निर्दोष मारे जायें।" कौशल्या ने द्रवित होते हुए कहा।

"और छोटी माँ आप क्या चाहती हैं?

"राम ने सुमित्रा के समक्ष खड़े होकर कहा।

"राम, मैं न्याय चाहती हूँ।" सुमित्रा ने दृढ़ता से कहा।

"और न्याय क्या है ?" राम ने कहीं दूर देखते हुए कहा।

"अपने अधिकार की रक्षा करना न्याय है। "

सुमित्रा के स्वर में नियंत्रित क्रोध था ।

"और अधिकार क्या है ?" राम ने सुमित्रा की ओर अपनी गहरी आँखें से देखते हुए कहा।

"अपनी जिजीविषा के लिए संघर्ष करना प्राकृतिक अधिकार है।" सुमित्रा के स्वर में चुनौती थी।

"तो मेरे वन गमन से उसका हनन कैसे होगा, जिजीविषा तो वन में भी पर्याप्त है।" राम ने सरलतापूर्वक पूछा।

"परन्तु राजा बनना तुम्हारा अधिकार है।" सुमित्रा ने जोर देते हुए कहा।

"और यदि इसे मैं अपना कर्तव्य मान लूँ तो ?" राम ने स्नेह पूर्वक सुमित्रा के समक्ष हाथ जोड़ते हुए कहा।

"सीता, तुम क्या कहती हो?"

राम ने सीता के समक्ष आकर कहा।

"पिता और राजा दोनों के आदेश का उल्लंघन मात्र तभी हो, जब जन साधारण का अहित होने का भय हो, अपने व्यक्तिगत हितों को न्याय मानकर, राज्य में अराजकता फैलाना, मानवता के लिए हानिकारक।" सीता ने राम की आँखों में देखते हुए कह।

"और तुम लक्ष्मण क्या कहना चाहते हो?

"राम ने लक्ष्मण के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा ।

"वचन का निरादर सभ्यता का निरादर है, पिता की वचन पूर्ति पुत्र को करनी ही चाहिए, वह यदि पिता की संपत्ति तथा यश का उत्तराधिकारी है तो, वचन का भी है।" लक्ष्मण ने विनम्रतापूर्वक कहा।

राम मुस्करा दिये और मुख्य द्वार की ओर मुड़े, सीता, लक्ष्मण और मातायें भी उनके साथ चलीं। द्वार के बाहर पूरा नगर उमड़ा खड़ा था, सब जोर जोर से कह रहे थे,

"राम हमारा राजा है।"

द्वार पर बने एक छोटे मंच पर राम खड़े हो गए, राम ने हाथ जोड़ते हुए कहा,

"राम अपनी प्रजा को यह विश्वास दिलाना चाहता है कि पूरा राजपरिवार यह मानता है कि, इन स्थितियों में वन गमन एक उचित निर्णय है, मेरा राजद्रोह आप सबको युद्ध, अर्थात् विनाश की ओर ले जायेगा, मेरा कर्तव्य आपकी युद्धों से रक्षा करना है, न कि उस ओर झोंकना। जिस राजा ने जीवन भर आपकी सेवा की है, इस आवश्यकता की घड़ी में आप उन्हें मित्र की तरह वचन पूर्ति में सहायता दें, और भरत के आने पर उसे वहीं स्नेह दें, जिस पर उसका अधिकार है।"

जनसामान्य शांत हो गया तो राम ने फिर कहा,

"जाने से पहले मैं चाहता था, मेरा परिवार और प्रजा मेरे निर्णय से सहमत हों, ताकि आने वाले कठिन समय में हम सबका आत्मबल बना रहे, और हम सब याद रखें कि व्यक्ति कोई भी हो, समाज के हित के समक्ष उसके हित तुच्छ होते हैं।"

जनता राम के वचन सुनकर भाव विभोर हो उठी, आर्य सुमंत ने आगे बढ़कर कहा, "राम, इस नई यात्रा के लिए शुभकामनाएँ, आज तुमने बहुत कुछ व्याख्यायित किया है, जाते जाते तुम राजा भी हो उठे हो, क्योंकि राजा प्रजा का दार्शनिक भी होता है, उनके विचारों को दिशा देना और उसमें उनका विश्वास बनाए रखना, उसका मुख्य काम होता है, जो तुमने आज कर दिखाया है।"

दुख की इस बेला में भी सबके मन परम संतोष से भर उठे।

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

डॉ. सुनील जाधव

धारावाहिक कहानी

बल्लू नायक की बेटी

'सावधान हिंसक व्यक्ति फिर एक बार उस व्यक्ति पर तूने हाथ उठाया तो इसके परिणाम अच्छे नहीं होंगे। तू शक्तिशाली होकर कमजोरों पर प्रहार करता है, तुझे शरम आनी चाहिए। वह स्त्री बिलख रही है, तेरे चरणों में अपनी सुहाग की रक्षा के लिए .. उसकी मासूम बालिका उसका गला सूखा जा रहा है। फिर भी तुझे दया नहीं आती। अब एक भी प्रहार चाबुक का तूने किया तो, जिस हाथ से तू प्रहार कर रहा है, उस हाथ को समूल उखाड़ कर फेंक दूँगी.... तू जीवन भर इस कार्य के लिए पछताता रहेगा ....सोचेगा, कि काश.. तूने बात मान ली होती।" उस वक्त जजिया कर न दे पाने के कारण मुगल सिपाही उस व्यक्ति की पिटाई कर रहा था। वह व्यक्ति प्रत्येक कोड़े के प्रहार के बाद दिल को चीरने वाली आवाज करता। उसका दर्द उसकी आवाज से आस–पास के परिसर के जन के ह्रदय को प्रभावित कर रहा था। वह बार–बार कहे जा रहा था, "मैं जजिया नहीं दूंगा। चाहे मेरे प्राण क्यों ना निकल जाएँ। " ऐसे में उसका परिवार इस भयानक यातना को कैसे सह सकता था। उस व्यक्ति की पत्नी और उसकी मासूम बालिका अपने पति और पिता की रक्षा के लिए सिपाही के पैरो में लिपट कर माफी माँग रहे थे। किन्तु मुगल सिपाही बार–बार उन्हें अपनी ठोकरों से ढकेल रहा था। इस भयानक दृश्य को देखकर लोग मूक दर्शक बने देख रहे थे, किन्तु किसी की हिम्मत नहीं हुई कि, उस मुगल सिपाही को रोक सके।

ऐसे में एक आवाज आयी। वह आवाज थी मल्लुकी बंजारन की। मल्लुकी नवरात्रि महोत्सव की ओर जा रही थी। रास्ते में उसने दृश्य देखा और उससे रहा नहीं गया। उसने उस सिपाही को दूर से ललकारा और अपने कृत्य को तुरंत रोकने का आदेश दिया। पर वह मुगल सिपाही अहंकार में चूर था। उसने मल्लुकी को जवाब देते हुए कहा, " तुम कौन होती हो मुझे रोकने का आदेश देने वाली और इस मुगल को धमकी दे रही हो। हाथ जड से उखाड़ ने की। मैं बादशाह का सिपाही हूँ.. जिसने सारे हिंदुस्तान पर बादशाहत कायम की हैं। तुम उसे ललकार रही हो, धमकी दे रही हो। गुस्ताख .. .तुम्हें इसकी सजा मिलेगी।" उसने चाबुक मल्लुकी पर चलाया। किन्तु मल्लुकी एक वीरांगना थी। वह युद्ध के सारे दांवपेच और हथियार चलाना जानती थी। अपनी रक्षा और दूसरों की रक्षा कैसे करनी है, उसे अच्छी तरह पता था। उसने तुरंत उसके चाबुक को अपने बाएं हाथ से पकड लिया और उसे अपनी और झटके से खींचा। जिससे चाबुक सिपाही के हाथों से छूट गया और वह जमीन पर धड़ाम से गिर गया। वह क्रोध से आगबबूला हो गया। उसने अपने कमर की तलवार निकली और मल्लुकी पर चलाई। मल्लुकी ने तलवार चलाने से पहले ही उसका हाथ पकड़ लिया और अपने पैरों से उसके छाती पर पूरे जोर से प्रहार किया। जिससे वह सिपाही वहीं जमीन पर गिर गया। प्रहार इतना भयंकर था कि, उस सिपाही ने उसी वक्त अपना दम तोड़ दिया। सिपाही को मरते देख बाकी सिपाही इकट्ठा हो गये और उन्होंने एक साथ मल्लुकी पर तलवार चलाई। मल्लुकी ने भी फुर्ती से पाँचों सिपाही को पल भर में ही धराशायी कर दिया।

मल्लुकी दिल्ली में यमुना नदी के किनारे चल रहे नवरात्रि के महोत्सव में अपनी अन्तरंग सखियों के साथ शामिल होने के लिए आई थी। वह अपनी सखियों के साथ गोपनीय रूप में उसे झट से वस्त्र बदल दिए और अब वह एक सुंदर राजकुमारी की भांति लगने लगी थी। जब वह अपनी सहेलियों के साथ मेले में निकली तो, प्रत्येक युवाओं के दिल की धड़कनें तेज हो गयी थीं। उन्होंने ऐसा सुंदर रूप अपने जीवन में कभी देखा ही नहीं था। मल्लुकी का सौंदर्य स्वर्ग की अप्सराओं में भी लज्जा उत्पन्न करने वाला था। हर युवक उसे देखकर पाने, मन में उसे अपनी दिल की रानी बना रहा था। सबके मन में एक ही सवाल था कि, काश यह मेरी होती। पता नहीं इतनी सुंदर लड़की किसके भाग्य में लिखी होगी।

मल्लु की अपनी सहेलियों के साथ मुस्कराती, हँसी–ठिठोली करती मेले का आनंद उठा रही थी। उसकी मुस्कान से सारा परिसर मानों खुशियों से भर गया था। उसकी आने की आहट मात्र से खुशियों की वर्षा हो रही थी। लोग उस आनंद से भीग कर आनंद में डूब रहे थे। वह जहाँ से भी गुजरती, ताजा फूलों की तरह महकती।

मल्लुकी ने नवरात्रि में देवी के दर्शन किए और जैसे ही

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

वह बाहर आयी तो उसके सामने एक वीर, तेजस्वी युवक आता हुआ नजर आया। दोनों ने एक दूसरे को देखा। मानों दोनों एक दूसरे के लिए ही बने हो। युवक ने उस मल्लुकी से कहा, ष्दिल में हलचल मचाने वाली, हे सुंदर लड़की तुम कौन हो? आज पहली बार तुम्हें देखकर मेरे स्थिर ह्रदय में हलचल हुई है। तुम मेरे ह्रदय में बस गयी हो। हे सुंदर मुस्कान वाली, ताजा फूलों की महक से अपनी और मुझे आकर्षित करने वाली सुन्दरी तुम कौन हो? यदि तुम हां कहो तो मैं इसी वक्त तुमसे विवाह करने के लिए तैयार हूँ।"

मल्लुकी भी उसे देखकर प्रभावित थी। उसने भी मन ही मन उसे अपना मान लिया था। पर वह लड़की थी.. पहल कैसे करती। उसे मौका मिला गया था। किन्तु पहली मुलाकात में उसे अपना बनाना ठीक नहीं था। उसने उत्तर देते हुए कहा ष्हे वीर और तेजस्वी युवक, तुम भी मुझे ठीक लगे। किन्तु तुम सिर्फ मेरा सौन्दर्य देख रहे हो। यह सुंदर शरीर हथियार चलाना भी जानता है। तुम चाहो तो एक बार हाथ आजमाकर देख सकते हो। तुम्हें पता चला जायेगा मैं सिर्फ सुंदर नहीं वीरांगना भी हूँ।" युवक मुस्कराया और उसने कहा "मैं स्त्रियों पर शस्त्र नहीं उठाता, यह मुझ जैसे वीरों को शोभा नहीं देता। स्त्री तो पूजनीय होती हैं, माँ और बहन के समान। तुम तो जीवन संगिनी बनने योग्य हो, तो फिर मैं तुम्ह पर शस्त्र कैसे उठा सकता हूँ?" मल्लुकी ने इस पर अपना जवाब देते हुए कहा "वीर युवक, तुम योद्धा लगते हो। एक योद्धा का कर्तव्य होता है कि, यदि उसे कोई चुनौती दे तो उसका सम्मान करना चाहिए और तुम स्त्रियों को पूजनीय और जीवन संगिनी आदि वाक चातुर्य से युक्त बातें कर मुझ से बचना चाहते हो, या फिर तुम मुझसे भयभीत हो गये। यदि तुम वीर हो तो इसका परिचय दो, तो मैं तुम्हारे बारे में जरूर सोचूँगी।"

युवक को मल्लुकी की बात चुभ गयी। वह मल्लुकी से तलवार का द्वंद्व युद्ध करने के लिए तैयार हो गया। मेले से दूर जंगल में तलवार द्वंद्व के लिए स्थान का चयन किया गया। दोनों में तलवार का द्वंद्व आरम्भ हो गया। तलवार के प्रहार एक दूसरे पर चल रहे थे। इधर मल्लुकी की तलवार बिजली के समान चमक रही थी, तो वहीं युवक की तलवार बादल के समान गर्जन कर रही थी। युवक समझ गया था कि यह कोई मामूली लड़की नहीं। यह तो सच में ही वीरांगना है। दो तलवारों का एक दूसरे पर प्रहार होते ही, उसमें से चिंगारियां उड़–उड़ कर यहाँ–वहाँ गिर रही थी। मानो आस–पास चिंगारियों की वर्षा हो रही हो। प्रत्येक उड़ने वाली चिंगारी दोनों के वीरता का परिचय दे रही थी। सामने स्त्री और पुरुष नहीं लड़ रहे थे, बल्कि दो योद्धा आपस में द्वंद्व युद्ध कर रहे थे।

यह अद्‌भुत दृश्य देखने के लिए वहाँ कोई नहीं था। वरना सारे हिंदुस्तान में चर्चा का विषय बन जाता। दो तलवार आपस में टकराई और द्वंद्व से दोनों का सम्बन्ध प्यार में कब बदल गया पता ही नहीं चला।

वे दोनों अक्सर छुप कर मिला करते थे। प्रेम कभी भी छिपाने से छिपता नहीं है। बल्कि इतिहास गवाह है कि, एक न एक दिन सारी दुनिया को पता चला ही जाता है। इस बात को दोनों अच्छी तरह जानते थे। मल्लुकी ने अपने प्रियकर सुखा से कहा ''सुखा, तुम मुझसे घनिष्ठ प्रेम करते हो। मेरे लिए तुम कुछ भी कर सकते हो। मैं तुम्हें अपने प्राणों से भी अधिक प्रेम करती हूँ। किन्तु क्या सुखा .. हम ऐसे ही कब तक मिलते रहेंगे। एक न एक दिन हमारे प्रेम की जानकारी सबको हो जायेगीऔर उस दिन मेरे बाबा को बहुत क्रोध आएगा। उस दिन क्या होगा मैं नहीं जानती। मैं अपने बाबा के क्रोध को अच्छी तरह जानती हूँ। मुझे भय है कि, कहीं हम इस कारण बिछड़ न जाएं, पर एक काम हो सकता है, हमारा प्रेम दुनिया के सामने आये इससे पूर्व हम खुद ही अपने बाबा को बता दें। अधिक से अधिक क्या होगा हमें दण्डित ही करेंगे। हमारे प्राण तो नहीं लेंगे। क्योंकि वे मुझे बेहद प्रेम करते है, उनके प्राण मुझ में बसे है। भला अपने प्राण वे कैसे ले सकते हैं।" सुखा ने इस बात को सुना और अपनी प्राणों से प्रिय बन चुकी मल्लुकी से कहा "मल्लुकी तुम मेरे भी प्राण हो। तुम्हें मेरे रहते किसी से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं। ना ही अपने बाबा के सामने स्वयं इस रहस्य को उजागर करने की आवश्यकता है। तुम्हें मुझ पर विश्वास है, मेरी वीरता पर विश्वास है। तो यकीन करना, मैं स्वयं तुम्हारे बाबा के पास आकर तुम्हारा हाथ मांगूंगा। भले ही मुझे उनसे द्वंद्व क्यों न करना पड़े।" मल्लुकी खुश हुई उसके ह्रदय में जो बात रुकी हुई थी उस वेदना से उसने मुक्ति की साँस ली। उसका प्रियकर सुखा अब स्वयं मल्लुकी के पिता से बात करनेवाला था।

बल्लूनायक बिंजरावत मल्लुकी के पिता आस–पास के सोलह नायकों के राजा थे। वे पिछले २३ पीढीयों से देश–विदेश में गेरू, खोया, रसद पहुंचाना आदि का व्यापार करते थे। उनके पास व्यापार के लिए लगभग एक लाख बैल हुआ करते थे। जिनका प्रयोग व्यापार की आवाजाही के लिए होता था। अभी उनकी उम्र ६० के आस–पास थी। उनका कद करीब ७ फिट, शरीर लोहे के समान मजबूत था। वे एक वीर पुरुष एवं योद्धा थे। वे तांडो के नायक होने के बावजूद भी एक राजा की तरह अपना जीवन जीते थे। उनके सैनिक अस्त्र–शस्त्रों तथा तोपों से युक्त थे। उन्होंने अपने जीवन में अब तक कोई भी युद्ध हारा नहीं था। उनके पास शक्ति के साथ युक्ति भी थी। यही गुण उनकी बेटी मल्लुकी में आ चूका था।

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

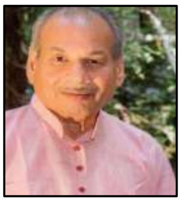

संस्मरण

कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य'

युवावस्था में सैनिक बनने का जोश

अक्तूबर 1971, पी.टी.टी.सी. सहारनपुर, मैं पोस्टल असिस्टेंट के रूप में शुरू की ट्रेनिंग कर रहा था। ढाई महीने की ट्रेनिंग जीवन का आधार बन रही थी। सेंटर में व्यस्त जीवन, प्रातः चार बजे जग जाना, छः बजे पी.टी. ग्राउंड में चालीस मिनट पी.टी., वहाँ से सीधे कैंटीन में नाश्ता और फिर थ्योरी/प्रेक्टिकल के क्लॉसेज, मेस में दोपहर का भोजन, पाँच बजे तक क्लास, शाम के गेम्स, लाइब्रेरी, 8–9 बजे शाम का भोजन। बैरक नुमा बड़े हाल में अपना बिस्तर, बगल में लॉकर, टेबल कुर्सी। दस बजे सो जाना, वहाँ की व्यस्त दिनचर्या। बीच–बीच में टेस्ट भी हो जाते। सभी शिक्षक विभाग के ही थे, श्रीवास्तव जी, शर्मा जी, सिद्दीकी जी, गुप्ता जी, राम सिंह जी पीटी इंस्ट्रक्टर और मेस मैनेजर, प्रिंसिपल एच.आरत्र. सोनी जी, वाईस प्रिंसिपल कृष्णाधीश जी, जो बाद में प्रिंसिपल बने थे। मुझे मेस सेक्रेटरी चुना गया था जो सोशल वर्क कहा जाता था। फाईनल परीक्षा हुई तो प्रशिक्षणार्थियों को सम्मानित किया गया। पाँच पुरस्कार थे जिनमे तीन मैंने प्राप्त किए थे।

बेस्ट इन प्रैक्टिकल, बेस्ट इन सोसल वर्क और सेकंड बेस्ट इन थ्योरी। ढाई महीने का प्रशिक्षण जीवन में लग्न और ईमानदारी का पाठ जीवन की नींव बन चुका था।

उसी समय 1971 भारत–पाक युद्ध छिड़ चुका था। सहारनपुर तक लड़ाकू जहाजों की गर्जना सुनी जा रही थी। देश भक्ति का जज्बा कूट कूट कर भर रहा था। संयोग, कि सेना डाक सेवा की प्रतिनियुक्ति के लिये वालंटियर्स माँगे गये थे और मैंने भी ए.पी.एस. (Army Postal Service) में वारंट अफसर बनने का फार्म पी.टी.टी.सी. से ही भेज दिया था।

पहली नियुक्ति उज्जैन आरएस पोस्ट ऑफिस में हुई और 16 दिसंबर 1971 को मैंने 15 दिन की लर्नर ट्रेनिंग शुरू कर दी।

04 जनवरी 1972 से मेरी पोस्ट ऑफिस की सेवा शुरू हो गई थी। मनी ऑर्डर बुकिंग और सेविंग बैंक काउंटर का चार्ज मुझे मिला। दो तीन सप्ताह के बाद पोस्टमास्टर ने मुझे सब अकाउंट का कार्य भार दे दिया और काउंटर से अलग बैक ऑफिस तथा पोस्टमास्टर के सहायक के रूप में मेरी सेवा हो रही थी।

अपनी पत्नी श्रीमती पद्मा जी को उज्जैन ले आया। इसी बीच मुझे ए.पी.एस. में जाने का काल आ गया।

मुझे ए.पी.एस. में न जाने के लिए हमारे सुप्रियेंडेंट पोस्ट ऑफिस ने काफी मना किया, यहाँ तक कि डिप्टी एस.पी. को मुझे समझाने के लिए भेजा, परंतु मैंने ए.पी.एस. में जाने का पहले ही निश्चय कर लिया था। अतः मुझे भेजना पड़ा।

पद्मा जी को वापस गाँव भेज कर ए.पी.एस. के लिये इंदौर के सेना भर्ती ऑफिस के द्वारा चुने जाने के बाद उज्जैन आर.एस. PO से रिलीव होकर 16 दिसंबर 1972 को ए.पी.एस. ट्रेडिंग सेंटर कामटी, नागपुर में रिपोर्ट किया, और फिर शुरू हो गई सेना की बेसिक ट्रेनिंग।

आन्या रॉय
कक्षा–छठी

प्रकृति

मानवता का क्षरण हो रहा
ये कैसी युग की मजबूरी।
बंद कमरों में रहने लगा
प्रकृति से बढ़ गई दूरी।
कितना प्यारा रिश्ता था
मानव और प्रकृति का।
एक दूसरे पे हो आश्रित
लक्ष्य पूरा होता जीवन का।
खुशहाल था तब जीवन
हरियाली का जब साथ था।
मानव के सारे साधन
प्रकृति के जब हाथ था।
जानें कैसी आंधी चली
विकासशील के होने का।
तहस नहस किया प्रकृति
नाम दिया नई खघेज का।
नही समझा सकता कोई
प्रकृति से जब मुख मोड़ा
अगली पीढ़ी को दोगे क्या?
नही बचेगा जब साधन थोड़ा।

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

समीक्षा

डॉ. सुशीला ओझा

रमा शर्मा का साहित्य

रमा शर्मा, जापान

साहित्य वारिधि के मंथन से निकली 'रमा जी' साहित्य की श्री हैं, वैभव हैं, ऐश्वर्य हैं, विभूति हैं और जब रमा के साथ पूर्णिमा का पावन शरद वाणी और शब्दों में अमृत रस छलकता है तो समष्टि की मंगलमयता, नई चेतना, नई दिशा का प्रेरणा स्रोत बन जाती है। रमा जी साहित्य, संस्कृति, समाज की ऐसी वटवृक्ष हैं जो अपनी घनी छाँव से राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय जगत को अपनी शीतलता, समरसता, समावेशी भावनाओं से समादृत करती हैं। उनके साहित्य में सहित भावना की व्यापकता है। 'रमा जी' पूर्णिमा की ज्योत्सना की तरह धवल, निर्मल, शुभ्र हैं। उनकी सोच और विचारों के, शब्दों के मोती से समष्टि की अभ्यर्थना ही साहित्य सेविका, साधिका का मंदिर है और पूजा भी। साहित्यकार किसी देश, काल या भाषा की परिधि में बंधकर नहीं चला करते। वह साहित्य, संस्कृति, समाज में जो कुछ उत्कृष्ट है, उदात्त है उस व्यापक फलक को, उन परिस्थितियों की गहराई में उतरकर, भावों की सुर सरिता में डुबकी लगाकर, शब्दों के मोती का चयन करता है। शब्द ब्रह्म है और उस ब्रह्म को आभ्यंतर में प्रविष्ट करा कर आनंदमय कोष की परिपूर्णता से छलकता शुद्धता का वह अखंड दीप प्रज्वलित करता है जो ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' का मार्ग प्रशस्त करता है। अपनी जड़ों का मिट्टी की गहराई में अभिसिंचित होकर ही आत्मा के उन्नयन की परिकल्पना चरितार्थ हो सकती है। श्रमा जीश की जड़ें अपनी मिट्टी की सुगंध से सुवासित हैं। उन डालियों में जो शब्द पुष्प खिले हैं उसकी खुशबू सम्पूर्ण मानवता को मुग्ध कर देती है। रमा जी की साहित्यिक गतिविधियों में सुर सरिता की धारा है जिसमें मातृत्व का सुधोपम स्तन्य पान का स्वाद भी है। साहित्य, संस्कृति, समाज भारतीय पाक कला के चतुर्थ स्तंभ पर उनकी रचनात्मकता की छत खड़ी है। 'रमा जी' का व्यक्तित्व बहुआयामी है। उनकी संप्रभुता का स्रोत लोक चेतना है। विश्व विजय की कामना, मानवता, कल्याण उनके भावों के समुद्र के ज्वार हैं जो छलकते हैं तो अपनी मिट्टी की पूजा, अर्चना करते हैं। उनका साहित्य रूपी यज्ञ, अनुष्ठान के पावन धूम आकाश में काले मेघ बनकर धरती को शस्यश्यामला बनाने के लिए विनम्रता से झुक कर धरती को उपकृत करते हैं। रमा जी 'जनमन मंजु मुकुल मल हरनी' हैं उनके व्यक्तित्व में सर्वजन चेतना का दिव्य माधुर्य है। विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने की अद्भुत कलात्मकता पारदर्शिता, दूरदर्शिता है। अन्तर्राष्ट्रीय संवाद की खुशबू से पर्यावरण को शिखरत्व प्रदान करने की गजब की उत्कंठा, जिजीविषा से गमकता व्यक्तित्व है। वे साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक सरोकारों से प्रतिष्ठित सुपल्लवित, सुपुष्पित, सुप्रतिफलित उदार चेत्ता सर्जक हैं। स्रष्टा और द्रष्टा का अपूर्व समन्वय 'रमा जी' सृजन के द्वार के महनीय कलश हैं। 'रमा जी' लक्ष्मी स्वरूपा हैं इसलिए वे नारी के शक्ति वंदना की पुरजोर वकालत करती हैं। उनकी रचनाओं में नारी विमर्श की पैनी धार है। शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार, अनाचार, बलात्कार, बर्बरता की अंधी गलियों से नारियों को निकालकर शुभ्रता, उज्ज्वलता के नव्य प्रकाशपर्व में रख कर उनकी प्रकाशिनी शक्ति को उजागर करना ही इन की सृजनशीलता का मूल स्वर है। अदम्य साहस, आत्म निर्भरता, आर्थिक संपन्नता के माध्यम से स्त्रियों में अलख जगाना चाहती हैं रमा जी। कवयित्री के मन में एक प्रश्न बार बार उठता है–

परिधि के बाहर विस्तृत आकाश से प्रश्न करता हैं कि आखिर स्त्री ही क्यों अभिशप्त है? शोषण के दो पाटों में पिसने के लिए क्यों मजबूर है? वह सृजनमयी है, उसमें संबंधों की कितनी सुन्दर स्वर्णिम बालियाँ मोती की तरह पिरोयी हुई है। रुनझुन आती है, गुनगुनाती है। सरस्वती की वीणा के सप्त स्वरों का अनुगुंजन उसमें समाहित है। स्वर, लय, ताल, छन्द से महाकाव्य के शीर्ष पर अधिष्ठित वह माँ है, पत्नी है, बेटी है, बहन है। हर संबंधों की प्रथम श्रृंखला उसी से बँधी है फिर सिर्फ वह ही क्यों दासता की जंजीरों से बंधी है–

''औरत हूँ/माँ हूँ/पत्नी हूँ/हर रिश्ते हर बात मैं ही यों रहूँ..''

स्त्रियाँ यातनाओं की जंजीर में जकड़ी हुई मूक, बधिर, अंधी बन सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति बनी हुई है। यही उनकी नियति बन गई है। आदर्श, मर्यादा, कानून के सारे संविधान स्त्रियों के लिए ही हैं। मर्द की भोग्या बनी पिंजरा तोड़ने को छटपटाती है, कसमसाती है, गिड़गिड़ाती है। गर्भ में पल रहा बच्चा उसके लहू के एक–एक बूंद से अभिसिंचित है। गर्भावस्था का दारुण कष्ट नौ महीने तक उठाना कितना कष्टदायी है। फिर भयंकर प्रसवपीड़ा के पश्चात माँ का पुनर्जन्म होता है, बच्चे का नया जन्म होता है। पीड़ा सही उसने और बच्चे का नाम

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

पिता के नाम पर पड़ा। द्वार पर पवरिया नाच रहे हैं, आँगन में चेरिया नाच रही हैं। माँ दर्द से बिलबिला रही है, छटपटा रही है, कराह रही है। वहाँ बधावा लगता है जो उसकी पीड़ा को द्विगुणित कर देता है। कितने दयनीय स्थिति का मार्मिक चित्रण कवयित्री ने किया है –

''कुछ बोल न सकी/कुछ कह न सकी किसी को/सहती रही सब दर्द/अकेले मेरी कोख को जैसे सहला दिया तूने''

औरत होने का सबसे बड़ा सुख मातृत्व है। वह उसकी परिपूर्णता है। पिता, पति, पुत्र की परिधि में नाचती स्त्री को कोई व्यापकता नहीं मिलती है। जागो नारी! तुम्हारे अन्दर ही वह शक्ति है जिसके लिए देवत्व भी तुम्हारे सुधोपम वक्ष का पान करना चाहता है। उठो! विविधता को एक सूत्र में बांधने की कलात्मकता, पारदर्शिता, दूरदर्शिता तुम्हारे भीतर है। संप्रभुता का स्रोत लोक चेतना तुमसे उपकृत है। विश्व मानवता की विजयिनी शक्ति तुम्हारे कुक्षी में अंकुरित होता हो। उठो! स्पर्धा के लिए बढ़ो। चुनौती दो उन पुरुषों को कि हम नारी हैं। सृष्टि की संचालिका! रक्षिका! संरक्षिका! उठो! तुम चंडी बनकर विनाश करो! चंडमुंड की विस्फोटक शक्तियों का मर्दन करो!–

''क्यों मर्दों का सब माफ है/ये कहाँ का इन्साफ है/जन्म देती है यही उनका गुनाह है/अब और जुल्म नहीं सहना है/उन मर्दों को अब कहना है/बेइज्जती की बारी है/अब नारी की बारी है..''

नारी पिता, पति की परिधि को तोड़ना चाहती है तो पुत्र की परिधि और भी मजबूती लेकर खड़ी हो जाती है। पति से तो लड़ लेती है, झगड़ लेती है परन्तु पुत्र के समक्ष बेबस हो जाती है। आँखों में उमड़ते बादल घुमड़ कर रह जाते हैं। किनारों का अतिक्रमण नहीं कर पाते हैं। इस दर्द का घाव विचित्र है। मवाद भरा है जो भीतर टीस रहा है। रिसता है लेकिन बहता नहीं है। शब्दों के तीर से छलनी है शरीर, उस शर शय्या पर सोने को मजबूर हैं। यह जख्म अपनों का ही दिया हुआ है। दर्द ही लगता है इसकी मुक्कमल दवा है। पराजय में ही विजय की अनुभूति है। कवयित्री की दर्द से भरी कुछ पक्तियाँ द्रष्टव्य है–

''कैसा समय आ गया है/छलक न पाये जो आँखों से /वे कुछ अश्क ऐसे हैं/रिसते हैं जो दिल में सदा/कुछ जख्म ऐसे हैं/दिए हैं जो कुछ अपनों ने ही..''

'रमा जी' की अति प्रसिद्ध रचना है ''फौजी और गृहिणी''। कवयित्री ने दोनों के मानवीय मूल्यों को नैतिकता के धरातल पर रखकर परीक्षित, दीक्षित कर बड़ा सुन्दर, सार्थक, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। फौजी राष्ट्र की सीमा की रक्षा करते हैं। गृहिणी परिवार की मर्यादा, आदर्श की सीमाओं को सुरक्षित रखती हैं। एक राष्ट्र यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति देता है, दूसरी ओर गृहिणी गृहस्थी यज्ञ में समिधा बनकर तिल–तिल जलती है। फौजी के राष्ट्र यज्ञ अनुष्ठान में यश, कीर्ति का सुवास है और गृहिणी भींगी लकड़ी की तरह जलती है.. ना वह कोयला ही हो पाती और न राख ही बन पाती है, रह जाती है केवल धुँवा जो आँखों को कड़वाहट से भर देती है। कवयित्री ने बड़ी गहराई में उतरकर उन अनुभूतियों को परखा है–

''तुम सीमा पर हो/मैं घर की सीमा में/तुम गोली खाते हो, मैं गाली खाती हूँ/तुम्हारा खून बहता है मेरे आँसू बहते हैं/तुम्हारा हर जगह सम्मान मिलता है ६ हमारा हर जगह अपमान मिलता है'

नई नवेली दुल्हन है और पति फौज में चला जाता है। एक पति परित्यक्ता नवोढ़ा को किन–किन परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है। सबकी संवेदनाएँ सूख जाती हैं। गालियों से हृदय छलनी बन जाता है और आँसुओं से दिन भर आँचल भींगता रहता है। रात में तकिया भींग जाता है उन आँसुओं के सैलाब से–

''मेरी बात रही मेरे मन में..कुछ कह न सकी उलझन में।''

आखिर किससे कहे? बात कोई सुन ने वाला भी कहाँ है? गृहस्थी के यज्ञ में सर्वत्र गालियों के नुकीले तीर हृदय को छलनी बनाते हैं। वह अनवरत अपमान के दर्द का प्याला घुट–घुट कर पीती रहती है। दो मीठे बोल का मरहम उन जख्मों पर लगाने वाला कोई नहीं है। फौजी की गृहिणी का कितना सटीक, सार्थक, दयनीय स्थिति का शिल्प बिम्ब कवयित्री ने प्रस्तुत किया है, स्तुत्य है। कवयित्री मिट्टी की जड़ों को गहराई तक डूबोया है और सृजन का उन्नयन किया है। इन्होंने अपनी भारतीयता, अपनी राष्ट्रीयता को व्यापक आकाश देने के लिए देश काल से परे अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर अपनी पहचान बना कर भारत को शिखरत्व प्रदान किया है। देश कृतज्ञ है रमा जी की लेखनी पर जिसने भावों की मसि में शब्दों के मोती पिरोकर हृदय के पृष्ठ पर उत्कृष्ट कर काल जयी बना दिया है। नारी विमर्श को नवोन्मेषशालिनी, नई ऊँचाई, नई दिशा देकर नव्यता, भव्यता का नव नील परिधान पहनाकर 'राधा' की आह्लादिनी शक्ति से विभूषित करने के लिए संपूर्ण साहित्य समाज कृतज्ञ है। आपकी लेखनी दीर्घजीवी बने..

शिव्या पटेल

कक्षा–पाँचवीं, आयु–ग्यारह वर्ष

पत्र

आदरणीय प्रधान संपादक महोदय
हिंदी की गूंज
टोक्यो जापान

परिचय– सात्विक विचारों के द्वारा राष्ट्र की सेवा हेतु 21 वर्षों से अपनी शिक्षक संचेतना केवल शिक्षकों, लेखकों, समीक्षकों का संगठन नहीं वरन् यह उन सभी साहित्यानुरागियों को भी अपने वैश्विक फलक में समेटती है जो समस्त भारतीय भाषाओं के साहित्य को एक सकारात्मक दिशा देने का भाव संजोये हुए है। इस पवित्र भाव की सार्थकता में राष्ट्रीय चिन्तन स्वयमेव जुड़ जाता है। समाज, परिवार, धर्म, संस्कृति अनेक विषयों में रचा जा रहा साहित्य सत्यं शिवं–सुन्दरम् का लक्ष्य लेकर रचा जा सके, इसी निमित्त से यह संगठन 2003 से अस्तित्व में आया है। आप सभी का स्वागत सम्मिलित होकर सहयोग प्रदान करें।

इसके नियमित त्रैमासिक राष्ट्रीय समारोह में समग्र भारत की साहित्य मनीषा मुखर हो उठती है। प्रमुख आकर्षण होता है–बहुभाषी कवि सम्मेलन हिन्दी, संस्कृत, मराठी, गुजराती, असमी, उड़िया, बांगला, तमिल, तेलुगू, मलयाली, कन्नड़, पंजाबी आदि सभी भाषाओं की साहित्यकार उपस्थित होकर जाती है। भिन्न भाषा होने पर भी भावों के सुगम सम्प्रेषण में बाधा नहीं होती लेखन कार्यशालाओं के अतिरिक्त संगोष्ठियों तथा साहित्यिक यात्राओं के आयोजन भी हमारी योजना में है। महामारी कोरोना में लगभग 200 विविध विषयों पर आभासी संगोष्ठी हुई। अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर पिछले 6 वर्ष से मातृशक्ति सम्मान समारोह देश के प्रमुख नगर इन्दौर, झाबुआ, नई दिल्ली, जयपुर, मुम्बई, पूना में निरन्तर किया जा रहा है। हम वर्ष में चार राष्ट्रीय कार्यक्रम करते है।

धन्यवाद।

डॉ. प्रभु चौधरी
राष्ट्रीय महासचिव उज्जैन

चिट्ठी पत्री

आदरणीया रमा जी!
सादर नमन।

''हिंदी की गूँज'' पत्रिका में आपने मेरी दिल की बात प्रकाशित की, जो इस बात का प्रतीक है कि पत्रिका बेबाक है, जो उचित को बिना किसी लाग लपेट के लिखने और प्रकाशित करने में समर्थ है, संपादक विभाग एवं पत्रिका की सर्वेसर्वा श्रीमती रमा

जी को हृदय से बहुत–बहुत बधाई। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की सदा सर्वदा कामना करता हूं। धन्यवाद जी।

आपका शुभेच्छु

दरियाब सिंह ''ब्रजकण''
मोदीनगर, गाजियाबाद.

समाचार कुछ इधर–उधर के

डॉ. रजनी शर्मा चंदा को हास्य कवि डॉ सुरेन्द्र शर्मा द्वारा भारत कीर्ति सम्मान मिला

रांची की होम्योपैथी बायोकेमिक चिकित्सक एवं साहित्यकार डॉ. रजनी शर्मा 'चंदा' को अंतर्राष्ट्रीय काव्य प्रेमी मंच तंजानिया की संस्थापिका डॉ. ममता सैनी एवं प्रसिद्ध हास्य कवि डॉ सुरेन्द्र शर्मा के द्वारा भारत कीर्ति सम्मान से दिल्ली के एनडीएमसी सभागार में अलंकृत किया गया। डॉ ममता सैनी के आयोजन संयोजन में उनके द्वारा संपादित अद्वितीय ग्रंथ 'भारत को जानें' का भव्य लोकार्पण समारोह 11 मई 2024 शनिवार को नई दिल्ली में संपन्न हुआ। श्भारत को जानेश ग्रंथ में भारत के सभी राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों की विशेषता को दोहा एवं चौपाई छंद में बखान किया गया है। भारत के खूबसूरत प्रकृति की धनी झारखंड राज्य के वर्णन का प्रतिनिधित्व डॉ. रजनी शर्मा 'चंदा' ने किया। झारखंड राज्य की सभ्यता, संस्कृति, भौगोलिक स्थिति, कला साहित्य, रहन सहन, वेशभूषा, जीव जंतु, जंगल, पहाड़, नदी, भोजन हरेक छोटी से छोटी विशेषता को सात रचनाकारों ने अलग–अलग पहलुओं पर लेखनी चलाई कर पूर्ण किया। डॉ. रजनी शर्मा 'चंदा' ने झारखंड राज्य की विशेषताओं का वर्णन दोहा एवं चौपाई छंद में किया है। इस ग्रंथ को 'ऑफिसियल वर्ल्ड रिकॉर्ड स्पेन' एवं 'इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' द्वारा सम्मानित किया गया है। इस अभूतपूर्व ग्रंथ में योगदान हेतु डॉ. रजनी शर्मा 'चंदा' को भारत कीर्ति सम्मान से अलंकृत करते हुए तंजानियां की डॉ. ममता सैनी, डॉ. सुरेन्द्र शर्मा एवं आज तक चैनल के पंकज शर्मा ने शुभकामनाएं दी। डॉ. रजनी शर्मा 'चंदा' ने यह सम्मान अपने स्वर्गीय सास ससुर, माता–पिता, पति श्री विश्वनाथ शर्मा, बच्चे अमन, आर्यन, परिवार, समाज एवं देश को समर्पित किया है।

हिंदी की गूंज पत्रिका के लिए किए गए रमा दीदी के प्रयास सराहनीय हैं। धैर्य और सादगी जैसे गुणों को धारण किए हुए रमा दीदी का व्यक्तित्व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी हिन्दी प्रेमियों के लिए आदर्श स्थापित कर रहा है। विभिन्न कार्यक्रमों

में सभी के सुझावों को ध्यान में रखते हुए जिस तरीके से रमा दीदी हिंदी की गूंज की यात्रा में आगे बढ़ रही हैं उससे ये प्रतीत होता है कि जल्द ही वो अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त कर घर घर में हिंदी प्रेम का दिया प्रज्वलित करके रहेंगी। इसमें पूरा अस्तित्व उनका साथ दे ऐसी शुभकामनाओं के साथ मैं उन्हें नमन करती हूं।

–पूनम गौतम

जनवरी–मार्च, 2024 (वर्ष–4, अंक 15)

लोकार्पण

डॉ. हरीश नवल : रोके न रुके नशा
पारुल सिंह की पुस्तक : ऐ वहशते दिल क्या करूँ
डॉ. अंबे कुमारी की पुस्तक : पोंछती है जो आँसू की बूँद
सुरेश पांडेय, स्वीडन जी की पुस्तक : आँगन की दीवार का लोकार्पण हुआ

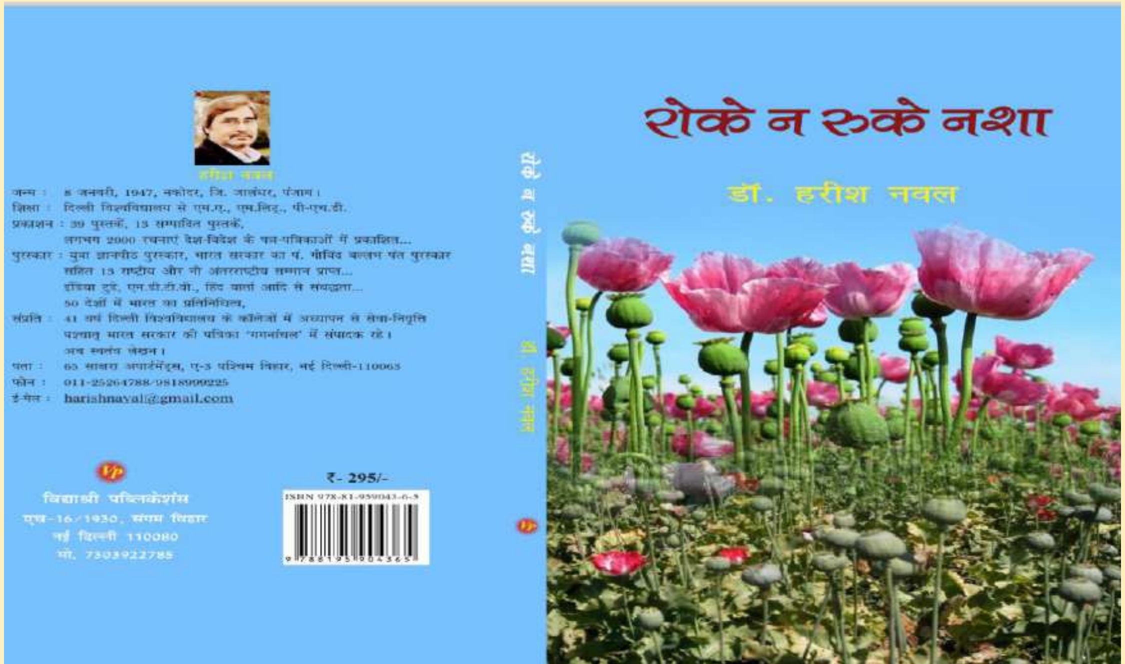

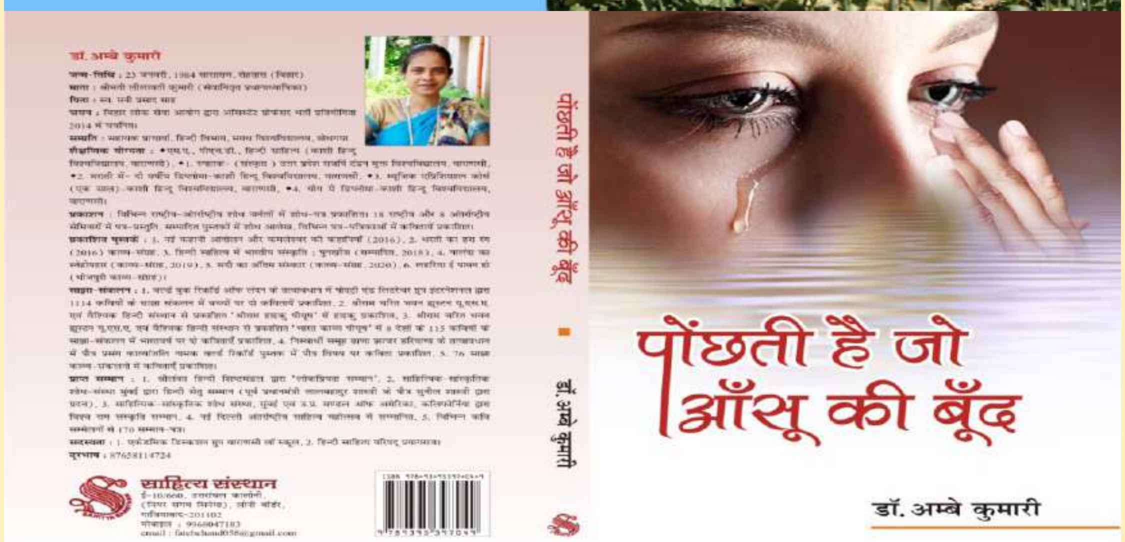

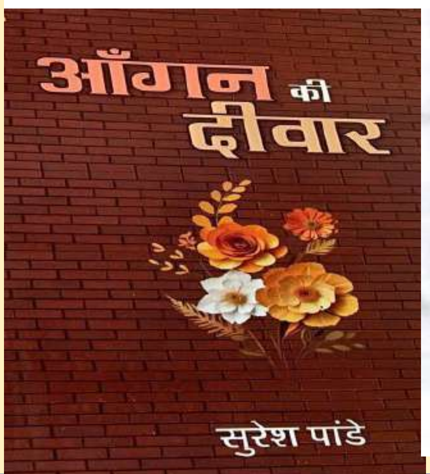

ज्योति कोर
उम्र 13 वर्ष

रिदम पंढीरनाथ पाटील
उम्र 8 वर्ष

गुरुबानी कौर बिंद्रा
उम्र 13 वर्ष
कक्षा–9

रितिका जाटव
उम्र 12 वर्ष
महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय
दादर (अलवर) राजस्थान

ग्लोरी चन्द्र
उम्र 10 वर्ष, कक्षा–6सी

मंसवनी
उम्र 10 वर्ष, कक्षा–5 डी

वीथिका पाणिग्रही
उम्र 13 वर्ष, कक्षा–7 डी

शयाना यादव
उम्र 11 वर्ष, कक्षा–6 एफ

अद्विता
उम्र 11 वर्ष, कक्षा–5 डी

किरण कोर
उम्र 14 वर्ष
कक्षा–7
महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय
दादर (अलवर) राजस्थान
कवर पृष्ठ–डिजाइन